※ श्रीहरिः ※

॥ श्रीगौरांगविधुर्जयति ॥

भक्तभाव संग्रह

परिशोधित एवं परिवर्द्धित
तृतीय संस्करण

जिसमें
प्राचीन रसिक कवियों एवं रास मण्डलियों के चुने
हुए पांच सौ से अधिक रसीले स्तोत्र, पद, रसिया,
कवित्त, सवैया, गजल एवं दोहावली
का अपूर्व समावेश है

※

संग्रहकर्त्ता :
श्रीश्यामदास

★

प्रकाशक :
श्रीहरिनाम संकीर्त्तन मण्डल (रजि०)
श्रीधाम वृन्दावन ।

प्रकाशक— श्रीहरिनाम संकीर्त्तन मण्डल
श्रीधाम वृन्दावन

संस्करण— तृतीय, २०००

न्यौछावर— तीन रुपया

मुद्रक— श्रीहरिनाम प्रेस, वृन्दावन

नोट— चिट लगाकर बढ़ाए हुए दामों पर हमारी पुस्तकें कभी मत खरीदिये ।

दो शब्द !

सङ्कीर्तन-विश्व-जनक करुणावतार श्रीमन्महाप्रभु की असीम अनुकम्पा से श्रीभक्तभाव संग्रह का तृतीय संस्करण श्रद्धेय पाठक वृन्द के करकमलों में सहर्ष प्रस्तुत है अति अल्प काल में इसके तृतीय संस्करण का कारण इसकी नित्य प्रति बढ़ती हुई मांग है तथा इसकी कई एक असाधारण विशेषताएं ।

द्वितीय संग्रह की भांति प्राचीन एवं अर्वाचीन समस्त रसिक सन्त कवियों—सर्वश्री तुलसी, कबीर, सूरादि अष्ट छाप कविवृन्द, मीरा, व्यास, ललित किशोरी, ललित लड़ैती, रस-खानादि की मधुर पदावली का इस संस्करण में ज्यों का त्यों समावेश है ही ! गोस्वामी श्रीबिन्दुजी महाराज के पद इसमें एक नयी वृद्धि है जो अति सरस एवं भावपूर्ण है ।

पद-पदावली को विविध माधुरियों में बांट दिया गया है, जिससे संकीर्त्तनकर्त्ताओं को एक ही भाव के पद एक जगह उप-लब्ध हो जाते हैं ।

होली, जन्माष्टमी, रामनवमी, झूलन आदि वर्षोत्सवों के सरस संग्रह के साथ अष्टलीला के पद इस संग्रह की अपनी अनु-पम विशेषता है ।

अन्त में आरती, रसिया, कवित्त, सवैया, गजल एवं दोहावली रसिकों में एक अद्भुत रस का संचार करती है ।

रासलीला, होरीलीला, उद्धवलीला, आदि अनेक लीलाएँ इस संग्रह में उदधृत की गई हैं। व्रज की सर्वोत्कृष्ट रास-मण्डिलयों में गाये जाने वाले पदों का अपूर्व संग्रह है ।

पुस्तक के प्रारम्भ में पंजाब के प्रसिद्ध-सिद्ध सन्त व्रजोपासक श्रीललितलड़ैतीजी की जीवनी भी दी गई है, जिनके पदों का इस संग्रह में विशिष्ट स्थान है ।

संकीर्त्तन-जगत् में इस प्रकार का अपने आप में परिपूर्ण पद संग्रह यदि इसे कह दिया जाए तो अतिशयोक्ति नहोगी ।

आशा है संकीर्त्तनकर्त्ता, गायक-महानुभाव इस संग्रह से श्रीभगवद्गुणानुवाद गा-गा कर, श्रीभगवान् को रिझाएँगे एवं संग्रहकर्त्ता के परिश्रम को सफल करेंगे ।

पाठकवृन्द उदारता से प्रकाशन में रह गई त्रुटि विच्युति को संवारने की कृपा करेंगे ।

फाल्गुन शुक्ला एकादशी
२३-३-१९७५

वैष्णवपदरजाभिलाषी—
श्यामलाल हकीम

वैष्णव कुल चूड़ामणि परमाभिवन्दनीय



श्री १०८ श्री स्वामी इन्द्रभानु जी महाराज

(श्री ललित लड़ैती जी)

कविरत्न सन्त शिरोमणि

श्री ललित लड़ैती जी

इनका मूल नाम श्री इन्द्रभानु जी था। इनका जन्म सं० १९०४ में पंजाबमें सिन्धु नदीके तटस्थ डेरागाजी खान् नगर में अरोड़ा-नांझा जातीय एक कुलीन वैष्णव वंश में हुआ। इनके पिता जी का नाम मुन्शी श्री टिकनलाल जी था। इनके एक बड़े और एक छोटे भाई और भी थे। "भाग्यवान् बिरवान के होत चोकने पात"—लोकोक्ति के अनुसार इनका बालपन अनूठा ही था। भगवन्नाम, मन्दिर, सत्संग में इनको स्वाभाविक रुचि थी। मिडिल क्लास की शिक्षा प्राप्त करनेके बाद इन्होंने नहर के महकमे में सरकारी नौकरी प्राप्त कर ली एवं यथा समय एक कुलीन सुयोग्य कन्या का पाणिग्रहण कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया।

कुल की परम्परानुसार विवाह के समय ही इन्होंने श्री मन्माध्वगौड़ेश्वराचार्य गोस्वामी श्री श्यामदास जी के वंशज गोस्वामी श्री बालमुकुन्द जी से गुरु मन्त्र दीक्षा प्राप्त की। प्रभु इच्छा से इनकी कोई सन्तान न हुई एवं गृहस्थ जीवन एक बहुत ही नियमित एवं शान्तिपूर्ण इन्हें मिला। माता-पिता भाई-बन्धु युक्त एक सम्मिलित कुटुम्ब होने से इन पर गृहस्थ का कुछ भी भार न था और न इनकी गृहस्थ के काम काज की ओर प्रवृत्ति ही थी। दफतर के समय से पूर्व एवं पश्चात् ये प्रायः शास्त्र अध्ययन, भगवत् चिन्तन, सत्संग में ही लगे रहते, अवश्य समय समय पर माता-पिता भाई बन्धु इन्हें घर के काम काज

की ओर भी ध्यान देने के लिये आग्रह करते, किन्तु ये उनकी बातों पर कुछ भी ध्यान न देते। सत्संग की संलग्नता इनकी इतनी बढ़ी कि इन्होंने अपने घर की निकटवर्त्ती एक धर्मशाला में नित्य संध्या के समय एक सत्संग का नियम बना लिया। मुहल्ला के कुछ एक स्त्री पुरुष नियम से इनके पास आ जाते और ये उन्हें भागवत गीता आदि सत्शास्त्रों को पढ़कर सुनाया करते नियमतः सत्शास्त्रों के अध्ययन से, उनके मनन करने से इनके हृदय में भगवत् प्रेम जागरूक हो उठा और इन्हें संसार के समस्त पदार्थ अति तुच्छ प्रतीत होने लगे।

मुन्शी जी को इनका इस प्रकार का रहन सहन अच्छा न लगा। वह इन्हें हर समय कोसते रहते और सांसारिक धन्धों में इन्हें लगाना चाहते, किन्तु-"सखि ! मैं जब ते निरखे श्याम कछु न सुहावै री" (पद नं० १०३)-इनकी यही दशा बनी ही रही। अन्ततः पिताजी ने इन्हें अपने कुटुम्ब से अलग कर दिया और इन्हें अपनी सम्पत्ति के अधिकारों से भी वञ्चित कर दिया। इस पर तो इनके आनन्द की सीमा न रही।
"भलो भयो मेरी मटुकी फूटी, मैं तो दधि बेचन ते छूटी री" यह सोच कर इनका मन आनन्द से नाच उठा। रोज की हाय-हाय कल-कल समाप्त हो गई।

इन्हें ४०) रु० सरकारी वेतन मिलता था जो उस समय एक बहुत अच्छा पर्याप्त वेतन था स्त्री पुरुष उसमें अति सुख-पूर्वक निर्वाह करते और जो बच जाता उसे ब्राह्मण-वैष्णव के भोजन एवं अनाथों की सहायता में लगा देते। वर्ष दो वर्ष पीछे श्रीवृन्दावन की यात्रा करने चले आते और यहाँ आकर सन्तों की सेवा का सौभाग्य प्राप्त करते। श्री रासविहारी की रास-लीलाओं के पीछे तो ये पागलों की भांति आत्म विस्मृत हो जाते।

अपने श्री गुरुदेव जी के गुरुस्थान श्री शृङ्गारबट में इनकी स्वाभाविक प्रीति एवं निष्ठा थी ही। शृङ्गारबट के शिरोरत्न परमसिद्ध गोस्वामी श्री प्रेमानन्द जी-महाराज तथा परमाभिवन्दनीय श्री१०८ श्री देवकीनन्दन जी महाराज गोस्वामिपाद के चरणों में इनकी अटूट श्रद्धा थी, जैसा कि पद नं० १० में इन्होंने अपने भावों को व्यक्त किया है। उस समय श्रीवृन्दावनमें ब्रजबिहार के रचयिता श्री नारायण स्वामी जी भी वर्त्तमान थे। उनसे भी इनका अधिक स्नेह एवं उठना बैठना था—ऐसा ज्ञात होता है, कारण कि उनके पदों की छाप इनके रचित अनेक पदों में मिलती है।

दो एक बार श्रीवृन्दावन आने जाने के पश्चात् इनमें कविता का गुण अभिव्यक्त हो उठा एवं इनमें मंजरी भाव की उपासना का लोभ प्रगट हो आया। अव तो हर समय इनके चित्त में श्री प्रिया प्रीतम की लीलाओं की स्फूर्त्ति होने लगी और ये उन लीलाओं का "ललित लड़ैती" छाप से विविध रागात्मक पदों में लिपिबद्ध करने में व्यस्त हो गये। अब इन्हें क्या संसार अच्छा लगता या सरकारी नौकरी ?

एक दिन दफतर में जाकर अपना त्याग पत्र लिखकर साहब के आगे रख दिया। साहब अँग्रेज था और इनकी ईमानदारी एवं कार्य कुशलता से बहुत ही सन्तुष्ट रहता था। इनका त्याग पत्र देखते ही चौंक उठा, नौकरी छोड़ने का कारण पूछा, असुविधा की जिज्ञासा की, इन्होंने एक ही उत्तर दिया "साहब ! अब तक झूँठी सरकार की नौकरी की है, अब सच्ची सरकार की नौकरी करना चाहता हूँ।" साहब ने वेतन बढ़ाने आदिके अनेक प्रलोभन दिखाए किन्तु इन्होंने सब कुछ ठुकरा दिये। साहब इनके आशय को जान गया। उसने कहा -"इन्द्रभानु !

तुम्हारे पैन्शन के अधिकारों में अभी देर है। मैं चाहता हूँ तुम कुछ दिन और नौकरी करो, मैं तुम्हारी पैंशन स्वीकार करा देता हूँ फिर तुम निश्चित होकर भजन करना।" किन्तु इनमें कुछ भी परिवर्त्तन न हुआ और त्यागपत्र देकर चले ही आए। साहब इनकी दृढ़ता एवं निष्ठा से इतना प्रभावित हुआ कि उसने अपने आप यत्न करके कुछ दिनों के पश्चात् इनकी १६) रु० पैन्शन स्वीकार करा कर भेज दी। सब मिलने वालों के आग्रह से इन्होंने स्वीकार किया और जीवन भर उसी पैन्शन से न केवल अपना ही निर्वाह किया अपितु प्रति मास ब्राह्मण व अनाथ बच्चों को भोजन तथा ब्रजवासी समागत विद्वान् ब्राह्मणों का यथेष्ट सत्कार करना इनका जीवन व्रत था।

इनके तीव्र वैराग्य, भगवद् निष्ठा, सत्य परायणता, प्रति जीव के प्रति सौहार्द्र आदि दिव्य गुणों को देखकर मुहल्ले के लोग, निकटवर्त्ती बन्धु बान्धव और नगर निवासी इन्हें एक महान् विभूति, सच्चा सन्त मानने लगे एवं इनमें गुरूदेव की भावना पोषण करने लगे। संसार की त्रिताप ज्वाला में संतप्त एवं अशान्त होकर जब इनके सत्संग में आकर बैठते और इनके श्रीमुख से भगवन्नाम, गुण-लीला माधुरी रस का मधुर आस्वादन करते, तो एक महान् शाश्वत सुख मूलक वाञ्छाएँ तो इनके दर्शन मात्र से ही पूर्ण हो जातीं। असंख्य भगवद् बहिर्मुख परिवार इनसे सदुपदेश ग्रहण कर भगवद् भजन में प्रवृत्त हो गए, इतना ही नहीं सर्वोज्ज्वल ब्रजरस के अधिकारी बन गए। स्त्री-पुरुष बाल-वृद्ध समस्त नगर निवासी इन्हें 'स्वामीजी, स्वामी जी" कहकर पुकारने लगे। हमारे परिवार के तो परम धन थे ही। सांसारिक सम्बन्ध से श्री स्वामी जी लेखक के

पूर्वज थे । पूज्य पिता जी के चचेरे भाई (ताऊ के लड़के) थे, किन्तु पिताजी पर तो इनका एक विशेष स्नेह था । पिता जी भी इन्हें अपना श्री गुरुदेव कहिए या सर्वस्व मानते थे

सं० १९६५ में जब सिन्धु नदी ने नगर डेरागाजी खां को डुबा दिया तब श्रीस्वामी जी ने कुछ समय तक कोटअदू नाम के गांव में निवास किया । वहां के अनेक परिवारों को इन्होंने अपने सदुपदेश से भगवदुन्मुख कर दिया एवं वे इन्हें एक सच्चा गुरु मानने लगे ।

कोटअदू एक छोटा सा गाँव था । उसमें चोरी चकारी की घटनाओं का उन दिनों आतङ्क छाया हुआ था । एक दिन चौकीदार ने श्रीस्वामी जी से कहा— 'भक्त जी ! आजकल चोरियां बहुत हो रही हैं । रात को सावधान रहा कीजिये ।" इन्होंने कहा—"हाँ हां हम जागते रहते हैं ।" गर्मी के दिन थे, बाहर गली में सोया करते थे । प्रभु इच्छा उसी रात को एक चोर ने आकर इनके निवास स्थान पर पीछे नकब लगाई और इनका एक ट्रंक और कुछ सामान निकाल कर ले गया । सवेरे उठ कर इनकी स्त्री ने जब नकब और चोरी को देखा तो घबड़ा कर चिल्लाने लगी । आप उस समय अपने बिस्तर पर बैठे-बैठे मानसी उपासना में जुड़े हुए थे । आप बैठे-बैठे वहां से बोले—"कोई बात नहीं है, जो हमारी चीज थी, वह रखी हुई है, फिकर मत करो ।" शोर सुनकर मुहल्ले के लोग इकट्ठे हो आए। किन्तु आप अपनी उपासना को पूर्ण करने के बाद ही मकान में घुसे और स्थान विशेष से नकद रुपये एवं गहने आदि उठाकर सब को दिखाते हुए बोले—"देखिये ! जो वस्तु हमारी थी, वह ज्यों की त्यों रखी है । कपड़े तो बहुत जमा हो गए थे । हमारी गलती है किसी ब्राह्मण को बहुत दिनों से कथा नहीं

कराई है और यह कपड़े कथा में भेंट नहीं दिए हैं, चोर न ले जाते तो और क्या होता ?" चोरी की खबर गांव में फैल गई। उस समय वहां का सर्वेसर्वा तहसीलदार हुआ करता था। उन दिनों वहां श्री मथुराप्रसाद जी तहसीलदार थे। वे वहाँ चार सिपाहियों एवं थानेदार को लेकर आए। रिपोर्ट लिखाते हुए श्री स्वामी जी बोले—"तहसीलदार साहब ! इसमें किसी का अपराध नहीं है। हमारी खुद की भूल हो गई है। वह यह कि चौकीदार ने हमसे कहा था--भक्त जी, रात को सावधान रहा करो। सो हमने उसे यह कह दिया--हां हां हम जागते रहते हैं। हमने कहना था—"नन्द नन्दन हमारे रक्षक हैं।" यही हमारी गलती हुई। भगवान् की शरणागति को छोड़ कर हमने अपनी रक्षा का वृथा अभिमान किया है, यह उसी का फल है। तहसीलदार इनके सद्गुणों को कभी-कभी लोगों के मुख से सुना करते थे, अब इनकी निष्ठा देखकर बहुत प्रभावित हुए। दूसरे दिन इनका खाली ट्रंक एक खेत में पड़ा हुआ पाया गया और तहसीलदार ने आपके घर भिजवा दिया। किन्तु आपने उसे लेना स्वीकार नहीं किया और कहला भेजा कि 'अब वह सब वस्तुएँ हमारी नहीं रहीं, हम उन में से कुछ भी घर में न रखेंगे।" तहसीलदार साहब आपके वैराग्य से अति प्रभावित हुए एवं इनके सत्संग में नित्य आने लगे एवं उनका जीवन एक वैष्णव जीवन बन गया। यथा समय वे रिटायर्ड होकर श्री वृन्दावन ही चले आए। वृन्दावन वासी उन्हें अच्छी तरह जानते हैं। अभी कुछ वर्ष हुए उन्होंने ब्रज रज प्राप्त की।

इस प्रकार की अनेक विचित्र घटनाएँ हैं, जिनको देख कर अनेक परिवार इनके सदाचरण एवं सदुपदेशों के द्वारा भक्ति मार्ग के पथिक बन गए।

नया नगर डेरा गाजीखान् बसने पर नगर निवासियों के आग्रह से श्री स्वामी जी फिर डेरा गाजी खान में आकर निवास करने लगे एवं वहाँ आकर फिर इन्होंने सत्सङ्ग की गङ्गा प्रवाहित कर दी। इस समय तक आप श्रीप्रिया-प्रीतम की अनेक लीलाओं को मधुर ब्रजभाषा में लिपिबद्ध कर चुके थे। उस अपूर्व संग्रह को—"श्रीदम्पतिविलास" "श्रीकिशोरी करुणा कटाक्ष" तथा "रास पञ्चाध्यायी" इन तीन पुस्तकों के रूप में आपने प्रकाशित कराया। "श्रीदम्पति विलास" एवं "श्री किशोरीकरुणा कटाक्ष" बृहद्ग्रन्थों के रूप में हैं जिनमें श्री प्रिया प्रीतम की अनेक निकुञ्ज लीलाओं के साथ साथ सिद्धान्त के पद, चेतावनी, वर्षोत्सव पद, बाललीला, अष्टयाम सेवा के पद, एवं दोहावली आदि आदि विविध राग रागनियों में उल्लिखित हैं। श्री स्वामी जी ने व्रज से एक रासमण्डली को बुलाकर अपने घर पर छः मास तक रखा और उसे इन समस्त लीलाओं को कण्ठस्थ कराया। इस प्रकार उन समस्त लीलाओं का श्रीरासबिहारी–श्रीरासरासेश्वरी के श्रीमुख से स्वयं आस्वादन किया और जन साधारण को भी कराया परम्परागत किसी किसी रासमण्डली में उनके रचित पदोंका अब भी प्रचलन देखने में आता है। रासपंचाध्यायी में आपने रासलीला के सम्बन्ध में ही उल्लेख किया है।

इन श्री वृन्दावन माधुर्यरस विशिष्ट ग्रन्थों के सङ्कलन के बाद श्री स्वामी जी ने दो और विशद ग्रन्थों की भी रचना की एक तो "श्री अद्वैतामृतवर्षिणी" तथा दूसरा "श्री सनातन धर्म रक्षाव्याख्यान माला।" इन दोनों ग्रन्थों में कर्म, उपासना-योग एवं ज्ञान, ये तीन तीन काण्ड हैं। अनेक अनेक आख्यानों, इतिहासों एवं शास्त्र वाक्यों द्वारा इन तीन विषयों की सुन्दर

आलोचना की गई है। भक्ति के बिना रूखे ज्ञान का निरसन करके जीवन-मरण, संसार दुख निवृत्ति के लिये ब्रह्म ज्ञान एवं मोक्ष को साध्य रूप में प्रतिपादित किया गया है। इधर तो ब्रज रस विशिष्ट शुद्ध रागात्मिका निकुञ्ज लीलाओंका प्रतिपादन और इधर अद्वैतवाद मतानुसार निर्विशेष ब्रह्म सायुज्य का साध्य निर्णयात्मक प्रतिपादन एक ही लेखक के द्वारा किया जाना अवश्य उसकी निजी निष्ठा के सम्बन्ध में भ्रम डाल देता है। किन्तु श्रीस्वामीजी की निजी निष्ठा तो उनके एक-एक पद से अभिव्यक्त हो रही है। श्री वृन्दावनविहारी श्रीव्रजेन्द्र नन्दन श्रीव्रजेन्द्रनन्दिनी निखिलैश्वर्य-माधुर्य लीला रस-रसिक-शेखर ही इनके एकमात्र परमाराध्य इष्ट थे एवं ये इनके चारु चरणारविन्द के प्रेममय सेवानन्द के सामने ब्रह्मानन्द को तो अतितुच्छ जानते थे, जैसा कि इन्होंने स्पष्ट कहा है—"पड़ी कान झीनी ध्वनि नूपुर ब्रह्मानन्द ध्याना क्या ?" पद नं २१६ जिसने एकबार श्रीश्यामा श्याम जू की असमौर्द्ध माधुर्यमयी, विविध लीला रस वैचित्रमयी चरणनख चन्द्रज्योति की छटा का साक्षात्कार कर लिया हो, वह फिर कभी निर्विशेष निराकार लीलारस वैचित्री हीन ब्रह्म की ओर आकर्षित हो सकता है ? कभी नहीं। इनको तो मञ्जरी रूप से श्रीप्रिया प्रीतम को नित्य महल सेवा का अधिकार प्राप्त था एवं अष्टयाम उनकी रूप माधुरी का साक्षात्कार किया करते थे। इन्होंने स्वयं इस तथ्य का अनुमोदन किया है -"हमहूँ धनि ललित लड़ैती मोहन जिन छबि हमें दिखावत हैं।" पर नं० ८०। अनेक स्थानों पर इन्होंने अपनी निष्ठा का परिचय दिया है—"ललित लड़ैती इष्ट प्रिया प्रिये श्रीबन मांहि वसेरो।" पद नं० १५१। 'ऐसो कब करिहो प्यारी जु निश्दिन तुम्हरो ही ध्यान लगाऊँ -... ललित लड़ती यही लालसा तुमको हिये निकुंज बसाऊँ।" पद नं०१५९

इत्यादि अनेक प्रमाण उनकी शुद्ध रागात्मिका भक्ति में निश्चयात्मक निष्ठा के उपलब्ध होते हैं। अतः यह अकाट्य निर्णय है कि श्रीस्वामी जी का एक मात्र भक्ति द्वारा श्रीप्रिया प्रीतम की प्रेममयी चरणसेवा प्राप्ति ही साध्य था।

प्रश्न यह उठता है कि फिर इन्होंने अद्वैतवाद के प्रतिपादक ग्रन्थों का सङ्कलन किस उद्देश्य को लेकर किया ? मेरी तुच्छ बुद्धि में एक कारण ही जान पड़ता है, वह यह कि पंजाब देश में जैसे अब भी कुछ अद्वैतवाद की ओर अधिक झुकाव दीखता है। उस समय भी अद्वैतवाद का अधिक प्रचार प्रसार था। उसके अनुसार जन साधारण की रुचि की सीमा स्वसुख तात्पर्यमयी जन्म-मरण दुख-निवृत्ति एवं मुक्ति की प्राप्ति तक सीमित थी। भगवदवतार श्रीपाद वैष्णवाचार्यों द्वारा प्रदर्शित परम चरमतम साध्य स्वसुखगन्ध लेश शून्य कृष्णसुखैकतात्पर्य मयी भगवद्भक्ति प्राप्ति के अधिकारी बहुत कम थे अथवा इससे बहुत कम जन संख्या परिचित थी। आज भी ऐसी बहुत जन संख्या है जो रंगे कपड़ों के चक्कर में पड़ कर इस रहस्यमयी परमास्वादनीय भगवद्भक्ति रस से वञ्चित है। कृष्णसुखैक तात्पर्यमयी रागानुगा-भक्ति मार्ग की अपेक्षा स्वसुखतात्पयमयी मुक्ति प्राप्ति के मार्ग की ओर कृपावहिर्मुख जीव की रुचि अधिक रहना स्वाभाविक ही है। अतः इस मार्ग के अधिकारी कृष्णबहिर्मुख जीवों के लिये श्रीस्वामी जी ने तत्कालीन देश प्रथा के अनुसार अद्वैतवाद परक ग्रन्थों का भी सङ्कलन किया ताकि कृष्ण भक्ति सुख से वंचित जीव जन्म-मरण दुख निवृत्ति के लोभ से ब्रह्मानुसंधान की ओर तो अग्रसर हो सकें। अवश्य ज्ञानमार्गियों की एक भूल का सुधार इन्होंने इन ग्रन्थों में किया, वह यह कि भक्ति के बिना, भक्ति की सहायता के बिना

ज्ञान की प्राप्ति भी नहीं हो सकती और न ही ब्रह्मसायुज्य की प्राप्ति हो सकती है ।

विशेषत: श्रीस्वामी जी ने मेरे पूज्य पिताजी को हरिद्वार ऋषिकेश भेजकर इस मार्ग के अधिकारियों में इन ग्रन्थों का वितरण भी कराया । अनेक संन्यासी एवं ज्ञान मार्ग के अन्वेषक इन ग्रन्थों का अध्ययन करके प्रभावित हुए । श्रीस्वामी जी के दर्शनों के लिये अनेक सन्यासी डेरा गाजीखान चले आते । यहां आकर इनका सत्सङ्ग कर एवं इनकी उपासना-निष्ठा देख कर इनके आचरण व रसिकता को देखकर वे ज्ञान को गौण मान कर भक्ति की ओर आकर्षित हो जाते ।

श्रीस्वामी जी की हर जीव के प्रति करुणा दृष्टि रहती थी और वह यह कि किसी प्रकार जीव संसार की त्रिताप ज्वालाओं से बच कर भगवत् चरणारविन्द की सेवा का सौभाग्य प्राप्त कर ले । इन्होंने अपनी गृहणी पर भी एक अद्‌भुत कृपा की, जो एक आश्चर्यमय गाथा है । सन्तति आदि सुख भोगों के अभाव के कारण वह अवश्य कुछ उदासीन सी रहती थी । परम भागवत सिद्ध पुरुष पति रत्न को प्राप्त करके भी उसका मन कभी-कभी माया-मोह से चंचल हो उठता था । उसके मन में एक सन्तति की प्रबल इच्छा रहती थी। उसने एक बार श्रीस्वामी जी के आगे अपनी भतीजी को गोद में लेने का प्रस्ताव रखा । इन्होंने कहा—"ठीक है । जैसे तुम्हारी इच्छा हो सो करो, किन्तु यह सोच विचार लो यह सन्तति और सम्पत्ति आदि जीव के माया बन्धन के कारण है । इनमें वासनाओं की तीव्रता के कारण जीव को बार-बार आवागमन में आना पड़ता है और भगवत् सेवा से वंचित होना पड़ता है । भगवान् की हमारे-तुम्हारे पर यह महती अनुकम्पा है कि हमें सन्तति एवं

सम्पत्ति के बन्धन से मुक्त रखा है। तुम्हें ऐसा करने से कभी सुख प्राप्त न होगा।" अमूल्य वचन थे श्रीस्वामी जी के, किन्तु स्त्री जाति, फिर माया की प्रबल महिमा, उसने अपने मन की ही पूरी की। उस अपनी भतीजी—राधा को गोद ले लिया एवं यथा समय उसका विवाह आदि भी कर दिया। कुछ काल पीछे अकस्मात् उसकी मृत्यु हो गई एव उसकी मृत्यु का तार श्रीस्वामी जी के पास आया। उस समय सत्सङ्ग का समय था। आपने उस समाचार को राधा की माँ को बताया ही नहीं, कि यह सत्सङ्ग में बाधा, विघ्न उपस्थित कर देगी। सत्सङ्ग समाप्ति के बाद आपने उस समाचार को घर में सुनाया ऐसा प्रतीत होता था मानो इन्हें यह सब पहिले ही विदित था। राधा की माँ को तो ऐसा अत्यन्त असह्य दुःख होना ही था। जैसा कि संसारासक्त पुरुषों को सन्तति सम्पत्ति के नष्ट होने पर होता है अथवा गुरु-पति महत् पुरुषों की आज्ञा उल्लंघन करने पर जैसा मिलना ही चाहिये। उस समय एक अनोखा दृश्य था कि एक ओर सब स्त्री-पुरुष मातम पुर्सी के लिए आ जा रहे थे एवं करुण क्रन्दन हो रहा था और दूसरी ओर स्वामी जी नेत्र बंद करके अपनी मानसिक उपासना में श्री नन्दनन्दन को रिझा रहे थे।

कुछ दिनों के बाद राधा की मां को एक दिन अकस्मात् दिल के दर्द का दौरा पड़ गया और वह बेसुध होकर गिर पड़ी। उस समय सत्सङ्ग हो रहा था। अनेक स्त्री-पुरुष सत्सङ्गियों द्वारा अनेक उपचार करने पर भी उसे सुधि न आई एवं उसकी अवस्था चिन्ताजनक हो गई। श्रीस्वामी जी सत्सङ्ग एवं अपनी उपासना को समाप्त करके अपनी कोठरी में चले गए एवं वहां जाकर चार-पांच मिनट तक ध्यान में जुड़ गए।

अन्दर से भगवान् का चरणामृत लेकर गृहणी के पास आकर बोले—"उठो. उठो, भगवान् का चरणामृत पान करो और हरे कृष्ण-हरे कृष्ण महामन्त्र बोलो।" इतना कहते ही सबके देखते-देखते वह उठ बैठी। उसे चरणामृत दिया, उसने महामंत्र का उच्चारण किया। दिल का दर्द आदि सब न जाने कहाँ चला गया। उस घटना के पश्चात् श्रीस्वामी जी ने अपनी गृहणी को बार बार आग्रह पूर्वक सतशास्त्रों के वचनों का रहस्य समझाया एवं उसकी सांसारिक आसक्ति को हटा कर भगवत् भजन में लगा दिया।

इस प्रकार ठीक तीन वर्ष बीत गए। एक दिन सवेरे ही श्रीस्वामी जी ने अपने एक शिष्य दाजलगांव निवासी भक्त नवनीतराम को कुछ सामग्री का परचा बना कर दिया और कहा कि—"ये सब वस्तुएँ बाजार से लाकर मुझे दो।" उस परचे में अन्तिम दान की सामग्री, अन्न, मिठाई, वस्त्र, घड़ा, दिया, बाती, घी, फूल, तुलसी आदि सब वस्तुएँ अन्तिम या मृत्यु के समय में काम आने वालीं थी। भक्त नवनीतराम को कुछ अचम्भा लगा। किन्तु स्वामी जी से उसका रहस्य पूछने का साहस उसे न हुआ। उसने थोड़ी देर में सब वस्तुएँ लाकर स्वामी जी के सामने रख दीं। इन्होंने सब वस्तुओं को उठा कर एक अलमारी में सुरक्षित रूप से रख दिया। शाम को सत्सङ्ग हो चुका था, श्री भगवन्नाम की सम्मिलित ध्वनि उच्चारित की जा रही थो। इतने में भीतर मकान से शोर मच उठा—"जल्दी आइए, राधा की माँ वेसुध होकर गिर पड़ी है। उस की तो नब्ज छूट गई है।" सब सत्सङ्गी अन्दर भागने लगे। श्रीस्वामी जी ने अपने जनेऊ से उस अलमारी की ताली खोल कर भक्त नवनीतराम को दी और बोले—"नवनीतराम ! सवेरे

वाली सब सामग्री उठाकर ले आओ। नवनीतराम तो चमत्कृत हो उठा। झट से सब सामान उठा लाया। सामान को देखकर सब नारी-पुरुष चकित हो गए। आपने उसका विधिवत अंतिम दान कराया। तुलसी चरणामृत उसके मुख में दिया। राधा की माँ ने जब दो चार ऊर्ध्व स्वांस एवं हिचकियां भरीं तो आप बोले—"घबरा क्यों रही हो, नन्दनन्दन की बस्ती है। आनन्द पूर्वक चली जाओ।" सब के देखते देखते वह भाग-शालिनी गोलोक सिधार गई। वहां रोना पीटना तो क्या होना था, सब उसके भाग्यों की सराहना कर रहे थे। सबके नेत्र श्रीस्वामी जी की ओर लगे हुए थे, कि वे अपने मुख से कुछ इस घटना का रहस्य खोलें। श्रीस्वामी जी ने कहा—"देखिये! आप सब को याद होगा, आज से ठीक तीन वर्ष पहले आज के दिन इसी समय ही इसका शरीरपात हो रहा था और निश्चित रूप से हो ही जाता, किन्तु हमने सोचा कि अभी तक इसकी सांसारिक आसक्ति तो निवृत्ति हुई नहीं। सन्तति-सम्पत्ति की वासना फिर इसे संसार के आवागमन में घसीट लावेगी। इस की भजनमें भी निष्ठा नहीं बनपाई, फिर हमारा संग पाकर इसकी संसार यातना निवृत्त न हुई तो अर्धाङ्गी होने के नाते इसका दायित्व हमारे ऊपर भी अवश्य कुछ दण्ड ला सकता है। इसलिए उस समय हमने श्रीनन्दनन्दन से जाकर प्रार्थना की थी कि "प्रभु! इसे अभी कुछ और आयु प्रदान कीजिये।" श्रीनन्दनन्दन ने ध्यान में हमें बताया था कि तीन वर्ष की आयु इसे और प्रदान करते हैं और ठीक आज के दिन इसे मेरे पार्षद ले जायेंगे।" श्रीस्वामी जी ने कहा—'यह सब बात हमारे ध्यान में थी और इसलिए सब सामान हमने आज सवेरे मंगवा लिया था। सब लोग आश्चर्य में डूबे रह गये और स्वामी जी को बार बार प्रणाम करने लगे।

वास्तव में श्रीस्वामी जी श्रीभगवान् के सिद्ध भक्तों में से ही कोई एक थे। उनका संग जिस-जिस व्यक्ति को प्राप्त हुआ, उस महत् सङ्ग का फल उसे प्रत्यक्ष मिला। यहाँ यह कहना असङ्गत न होगा कि उनके सब से बड़े कृपा पात्र मेरे पूज्य पिता जी ही थे। पूज्य पिता जी ने जिस प्रकार उनके सेवा-सौभाग्य को प्राप्त किया, वह मेरे लिये अकथनीय है। श्रीस्वामी जी ने अपने ग्रन्थों के प्रकाशन का भार पिता जी पर डाल दिया था। वे इनकी आज्ञा से मथुरा एवं वृन्दावन चले आये एवं एक वर्ष पर्यन्त घर-परिवार सब को छोड़ कर उन ग्रन्थों के सम्पादन—प्रकाशन में एक निष्किञ्चन भक्त की भाँति उन्होंने गुजारा। श्रीस्वामी जी ने उस सेवा से प्रसन्न होकर उन्हें सन्तति-सम्पत्ति तो आनुषङ्गिक रूप में दे ही डाली, अधिकन्तु पूज्य पिता जी को उसके फलस्वरूप श्रीवृन्दावन वास प्राप्त हुआ एवं उन्होंने सुर दुर्लभ ब्रज रज की प्राप्ति की। इसमें तो कुछ सन्देह ही नहीं है कि लेखक को, उसके परिवार को श्रीवृन्दावन वास का सौभाग्य एक मात्र उनकी अनुकम्पा से एवं पूज्य पिता जी के आशीर्वाद से प्राप्त हुआ है।

श्रीस्वामी जी एक महान् योगी थे। परम भागवतों के पास योग की सिद्धियां तो अनायास ही आ जाया करती हैं। इनके पास भी अनेक सिद्धियां थीं किन्तु आप उनका कभी प्रदर्शन न करते थे। भक्तों को श्रीप्रिया-प्रीतम की चरण सेवा को छोड़ कर इन सिद्धियों से क्या प्रयोजन? एक दिन सत्सङ्ग में प्रसङ्गवश श्रीस्वामी जी ने कहा—"सब सिद्धियां भक्तों के पीछे पीछे फिरा करती हैं।" मेरे पिता जी के मन में विचार आया "श्रीस्वामी जी जैसा तो भगवद्भक्त कोई दीखता नहीं है, किन्तु मैंने कभी कोई सिद्धि इनके पास नहीं देखी है" उसी

ही दिन रात को जब पिता जी अपनें घर पर गहरी नींद में सो रहे थे तो स्वामी जी ने अपने योगात्मक अदृश्य शरीर से वहां पहुँच कर पिता जी के हाथ का अंगूठा मरोड़ डाला। नींद में पिता जी कराह कर रह गए। सवेरे जगने पर पिता जी ने देखा कि उनका अंगूठा सूज रहा है एवं उसमें बड़ा दर्द है। कुछ चोट न लगी थी, पिता जी को अवश्य यह विचार आता रहा कि किसी ने रात को मेरा अंगूठा तोड़ा है। किन्तु कुछ रहस्य समझ न आया। शाम के समय सत्सङ्ग के पश्चात् सब अन्तरङ्ग सेवक श्रीस्वामी जी की चरण सेवा किया करते थे। नियमानुसार दूसरे दिन जब सब सत्सङ्गी स्वामी जी की सेवा कर रहे थे, उनमें पिता जी भी बैठे-बैठे उनके चरण दाब रहे थे, किन्तु अंगूठे को दर्द के मारे ऊँचा उठाये हुए थे। सब के बीच अकस्मात् स्वामी जी बोल उठे—"क्यों ? रघुनाथदास ! तुम्हारे अंगूठे में दर्द है क्या ? किसी ने मरोड़ डाला है ?" पिताजी के आश्चर्य की सीमा न रही और झट उन्हें स्मृति भी हो आई कि रात को तो श्रीस्वामी जी ने मेरा अंगूठा मरोड़ा था। पिता जी अवाक रह गए। इस पर भी आप बोले—"किसी ने तुम्हें अपनी योग सिद्धि दिखलाई होगी।" पिता जी को अपनी शंका की स्मृति हो आई एवं उसका प्रत्यक्ष उत्तर भी मिल गया।

आपके शिष्यों में एक भक्त नोतनदास भी था। उसके सङ्कट को आपने सरस्वती देवी के द्वारा कटवा दिया। वह इस प्रकार कि नोतनदास अपने गृह कार्य के लिये एक बार एक सेठ जी से एक सौ रुपया उधार ले आया। सेठ ज़ी के मुनीम ने लिखवा लिया कि यदि रुपयों की अदायगी समय पर न की गई तो दो सौ रुपये के देनदार होवोगे। भक्त जी ने शर्त

स्वीकार कर ली। फिर यथा समय नोतनदास ने सेठ जी को जाकर सौ रुपये दे दिये, किन्तु भगवत् इच्छा वह रुपये मुनीम द्वारा बन्दी में जमा न किए गए। बहुत काल गुजरने पर मुनीम जी ने भक्त नोतनदास को रुपयों की अदायगी का तकाजा किया। नोतनदास एक साधारण स्थिति का व्यक्ति था। सौ रुपया उस समय बहुत बड़ी रकम थी, वह घबड़ा कर सेठ जी के पास पहुंचा। किन्तु सेठ जी भी वस्तुतः भूल गए थे। उन्होंने भी इनकार कर दिया कि मुझे कोई रुपया तुम नहीं दे गए। बन्दी में रुपये जमा न थे और न ही भक्त जी ने कोई रसीद ली थी। सरल स्वभाव से वह रुपया सेठ जी को देकर चला गया था। बहुत दिन झगड़ा चलता रहा, अन्ततः सेठ जी की ओर से भक्त नोतनदास पर अदालती दावा दायर कर दिया गया। नोतनदास एक गरीब आदमी था। उसकी बात पर किसी को विश्वास भी न आता था। पेशी के दिन से एक दिन पहले भगत नोतनदास ने सब वृतांत श्रीस्वामी जी को आकर सुनाया, श्रीस्वामी जी ने उस की बात को जान लिया और बोले—"नोतनदास फिकर मत करो, कल ही मुकद्दमा तुम्हारे हक में हो जायेगा।" दूसरे दिन कचहरी में न्यायाधीश ने जब सेठ जी से पूछा कि—"क्यों सेठ जी! भगत नोतनदास आप को सौ रुपये दे गया था? सेठ जी के मुख से झट यही निकला कि–हां, हां, यह पूरे सौ रुपये मुझे दे गया था।" साहब और वकील हैरान रह गये कि फिर दावा किस बात का रहा?" नोतनदास प्रसन्न होकर स्वामी जी के पास पहुंचा। श्रीस्वामी जी "सब श्रीनन्दनन्दन की कृपा है" बता कर मुस्करा दिये। कुछ दिन पीछे कुछ लोगों ने भक्त नोतनदास को भरमाया और कहने लगे–"वाह नोतनदास! तुम्हें सेठ ने इतना परेशान किया और तू सच्चा था, तुम्हारी जीत हो गई और

तुम चुप करके बैठ गये । सैठ पर मान-हानि का दावा करदो ।"
अब नोतनदास भी माया के चक्कर में आया और इस विषय में
श्रीस्वामी जी के पास सलाह करने आया । श्रीस्वामी जी खूब
कहकहा मार कर हसे और कहने लगे--"अरे मूर्ख ! तू नन्द-
नन्दन की कृपा का अनुभव न कर सका ? अब तुम्हें अपने मान
की बात सूझी है । तुम्हें अपने काम से काम था कि तू
दूसरों की बुराई सोचने लगा है !" भक्त नोतनदास की आँखें
खुल गईं और क्षमा मांगकर घर लौट आया ।

इस प्रकार श्री स्वामी जी ने अनेक व्यक्तियों को सन्मार्ग
की शिक्षा दी । इनकी वाणी में अप्रतिहत प्रभाव था एवं ये
सर्वथा निःस्वार्थ थे । अतः इनके सत्सङ्ग ने प्रायः समस्त नगर-
वासियों को वैष्णव बना रखा था । समय समय पर इनके यहां
ब्रज-वृन्दावन के धुरन्धर विद्वान कथा पाठ करने आ जाते ।
ब्रज की रास मण्डलियाँ आ जाती, तब तो श्री वृन्दावन का शुद्ध
भक्ति-रस समुद्र तरङ्गायित हो उठता । इनके सत्संग प्रभाव
को बढ़ता हुआ देखकर नगर के कुछ एक स्वार्थपरायण ब्राह्मण
स्पर्द्धावश पीठ पीछे इनका विरोध भी किया करते । विशेष
कारण यह था कि उनके कथा-पाठ में जनता को रुचि न होती
थी । एक बार उन ब्राह्मणों ने परस्पर एक सभा बुलाई और
उसमें यह विचार-विमर्श किया गया है कि किसी प्रकार इन्हेंनीचा
दिखाया जावे । सभा में यह निश्चय हुआ कि एक परम विद्वान्
ब्राह्मण इनके सत्सङ्ग में जाकर इनसे शास्त्रार्थ करे और भरी
सभा में इन्हें परास्त करे । पहले तो ऐसा करनें का किसी का
साहस ही न हुआ, फिर एक वृद्ध एवं सर्व शास्त्र निष्णात्
ब्राह्मण तैयार होकर एक दिन इनके सत्सङ्ग में आ पहुंचा ।
आप ब्राह्मण-निष्ठ थे, उसे देखते ही आपने एक आसन बिछा कर

उसे अपने पास बैठाया। समुचित आदर सम्मान किया। यहां यह उल्लेखनीय बात है कि श्रीस्वामी जो सत्सङ्ग में कभी ऊँचे आसन पर न बैठते थे। श्रोताओं के बराबर ही साधारण आसन पर बैठ कर सत्सङ्ग किया करते थे। ब्राह्मण देवता ने बैठते ही श्रीस्वामी जी पर कई एक दार्शनिक प्रश्न कर डाले। इन्होंने सरल स्वभाव से कहा—"कृपानाथ ! मैं इस प्रश्न का उत्तर क्या दे सकता हूँ। विद्या और शास्त्र तो आपके घर की वस्तु है। बड़े सौभाग्य हैं, आज आप हमारे बीच में पधारे हो। आप ही अपने श्रीमुख से इन प्रश्नों के उत्तरों पर प्रकाश डालिए न" अब ब्राह्मण देवता घबराये, उन्हें स्वयं ही उनका समाधान करना न आता था। इधर उधर की अशास्त्रीय व सिद्धान्तहीन बातें करने लगा। नगर निवासी लोग उस ब्राह्मण को आज तक एक अच्छा विद्वान् समझते थे, किन्तु सत्संग में उसकी विद्या की सब कलई खुल गई और सब सत्संगी मन में कहने लगे, यह तो अनपढ़ों की सी बातें गढ़ता जा रहा है। श्रीस्वामी जी सब सुनते रहे, जब वह ब्राह्मण चुप हो गया, तब इन्होंने उन प्रश्नों का इतने सुन्दर एवं शास्त्रीय युक्तियों द्वारा समाधान किया कि उस ब्राह्मण की बुद्धि ठगी सी रह गई। आज समस्त सत्संगी स्त्री-पुरुष भी श्रीस्वामी जी की सर्व शास्त्र निपुणता किन्तु उस पर भी इतनी विनम्रता को देखकर चकित रह गए। ब्राह्मण देवता से अब न रहा गया। उसने ब्राह्मण सभा की बैठक का सब समाचार खोल कर सुनाया एवं अपनी मूर्खता के लिए श्रीस्वामी जी से क्षमा याचना की। इस समाचार को पाकर सब के सब विरोधी ब्राह्मण सदा के लिए चुप होगये एवं श्रीस्वामी जी को आदर की दृष्टि से देखने लगे। श्रीस्वामी जी के गोलोक पधारने के बाद भी वह सत्सङ्ग सदा निर्विरोधभाव से चालू रहा। श्रीस्वामी जी के वर्त्तमान काल में इनके परम

श्रद्धालु भक्त श्री ढालूराम खट्टर ने एक सत्संग-भवन का निर्माण करा दिया था। श्रीस्वामी जी के बाद इनकी आज्ञा से उस सत्संग का भार मेरे पूज्य पिता जी पर रहा। उस सत्संग का एक ऐसा अद्‌भुत एवं अप्रतिहत प्रभाव यह था कि उस में कभी भी नागा नहीं होती थी। यहां तक कि भारत एवं पाकिस्तान के बटवारे कि समय यवनों द्वारा लूटमार के दिनों में जब डेरा गाजीखान में दफा १४४ या करफ्यू आदि लगे हुए थे, उन दिनों में भी वह सत्संग नियमपूर्वक चालू रहा एवं उसमें दो-दो तीन-तीन सौ स्त्री-पुरुष भाग लेते रहे। यह थी एक अपूर्व शक्ति श्रीस्वामी जी द्वारा प्रचलित सत्संग में।

फिर श्रीस्वामी जी की सर्वात्म दृष्टि कहिये अथवा "जहां जहां नेत्र पड़े तहाँ तहां कृष्ण स्फुरे—" की भावना इतनी उन्नत थी कि मनुष्यों की क्या चलती, पशु-पक्षी, सर्पादि भी उनके सामने अपने प्रकृत स्वभावों को भूल जाते थे। यह बात तो सर्व विदित थी ही कि एक वहुत बड़ा काला सर्प सदा उनकी कोठरी में घूमता रहता था एवं ये सदा निर्भयता से वहां अपना सब काम काज करते रहते थे। कभी कोई अतिथि या दर्शक इनको मिलने आता और सर्प उसे दीख पड़ता तो वह चिल्लाकर कोठरी से बाहर भाग खड़ा होता था। श्रीस्वामी जी सदा यही कहते—"भाई ! डरो मत, यह हमारा यार है, तुम्हें कुछ नहीं कहेगा।" आपके सत्संग में प्रायः वह सर्प आंगन में दीवारों के सहारे घूमता रहता था।

एक दिन एक बन्दर आपके सत्संग में चला आया, जब उस दिन श्रीरामायण अन्तर्गत श्रीमहावीर जी की कथा हो रही थी, उसे देखकर सारी सभा कुछ चमत्कृत और कुछ अस्थिर सी हो उठी। वह बन्दर कूदता फांदता श्रीस्वामी जी की गोदी

में आकर बैठ गया। श्रीस्वामी जी स्थिरता पूर्वक पूर्ववत् कथा बांचते रहे वह बन्दर भी चुपचाप गोदी में बैठा रहा। इसी प्रकार वह बन्दर अनेक दिनों तक सत्संग में आता रहा और श्रीस्वामी जी के पीठ पीछे आकर बैठ जाता एवं इनकी पीठ को खजाता रहता। किन्तु ये स्थिरता पूर्वक कथा कहते रहते।

इस प्रकार श्रीस्वामी जी के अनेक अद्भुत चरित्र हैं, जिन समस्त का उल्लेख करना मुझ जैसे अल्प बुद्धि के लिए असम्भव ही है। विशेषत: सं०१९८४ में जब श्रीस्वामी जी ने गोलोक गमन किया, मेरी आयु ६-७ वर्ष की थी। अत: उपर्युक्त कतिपय जिन चरित्रों को मैंने अपने पूज्य पिता जी से और श्रीस्वामी जी के अनेक कृपा पात्र परिवारों के लोगों से सुना और जिनकी मुझे स्मृति रही आई, मैंने उनका यहां संक्षिप्त उल्लेख कर दिया है।

वास्तव में स्वामी जी एक महान् विभूति थे। ये सच्चे संन्यासी थे। किन्तु इन्होंने जगत् को बहकाने के लिए कभी रंगे कपड़े धारण न किये थे। ये परम विरक्त थे, किन्तु गृहस्थ में रहकर ही इन्होंने सच्चे वैराग्य का आदर्श स्थापन किया। ये परम सिद्ध महा भागवत थे, किन्तु निजी मान-प्रतिष्ठा-पूजा से कोसों दूर थे। परम विद्वान्, सर्व शास्त्र-निष्णात थे, किन्तु सदा नम्रता एवं दीनता से विभूषित थे। सर्वात्मदर्शी एवं आत्माराम ज्ञानी थे, किन्तु व्रजबिहारी श्रीललितलड़ैती लाल जी का पदकिङ्कर्य्य ही अपना स्वरूपानुबन्धी धर्म समझते थे। देह-दैहिक अध्यास व आसक्ति से यह इतने परे थे कि इन्होंने आजीवन अपना फोटो केवल इसीलिए नहीं उतारने दिया कि कहीं इनके चित्र की पूजा-आरती उतारने से इन्हें संसार की वासना न जाग उठे। आज के सन्त-महन्त-गुरु-आचार्य तो सज-

धज कर अपने चित्र उतरवाते हैं एवं शिष्यों में अपने हाथों बांटते हैं, किन्तु श्रीस्वामी जी के चित्र लेने के लिए फोटोग्राफर सैकड़ों रुपये की भेंट चढ़ाने आये, किन्तु इन्होंने उनकी तो क्या चली, अपने शिष्यों एवं परिवार के लोगों को भी अपना चित्र न लेने दिया।

आज मैं श्रीस्वामी जी के उस एक परम दूरदर्शी, सच्चे सनातनधर्मी शिष्य भक्त मुकुन्दलाल जी का धन्यवाद करता हूं, जिन्होंने श्रीस्वामी जी के गोलोक पधारने के पश्चात् विशेष आग्रह पूर्वक इनका चित्र उतरवाया था। मेरे पिताजी ने श्रीस्वामी जी के आदेश के अनुसार भक्त जी को चित्र उतरवाने से रोक दिया था, किन्तु भक्त जी ने एक बलवान् युक्ति देकर पिताजी को अवाक् कर दिया था, उन्होंने कहा—"श्रीस्वामी जी का अब इस शरीर से कुछ सम्बन्ध नहीं रहा है, अब यह हमारा है। हम अवश्य इसका चित्र अपनी स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए उतारेंगे।" उन्हीं के आग्रह से श्रीस्वामी जी के शरीर के तीन पोज उतारे गए। एक तो लेटी हुई अवस्था में दूसरे कुर्सी पर बैठा हुआ एवं तीसरा आसन पर पालती मारे हुए सत्संग करते हुए। यही चित्रपट इस पुस्तक में संलग्न हैं। जिसके दर्शन कर पाठक वृन्द अवश्य श्रीस्वामी जी की निष्ठा-चेष्टा का अनुभव कर सकेंगें। पाठक गण को यह जानकर अति आश्चर्य होगा कि शरीर पात होने के काल पीछे श्रीस्वामी जी के शरीर का कोई भी अङ्ग उस समय जहां मोड़ा गया,

जहाँ स्थिर किया गया, जीवित अङ्गों की भांति वह वहां ही बिना आधार के स्थिर हो गया एवं सरलता से फोटो उतारली गई। इससे यह सिद्ध हो रहा था कि भगवत् भक्तों के शरीर पंच भौतिकता से रहित होकर अप्राकृत शुद्ध सत्व से तादात्मता प्राप्त कर लेते हैं।

अन्त में श्रीस्वामी जी के पावन चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम करते हुए मैं पाठक वृन्द से अपनी त्रुटि-विच्युति की क्षमा याचना करता हूँ एवं उनसे आशा करता हूँ कि वे ऐसे-ऐसे महान् सन्तों के चित्र-चरित्र एवं उनकी वाणियाँ, जो कहीं भी गुप्त और अपरिचित रूप में पड़ी हुई हों, उन्हें प्रकाशित कर भक्ति साहित्य को मण्डित करेंगे।

वैष्णव-पद-रजाभिलाषी—

श्यामलाल हकीम

श्रीधाम-वृन्दावन।

संक्षिप्त विषय सूची

* पद-अनुक्रमणिका *

★

* श्रीश्रीकृष्णचैतन्य-नित्यानन्द चरणकमलेभ्यो नमः *

श्री भक्तभाव संग्रह

मङ्गलाचरण

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षुरुन्मिलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।१।।

वाञ्छाकल्पतरूभ्यश्च कृपासिन्धुभ्य एव च ।
पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमो नमः ।।२।।

वन्देऽहं श्रीगुरोः श्रीयुतपदकमलं श्रीगुरून् वैष्णवांश्च,
श्रीरूपं साग्रजातं सहगण रघुनाथान्वितं तं सजीवम् ।
साद्वैतं सावधूतं परिजन सहितं (श्री) कृष्णचैतन्यदेवं,
श्रीराधाकृष्णपादान् सहगण ललिता श्रीविशाखान्वितांश्च ।।३।।

वन्दे श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दौ सहोदितौ ।
गौड़ोदये पुष्पवन्तौ चित्रौ शंदौ तमोनुदौ ।।४।।

दीव्यद् वृन्दारण्य कल्पद्रुमाधः श्रीमद्रत्नागार सिंहासनस्थौ ।
श्रीमद्राधा श्रीलगोविन्ददेवौ प्रेष्ठालिभिः सेव्यमानौ स्मरामि ।५।

❀ श्री शचीतनयाष्टकम् ❀

उज्ज्वल वरण गौरवर देहं, विलसित निरवधि भाव विदेहम्
त्रिभुवन पावन कृपायाः लेशं, तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्।
गद्‌गद् अन्तर भाव विकारं, दुर्जन तर्जन नाद विशालम्
भव भय भञ्जन कारण करुणं, तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्।
अरुणाम्बरधर चारु कपोलं, चन्द्र विनिन्दित शीतल बदनम्।
जल्पित निज गुण-नाम विनोदं, तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्।
विगलित-ननय कमल जलधारं, भूषण नवरस भावविकारम्
गति अति मन्थर नृत्य विलासं, तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्।
चञ्चल चारु चरण गति रुचिरं, मञ्जीररञ्जितपदयुग मधुरम्
इन्दु विनिन्दित नखचयरुचिरं, तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्।
धृत कटि डोर कमण्डलु दण्डं, दिव्य कलेवर मुण्डित मुण्डम्
दुर्जन कल्मष खण्डन दण्डं, तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्।
भूषण भूरज अलकावलितं, कम्पित बिम्बाधर वरं रुचिरम्
मलयज विरचित उज्ज्वलतिलकं, तं प्रणमामिचश्रीशचीतनयम्॥
निन्दित अरुण कमलदल नयनं, आजानुलम्बित श्रीभुजयुगलम्।
कैशोर कलेवर नर्त्तक वेशं, तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्॥

❀ श्रीगौर-कृष्ण स्तोत्रम् ❀

जय नन्दनन्दन गोपीजनवल्लभ राधानायक नागर श्याम ।
सो शचीनन्दन नदिया पुरन्दर, सुरमुनिगण मनमोहन धाम ॥
जय निजकान्ता-कान्ति कलेवर, जय जय प्रेयसी भाव विनोद ।
जय व्रजसहचरी-लोचन मङ्गल, जय नदिया वधु नैनामोद ॥
जय श्रीदाम सुदाम सुबलार्जुन प्रेम प्रवर्द्धन नव घनरूप ।
जय रामादि सुखद प्रिय सहचर, जय जय मोहन गौर अनूप॥
जय अतिबल बलराम प्रियानुज जय जय नित्यानन्द आनन्द ।
जय जय सज्जनगण भव भंजन, गोविन्ददास आस अनुबन्ध ॥

❀ श्रीनित्यान्दाष्टकम् ❀

शरच्चन्द्र भ्रान्ति स्फुरदमल कान्ति गजगतिं
हरि प्रेमोन्मत्तं धृत परम सत्वं स्मितमुखम् ।
सदा घूर्णन्नेत्रं करकलित वेत्रं कलिभिदं
भजे नित्यानन्दं भजनतरु कन्दं निरवधि ॥१॥
रसानामागारं स्वजनगण सर्वस्वमतुलं
तदीयैक प्राणप्रतिम वसुधा जाह्नवापतिम् ।
सदा प्रेमोन्मादं परमविदितं मन्दमनसां
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥२॥
शचीसूनुप्रेष्ठं निखिल जगदिष्टं सुखमयं
कलौ मज्जज्जीवोद्धरण करणोद्दाम करुणम् ।

हरेराख्यानाद्वा भवजलधि गर्वोन्नति हरं
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥३॥
अये भ्रातर्नृणां कलिकलुषिणां किन्तु भविता
तथा प्रायश्चित्तं रचय यदनायासत इमे ।
व्रजन्ति त्वामित्थं सह भगवता मंत्रयति यो
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥४॥
यथेष्टं रे भ्रातः ! कुरु हरि हरि ध्वानमनिशं
ततो वः संसाराम्बुधि तरण दायो मयि लगेत् ।
इदं बाहु स्फोटैरटति रटयन् यः प्रति गृहं
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥५॥
बलात् संसाराम्भोनिधि हरण कुम्भोद्भवमहो
सतां श्रेयः सिन्धून्नति कुमुद बन्धुं समुदितम् ।
खल श्रेणी स्फूर्जत्तिमिर हर सूर्यं प्रभमहं
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥६॥
नटन्तं गायन्तं हरिमनुवदन्तं पथि पथि
व्रजन्तं पश्यन्तं स्वमपि नदयन्तं जनगणम् ।
प्रकुर्वन्तं सन्तं सकरुण दृगन्तः प्रकलनाद्
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥७॥
सुविभ्राणं भ्रातुः करसरसिजं कोमलतरं
मिथो वक्त्रालोकोच्छलित परमानन्द हृदयम् ।
भ्रमन्तं माधुर्यैरहह ! मदयन्तं पुरजनान्
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥८॥

रसानामाधारं रसिकवर सद्वैष्णवधनं-
रसागारं सारं पतिततितारं स्मरणतः ।
परं नित्यानन्दाष्टकमिदमपूर्वं पठति य
स्तदंघ्रिद्वन्द्वाब्ज स्फुरतु नितरां तस्य हृदये ॥८॥

॥ श्री श्रीषड़् गोस्वामी--अष्टकम् ॥

कृष्णोत्कीर्त्तन--गान--नर्त्तन-परौ प्रेमामृताम्भोनिधी
धीराधीरजनप्रियौ प्रियकरौ निर्मत्सरौ पूजितौ ।
श्रीचैतन्यकृपाभरौ भुवि भुवो भारावहन्तारकौ
वन्दे रूपसनातनौ रघुयुगौ श्रीजीवगोपालकौ ॥१॥

नाना शास्त्रविचारणैक निपुणौ सद्धर्मसंस्थापकौ
लोकानां हितकारिणौ त्रिभुवने मान्यौ शरण्याकारौ
राधाकृष्णपदारविन्द भजनानन्देन मत्तालिकौ
वन्दे रूपसनातनौ रघुयुगौ श्रीजीवगोपालकौ ॥२॥

श्रीगौराङ्ग गुणानुवर्णनविधौ श्रद्धासमृद्धान्वितौ
पापोत्ताप निकृन्तनौ तनुभृतां गोविन्दगानामृतैः ।
आनन्दाम्बुधि-वर्द्धनैक निपुणौ कैवल्य निस्तारकौ
वन्दे रूपसनातनौ रघुयुगौ श्रीजीवगोपालकौ ॥३॥

त्यक्त्वातूर्णमशेष,मण्डलपति-श्रेणीं सदा तुच्छवत्
भूत्वा दीनगणेशकौ करुणया कौपीन-कन्थाश्रितौ ।
गोपी भाव रसामृताब्धि लहरी कल्लोलमग्नौ मुहु-
र्वन्दे रूपसनातनौ रघुयुगौ श्रीजीवगोपालकौ ॥४॥

कूजत्-कोकिल-हंस-सारस-गणाकीर्णे मयूराकुले ।
नानारत्न निबद्ध मूल विटप श्रीयुक्त वृन्दावने ।
राधाकृष्णमहर्निशं प्रभजतौ जीवार्थदौ यौ मुदा
वन्दे रूपसनातनौ रघुयगौ श्रीजीवगोपालकौ ।।५।।
संख्यापूर्वक नामगान नतिभिः कालावसानीकृतौ
निद्राहार विहारकादि विजितौ चात्यन्त दीनौ च यौ
राधाकृष्ण गुणामृतैर्मधुरिमानन्देन सम्मोहितौ
वन्दे रूपसनाततौ रघुयुगौ श्रीजीवगोपालकौ ।।६।।
राधाकुण्डतटे कलिन्द तनयातीरे च वंशीवटे
प्रेमोन्माद वशदशेष दशया ग्रस्तौ प्रमत्तौसदा ।
गायन्तौ च कदा हरेर्गुणवरं भावाभिभूतौ मुदा
वन्दे रूपसनातनौ रघुयुगौ श्रीजीवगोपालकौ ।।७।।
हे राधे व्रजदेविके च ललिते हे नन्दसूनो कुतः
श्रीगोवर्द्धन-कल्पपादपतले कालिन्दीवन्ये कुतः ।
घोषान्ताविति सर्वतो व्रजपुरे खेदैर्महा विह्वलौ
वन्दे रूपसनातनौ रघुयुगौ श्रीजीवगोपालकौ ।।८।।

❀ श्री गोपालाष्टकम् ❀

भज श्रीगोपालं दीनदयालं, वचनरसालं तापहरम् ।।ध्रु०।।
विहरत स्वच्छन्दं आनन्दकन्दं, श्रीव्रजचन्दं ब्रह्मपरम् ।
पूरणशशिवदनं, शोभासदनं, जित-छबिमदनं रूपवरम् ।।
हलधरवरवीरं श्यामशरीरं, गुणगम्भीरं धीरधरम् ।

भज श्रीगोपालं दीनदयालं, वचनरसालं तापहरम् ॥१॥
राजत बनमाला रूपविशाला, चाल मराला सुरतहरम् ।
कुण्डलधृतकरणं गिरिवरधरणं, निज जन शरणं कृपाकरम् ॥
गोपन कृतांगं ललितत्रिभंगं, लज्जित अनगं निरखि परम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं, वचनरसालं तापहरम् ॥२॥

जलधरवरश्यामं पूरणकामं, अति सुखधामं दुःखहरम् ।
वृन्दावन-क्रीड़ित असुरन-पीड़ित, ब्रजतिय-व्रीड़ित रसिकवरम् ॥
नूपुरध्वनिचरणं मुनिमनहरणं, तारणं--तरणं तुष्टतरम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं, वचनरसालं तापहरम् ॥३॥

राधा-उरहारं रूप-अपारं, नीरविहारं चीरहरम् ।
कुञ्चितवरकेशं मुकुटविशेषं, गोपसुवेषं, निगमवरम् ॥
कोमल अतिचरण वेदविवरणं, जगदुद्धरणं मृदुलतरम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं, वचनरसालं तापहरम् ॥४॥

अलकन-मुखराजत मन्मथलाजत, किङ्कणीबाजत मधुरस्वरम् ।
वंशीकृतनादं हरतविषादं, युगवरपादं तिमिरहरम् ॥
भक्तन--आधीनं चरित--नवीनं, परम प्रवीणं प्रेम-परम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं, वचनरसालं तापहरम् ॥५॥

अतिनृत्यप्रवीरे धीरसमीरे, यमुनातीरे रासकरम् ।
कलगान अनूपं श्यामस्वरूपं, त्रिभुवनभूपं मोदभरम् ॥
राधागुणगायक ब्रजसुखदायक, सुरवरनायक वेणुधरम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं वचनरसालं तापहरम् ॥६॥

सुन्दर मृदुहासं विपिन विलासं कुञ्जनिवासं केलिकरम् ।
युवतीदृग अञ्जन जनमनरञ्जन, केशीभञ्जन भारहरम् ॥
भूषण निज-भवनं गजगति गमनं, कालियदमनं नृत्यकरम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं, वचनरसालं तापहरम् ॥७॥
गोरजमुखशोभित सुरनरलोभित, मन्मथक्षोभित दृश्यपरम् ।
गोपनसहभुञ्जे विपिननिकुञ्जे, वत्सनपुञ्जे दुहिणहरम् ॥
यह छबि-तारायण लखि "नारायण" भये परायण अखिलनरम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं, वचनरसालं तापहरम् ॥८॥

❀ श्रीकृष्णाष्टकम ❀

भजे व्रजैकमण्डनं समस्तपाप खण्डनं
स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैवनन्दनन्दनम् ।
सुपिच्छगुच्छमस्तकं सुनादवेणुहस्तकं
अनङ्गरङ्गसागरं नमामि कृष्णनागरम् ॥१॥
मनोजगर्वमोचनं विशाललोललोचनं
विधूतगोपशोचनं नमामि पद्मलोचनम् ।
करारविन्दभूधरं स्मितावलोकसुन्दरं
महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्णवारणम् ॥२॥
कदम्बसूनकुण्डलं सुचारुगण्डमण्डलं
ब्रजाङ्गनैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम् ।
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया
युतं सुखैकदायकं नमामि गोपनायकम् ॥३॥

सदैव पादपङ्कजं मदीयमानसे निजं
दधानमुक्तमालकं नमामि नन्दबालकम् ।
समस्तदोषशोषणं समस्त लोकपोषणं
समस्तगोपमानसं नमामि कृष्णलालसम् ।।४।।
भुवो भरावतारकं भवाब्धि कर्णधारकं
यशोमतीकिशोरकं नमामि दुग्धचोरकम् ।
दृगन्तकान्तभङ्गिनँ सदा सदालिसङ्गिनं
दिने दिने नवं नवं नमामि नन्दसम्भवम् ।।५।।
गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं कृपापरं
सुरद्विषन्निकन्दनं नमामि गोपनन्दनम् ।
नवीनगोपनागरं नवीनकेलि लम्पटं
नमामि मेघसुन्दरं तड़ित्प्रभालसत्पटम् ।।६।।
समस्तगोपनन्दनं हृदम्बुजैकमोहनं
नमामिकुञ्जमध्यगं प्रसन्नभानुशोभनम् ।
निकामकामदायकं दृगन्त चारुसायकं
रसालवेणुगायकं नमामि कुञ्जनायकम् ।७।।
विदग्धगोपिकामनो मनोज्ञतल्पशायिनं
नमामि मञ्जुकानने प्रवृद्धवह्निपायिनम् ।
यदा तदा यथा तथा तथैव कृष्णसत्कथा
मया सदैव गीयतां तथा कृपाविधीयताम् ।।८।।
प्रमाणिकाष्टकद्वयं जपत्यधीत्य यः पुमान् ।
भवेत्स नन्दनन्दने भवे भवे सुभक्तिमान् ।।९।।

❀ श्रीदामोदराष्टकम् ❀

नमामीश्वरं सच्चिदानन्दरूपं,
लसत्कुण्डलं गोकुले भ्राजमानम् ।
यशोदाभियो — लूखलाद्धावमानं,
परामृष्टमत्यं ततो द्रुत्य गोप्या ॥१॥

रुदन्तं मुहुर्नेत्रयुग्मं मृजन्तं,
कराम्भोज-युग्मेन सातङ्कनेत्रम् ।
मुहुः श्वासकम्प - त्रिरेखाङ्ककण्ठ-,
स्थित-ग्रैव-दामोदरं भक्तिबद्धम् ॥२॥

इतीदृक् स्वलीलाभिरानन्दकुण्डे,
स्वघोषं निमज्जन्तमाख्यापयन्तम् ।
तदीयेशितज्ञेषु भक्तैर्जितत्वं,
पुनः प्रेमतस्तं शतावृत्ति वन्दे ॥३॥

वरं देव ! मोक्षं न मोक्षावधिं वा,
न चान्यं वृणेऽहं वरेशादपीह ।
इदं ते वपुर्नाथ ! गोपालबाल,
सदा मे मनस्याविरास्तां किमन्यैः ॥४॥

इदं ते मुखाम्भोजमत्यन्तनीलै-,
र्वृतं कुन्तलैः स्निग्ध-वक्रैश्च गोप्या ।
मुहुश्चुम्बितं बिम्बरक्ताधरं मे,
मनस्याविरास्तामलं लक्षलाभैः ॥५॥

नमो देव दामोदरानन्त विष्णो !,
प्रसीद प्रभो ! दुःखजालाब्धि मग्नम् ।
कृपादृष्टि - वृष्ट्यातिदीनं बतानु,
गृहाणेश ! मामज्ञमेध्यक्षिदृश्यः ॥६॥

कुबेरात्मजौ बद्धमूर्त्यैव यद्वत्,
त्वया मोचितौ भक्तिभाजौ कृतौ च ।
तथा प्रेमभक्तिं स्वकां मे प्रयच्छ,
न मोक्षे ग्रहो मेऽस्ति दामोदरेह ॥७॥

नमस्तेऽस्तु दाम्ने स्फुरद्दीप्तिधाम्ने,
त्वदीयोदरायाथ विश्वस्य धाम्ने ।
नमो राधिकायै त्वदीय प्रियायै,
नमोऽनन्तलीलाय देवाय तुभ्यम् ॥८॥

❀ श्रीराधाकृपाकटाक्षस्तवराजः ❀

(ध्यानम्)

श्यामां गोरोचनाभां स्फुरदसितपटप्राप्तिरम्यावगुण्ठां,
रम्यां धन्यांस्व वेणीसुचिकुरनिकरालंबपादांकिशोरीम् ।
तर्जन्यंगुष्ठयुक्तं हरिमुखकुहरे युञ्जतीं नागवल्ली-
पर्णं कर्णायताक्षीं त्रिभुवनमधुरां राधिकां भावयामि ॥१॥

शिव उवाच

मुनीन्द्रवृन्दवन्दिते त्रिलोकशोकहारिणि
प्रसन्नवक्त्रपङ्कजे निकुञ्ज-भू-विलासिनि ।

व्रजेन्द्र-भानु-नन्दिनि व्रजेन्द्र-सूनु-सङ्गते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥२॥
अशोक-वृक्ष--वल्लरी--वितान--मण्डप-स्थिते
प्रवालबाल-पल्लव--प्रभाऽरुणांघ्रि--कोमले ।
वराभयस्फुरत्--करे प्रभूत--सम्पदालये
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥३॥
अनङ्ग--रङ्ग---मङ्गल---प्रसङ्ग---भंगुरभ्रुवां
सविभ्रमं-ससभ्रमं दृगन्त-बाण-पातनैः ।
निरन्तरं वशीकृत--प्रतीति--नन्दनन्दने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥४॥
तडित्--सुवर्ण--चम्पक---प्रदीप्त--गौर---विग्रहे
मुखप्रभा--परास्त---कोटि--शारदेन्दुमण्डले ।
विचित्र--चित्र---सञ्चरच्चकोर---शावलोचने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥५॥
मदोन्मदाति-यौवने प्रमोद-मान-मण्डिते
प्रियानुराग-रञ्जिते कला-विलास-पण्डिते ।
अनन्य-धन्य-कुञ्ज-राज्य-काम-केलि--कोविदे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥६॥
अशेष-हाव-भाव—धीर-हीरहार-भूषिते
प्रभूतशातकुम्भ-कुम्भ-कुम्भि कुम्भ-सुस्तनि ।
प्रशस्त--मन्द-हास्य--चूर्ण-पूर्ण-सौख्यसागरे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥७॥

मृणाल-बाल—वल्लरी-तरङ्ग-रङ्ग-दोर्लते
लताग्र-लास्य-लोल नील-लोचनावलोकने ।
ललल्लुलन्मिलन्मनोज्ञ--मुग्ध—मोहनाश्रिते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥८॥
सुवर्णमालिकांचितत्रिरेख—कम्बु—कण्ठगे
त्रिसूत्र मङ्गलीगुण त्रिरत्न-दीप्ति दीधिति ।
सलोल--नीलकुन्तल—प्रसून-गुच्छ-गुम्फिते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥९॥
नितम्बबिम्ब—लम्बमान—पुष्पमेखलागुणे
प्रशस्तरत्नकिङ्किणी-कलाप-मध्य-मञ्जुले ।
करीन्द्रशुण्डदण्डिका——वरोहसौभगोरुके
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥१०॥
अनेक--मन्त्रनाद—मञ्जु-नूपुरारवस्खलत्
समाज-राजहंस-वंश—निक्वणातिगौरवे ।
विलोल-हेम--वल्लरी— विडम्बिचारुचंक्रमे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥११॥
अनन्त-कोटि-विष्णुलोक-नम्र--पद्मजार्चिते
हिमाद्रिजा-पुलोमजा--विरिंचजा--वरप्रदे ।
अपार-सिद्धि-ऋद्धि-दिग्ध सत्पदांगुलीनखे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥१२॥
मखेश्वरि क्रियेश्वरि स्वधेश्वरि सुरेश्वरि
त्रिवेद-भारतीश्वरि प्रमाण-शासनेश्वरि ।

रमेश्वरि क्षमेश्वरि प्रमोद-काननेश्वरि
व्रजेश्वरि व्रजाधिपे श्रीराधिके नमोऽस्तुते ॥१३॥
इतीममद्भुतं स्तवं निशम्य भानुनन्दिनी ।
करोतु सन्ततं जनं कृपाकटाक्षभाजनम् ॥१४॥
भवेत्तदैव-संचित--त्रिरूप—कर्म-नाशनम् ।
भवेत्तदा-व्रजेन्द्र-सूनु-मण्डल—प्रवेशनम् ॥१५॥
राकायां च सिताष्टम्यां दशम्यां च विशुद्धधीः ।
एकादश्यां त्रयोदश्यां यः पठेत्साधकः सुधीः ॥१६॥
यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति साधकः ।
राधाकृपाकटाक्षेण भक्तिः स्यात् प्रेमलक्षणा ॥१७॥
उरुदघ्ने नाभिदघ्ने हृद्दघ्ने कण्ठदघ्ने च ।
राधाकुण्डजले स्थित्वा यः पठेत् साधकः शतम् ॥१८॥
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्यात् वाक्सामर्थ्यं ततो लभेत् ।
ऐश्वर्यं च लभेत्साक्षाद्दृशा पश्यति राधिकाम् ॥१९॥
तेन सा तत्क्षणादेव तुष्टा दत्ते महावरम् ।
येन पश्यति नेत्राभ्यां तत् प्रियं श्यामसुन्दरम् ॥२०॥
नित्यलीला-प्रवेशं च ददाति हि व्रजाधिपः ।
अतः परतरं प्राप्यं वैष्णवानां न विद्यते ॥२१॥

❀ श्रीराधाष्टकम् ❀

हे राधे वृषभानुभूपतनये हे पूर्णचन्द्रानने
हे कांते कमनीय कोकिलरवे वृन्दावनाधीश्वरि ।
हे मत्प्राणपरायणे च रसिके हे सर्वयूथेश्वरि
मत्स्वान्तोच्चवरासने विश मुदा मां दीनमानन्दय ।।१।।

हे श्यामे कलधौतकान्तिरुचिरे हे कीर्तिदेवीसुते
हे गान्धर्वकलानिधेऽतिसुभगे हे सिन्धुकन्यार्चिते ।
हे कृष्णाननपङ्कजभ्रमरिके दामोदरप्रेयसि
मत्स्वान्तोच्चवरासने विश मुदा मां दीनमानन्दय ।।२।।

हे गौराङ्गकिशोरिके सुनयने कृष्णप्रिये राधिके
हे वामाक्षि मनोजमानदलने संकेत संकेतिके ।
हे गोवर्धननाथचर्चितपदे हे गोपचूड़ामणे
मत्स्वान्तोच्चवरासने विश मुदा मां दीनमानन्दय ।।३।।

हे वृन्दावननागरी गुणयुते काश्मीर मुद्रांकिते
रक्तालक्तक चर्चिताङ्घ्रिकमले हे चारुबिम्बाधरे।
मुक्तादामविभूषितांगलतिके हे नीलशाटीवृते
मत्स्वान्तोच्चवरासने विश मुदा मां दीनमानन्दय ।।४।।

हे चन्द्रावलिसेविते सुललिते भद्रारमा वन्दिते
पद्माचम्पकमालिकानुतपदे हे तुङ्गभद्राप्रिये ।
हे तन्वंगि मृगाक्षि चारुनयने हे रत्न मञ्जीकले
मत्स्वान्तोच्चवरासने विश मुदा मां दीनमानन्दय ।।५।।

रक्तांभोजचकोरमीननयने हे स्वर्णकुम्भस्तनि
फुल्लांभोजकरे विलासिनि रमे इन्द्राणि संराधिते ।
हे वृन्दावनकुञ्जकेलिचतुरे हे मानलीला करे
मत्स्वान्तोच्चवरासने विश मुदा मां दीनमानन्दय ॥६॥

हे कांच्यादिविभूषितोरुरुचिरे हे मन्दहास्यानने
गोलोकाधिपकामकेलिरसिके हे गोकुलेशप्रिये ।
कालिन्दीतटकुञ्जवासनिरते हे शुद्धभावप्रिये
मत्स्वान्तोच्च वरासने विश मुदा मां दीनमानन्दय ॥७॥

मुक्ताराधितपादपद्मयुगले हे पार्वतीशेश्वरि
श्रीमन्नन्दकुमारमारजनिके नीलालकावृन्मुखे ।
राकापूर्णनिवेन्दुसुन्दरमुखे रामानुजानन्दिनि
आगत्य त्वरितं त्वमत्र विपिने मां दीनमानन्दय ॥८॥

❀ श्रीराधानाममाधुरी स्तोत्र ❀

दोहा—श्रीराधा बाधा-हरन, रसिकन जीवन मूरि ।
जनम जनम वर मांगहुँ,श्रीपद पङ्कज धूरि ॥

श्रीकृष्ण शिरोमणि श्रीराधा,जय श्याम सजीवनि श्रीराधा ॥
जय रासविलासिनि श्रीराधा,नित्य कुञ्ज निवासिनी श्रीराधा॥
वृन्दावन रानी श्रीराधा, मोहन मन मानी श्रीराधा ॥
ब्रजचन्द्र चकोरी श्रीराधा, वृषभानु किशोरी श्रीराधा ॥

जय नित्यविहारिणी श्रीराधा,ब्रजसुख विस्तारिणी श्रीराधा ॥
रसिकन की स्वामिनि श्रीराधा,करुणानिधि नामिनि श्रीराधा ॥
अनुराग सुबेली श्रीराधा, सौभाग्य नवेली श्रीराधा ॥
आनन्द रसायनि श्रीराधा, प्रीतम सुखदायनि श्रीराधा ॥
त्रिभुवन ठकुरायनि श्रीराधा, गोविन्द गोसायनि श्रीराधा ॥
कमनीय कुमारी श्रीराधा, हरि बल्लभ प्यारी श्रीराधा ॥
मङ्गल की मूरति श्रीराधा, ब्रजजन सुख पूरति श्रीराधा ॥
जय नख चन्द्रावलि श्रीराधा, प्रीतम प्रेमावलि श्रीराधा ॥
गोपाल उपासिनि श्रीराधा, वृन्दावन वासिनि श्रीराधा ॥
ललितादिक प्यारी श्रीराधा, अति रूप उजारी श्रीराधा ॥
नट नागर भामा श्रीराधा, परिपूरण कामा श्रीराधा ॥
रामा अभिरामा श्रीराधा, श्यामा सुखदामा श्रीराधा ॥
ब्रज जीवन जीवनि श्रीराधा,निरवधि रस पीवनि श्रीराधा ॥
गोपी चूड़ामणि श्रीराधा, सुषमा--महिमा--मनि श्रीराधा ॥
चैतन्य सुरङ्गनि श्रीराधा, गौराङ्ग सुअङ्गनि श्रीराधा ॥
श्रीरूप सनातन श्रीराधा, "हरिराम" आनन्दघन श्रीराधा ॥

दोहा—श्याम नाम की माधुरी, रटै प्रात धौं श्याम ।
"श्यामदास" श्यामा चरण,शरण लहत ब्रजधाम॥

❀ श्रीराधा स्तोत्र ❀

दोहा—परा भक्ति रति वर्द्धिनी श्यामा सब सुख दैन ।
रसिक मुकुट मणि राधिके जय नव नीरज नैन ।।

जयति जय राधा रसिक-मणि-मुकुट मन हरणि प्रिये ।
पराभक्ति प्रदायिनि करि कृपा करुणानिधि प्रिये ।।
जयति गोरी नव किशोरी सकल सुख सीमा श्रिये ।
जयति रतिरस वर्द्धिनी अति अद्भुता सदया ह्रिये ।।
जयति आनन्द कन्दनी जग बन्दनी वर वदनिये ।
जयति श्यामा अमितनामा वेदविधि निर्वाच्यिये ।।
जयति रास विलासिनी, कल कला कोटि प्रकाशिये ।
जयति विविध विहार कमनी रसिक रमनी शुभधिये ।।
जयति चञ्चल चारु लोचन दिव्य दुकूला भरनिये ।
जयति प्रेमा प्रेम सीमा कोकिला कल बैनिये ।।
जयति कञ्चन दिव्य अङ्गी नवल नीरज नैनिये ।
जयति वल्लभ वल्लभा आनन्द कलभा तरुनिये ।।
जयति रावलपति कुमारी नन्दबाल वधूटिये ।
जयति नागरि गुन उजागरि प्राणधन-मन हरनिये ।।
जयति नूतन नित्य लीला नित्य धाम निवासिये ।
जयति गुण माधुर्य भूपा प्रेम रूपा शक्तिये ।।
जयति शुद्ध स्वभावशीला श्यामला सुकुमारिये ।
जयति यश जग प्रचुर परिकर"श्रीहरिप्रिया"जीवनजिये।।

दोहा—नितप्रति रति युत कहै सुनै यह स्तोत्र अभिराम ।
पराभक्ति रति पावहिं नित पद श्यामा श्याम ।।

❀ श्रीराधाकृष्ण-स्तोत्र ❀

दोहा—नव नव रङ्गी त्रिभङ्गी जय श्याम सुअङ्गी श्याम ।
जय राधे जय हरिप्रिये श्रीराधे सुखधाम ।।

जय राधे जय राधे राधे जय राधे जय श्री राधे ।
जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण जय कृष्ण जय श्री कृष्ण ।।
श्यामा गोरी नित्य किशोरी प्रीतम जोड़ी श्री राधे ।
रसिकरसीलो छैलछबीलो गुणगरबीलो श्री कृष्ण ।।
रासविहारिणि रसविस्तारिणि पिये उरधारिणि श्रीराधे ।
नव नव रङ्गी नवलत्रिभङ्गी श्याम सुअङ्गी श्रीकृष्ण ।।
प्राणप्यारी रूपउजारी अति सुकुमारी श्रीराधे ।
मैनमनोहर महामोदकर सुन्दर वरतर श्रीकृष्ण ।।
शोभाश्रेणी मोहामैनी कोकिलवैनी श्रीराधे ।
कीरतिवन्ता कामिनीकन्ता श्रीभगवन्ता श्रीकृष्ण ।।
चन्दावदनि कुन्दारदनि शोभासदनि श्रीराधे ।
परमउदारा प्रभाअपारा अतिसुकुमारा श्रीकृष्ण ।।
हंसागमनी राजतरमनी क्रीड़ाकमनी श्रीराधे ।
रूपरसाला नैनविशाला परम कृपाला श्रीकृष्ण ।।

कीरतिवारी भानुदुलारी मोहनप्यारी श्रीराधे।
यसुदानन्दन जनमन रञ्जन ब्रजकुल चन्दन श्रीकृष्ण ॥
कञ्चन वेलि रति रस रेलि अति अलवेलि श्रीराधे।
सब सुखसागर सब गुण आगर रूप उजागर श्रीकृष्ण ॥
रमणी रम्या तरुतरलम्या सुगुण अगम्या श्रीराधे।
धाम निवासी प्रभा प्रकासी सहजसुहासी श्रीकृष्ण ॥
शक्त्याह्लादिनि अति प्रियवादिनि उर उन्मादिनि श्रीराधे।
अंग अंग टोना सरस सलोना सुभग सुठोना श्रीकृष्ण ॥
राधा नामिनि गुण अभिरामिनि श्रीहरिप्रिये स्वामिनिश्रीराधे
हरे हरे हरि हरे हरे हरि हरे हरे हरि श्रीकृष्ण ॥
दोहा—तजि कुतर्क जो नित पढ़ै यह स्तोत्र रस पुञ्ज।
श्यामदास ताकूं युगल वास देतै नित कुञ्ज ॥

❀ श्री मोहन-मोहिनि स्तोत्र ❀

दोहा—श्रीहरिप्रिया स्वामिनि प्रणमि,पुनि प्रणमौं पियाप्रान
कमलनैन श्रीकृष्ण कहि, वर्णौं विविध विधान।
जय श्रीकृष्ण कमलदल लोचन, दुख मोचनि मृगलोचनि राधा
जय श्रीकृष्ण छबीलो दुलहा, नवल छबीली दुलहिन राधा।
जय श्रीकृष्ण श्यामघन सुन्दर, दिव्य घटा तन गोरी राधा
जय श्रीकृष्ण किशोर नित्य नव, नित्य नवीन किशोरी राधा।

जय श्रीकृष्ण रसीलो नागर, रसिक रसीली नागरि राधा ।
जय श्रीकृष्ण अमित गुणआगर, अति अद्भुत गुणआगरि राधा ॥
जय श्रीकृष्ण मनोहर मूरति, परम मनोहर मूरति राधा ।
जय श्रीकृष्ण नीलमणि आभा, कञ्चन मणि आभा अति राधा ॥
जय श्रीकृष्ण सदा सुख सागर, सहज सदा सुख सिंधुनि राधा ।
जय श्रीकृष्ण राधिका बल्लभ, कृष्ण बल्लभा रसकिनि राधा ॥
जय श्रीकृष्ण चारु चन्द्रानन, सुधा सदन शशि बदनी राधा ।
जय श्रीकृष्ण पद्म परि पूरण, पूरण परम पद्मनि राधा ॥
जय श्रीकृष्ण प्रिया मनमोहन, प्राण प्रिया मन मोहनि राधा ।
जय श्रीकृष्ण मीन मन मानहु, निर्मल जल जनु जीवनि राधा ॥
जय श्रीकृष्ण तमाल तरुण छबि, कनकलता छबि छाजति राधा ।
जय श्रीकृष्ण दिव्य द्युति कन्दर्प, कीर्ति दिव्य रति राजति राधा ॥
जय श्रीकृष्ण नित्य नव रङ्गी, नव रङ्गनि रङ्ग भीनी राधा ।
जय श्रीकृष्ण लाड़िलो प्रीतम, प्यारी प्रिया लाड़िली राधा ॥
जय श्रीकृष्ण सुकोमल सीमा, अति सुकुमारी सीमा राधा ।
जय श्रीकृष्ण अखिल परमापर, परमापर प्राणेशा राधा ॥
जय श्रीकृष्ण विलास विभाकर, रूप रसाल प्रभाकर राधा ।
जय श्रीकृष्ण कल्पतरु तरुवर, तरुतम कल्पतरोवरि राधा ॥
जय श्रीकृष्ण सुभग सुभ सुन्दर, सरस सुभग सुभ सुन्दरि राधा ।
जय श्रीकृष्ण शिरोमणि सर्वस, सर्व शिरोमणि सुन्दरि राधा ॥
जय श्रीकृष्ण विलास विशारद, विशद विलास विचक्षनि राधा ।
जय श्रीकृष्ण हरे हरि स्वामी, 'श्रीहरिप्रिया' स्मामिनि राधा ॥

दोहा—युगल नाम मणिमाल यह, जो धारे नित्य चित्त ।
ताकूँ श्यामा श्याम छबि, दरस पड़े चित्त नित्य ॥

❀ श्रीमङ्गलगीतम् ❀

श्रित कमलाकुचमण्डल धृतकुण्डल ए ।
कलित ललित वनमाल जय जय देव हरे ॥
दिनमणि मण्डल मण्डन भवखण्डन ए ।
मुनिजन मानसहंस जय जय देव हरे ॥
कालिय विषधर गञ्जन जनरञ्जन ए ।
यदुकुलनलिन निदेश जय जय देव हरे ॥
मधुमुरनरकविनाशन गरुड़ासन ए ।
सुरकुल केलि निदान जय जय देव हरे ॥
अमलकमलदल लोचन भव मोचन ए ।
त्रिभुवन भवन निधान जय जय देव हरे ॥
जनकसुता कृतभूषण जित दूषण ए ।
समर शमित दशकण्ठ जय जय देव हरे ॥
अभिनव जलधर सुन्दर धृतमन्दिर ए ।
श्रीमुखचन्द्रचकोर जय जय देव हरे ॥
तव चरणे प्रणता वयमिति भावय ए ।
कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय देव हरे ॥
श्रीजयदेवकवेरिदं कुरुते मुदम् ।
मङ्गलमञ्जुलगीतं जय जय देव हरे ॥

❀ श्रीरामचन्द्र स्तोत्रम् ❀

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारुणं ।
नवकञ्ज लोचन, कञ्ज-मुख, कर-कञ्ज पद कञ्जारुणम् ।।
कन्दर्प अगणित अमित छबि, नव नील नीरद सुन्दरं ।
पट पीत मानहुँ तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरम् ।।
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्यवंश निकन्दनं ।
रघुनन्द आनन्दकन्द कोशलचन्द दशरथ नन्दनम् ।।
शिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु, उदार अङ्ग विभूषणं ।
आजानु-भुज-शर-चापधर, संग्राम जित खरदूषणम् ।।
इति वदति 'तुलसीदास', शङ्कर शेष मुनि मन रञ्जनं ।
मम हृदयकञ्ज निवास कुरु, कामादि खल दल गञ्जनम् ।।

❀ श्रीवृन्दावनधाम-स्तोत्र ❀

जयति सच्चिदानन्द रूपं धाम श्रीवृन्दावनम् ।
सकल सुख सौन्दर्य सम्पत्ति सदन शुभ अति पावनम् ।।
जयति लीला ललित लायक पूर्ण नित्य रस-उज्ज्वलम् ।
नन्दवंस अवतंसमणि कीरति–लली केलिस्थलम् ।।
जयति भक्ति–भाव–श्रद्धा प्रेमकुल रत्नाकरम् ।
काम क्रोह मद मोह तम तृष्णा तुषार दिवाकरम् ।।
जयति अचल अनूप सिद्ध स्वरूप गुणगण गोपरम् ।
सन्तगुरु गोविन्द पद रज अञ्जिताक्षिहृदि गोचरम् ।।
जयति वैष्णव वंश वारिधि शारदेन्दु सुखकरम् ।

सिद्ध सुर मुनि मञ्जु महिमा माधुरी मत्त मधुकरम् ॥
जयति यमुनावलित कुञ्जन कलित मुनि मन मोहनम् ।
धर्मार्थ कामापवर्ग निन्दित रम्यरज अति सोहनम् ॥
जयति वृन्दाविपिन परिकर विटप खग मृग जलचरम् ।
बाल-वृद्ध-नर-नारी शृणु पद नम्र विनय मम बद्धकरम् ॥
जन्म जन्मनि रावरे पद पद्म रज तन भूषणम् ।
'श्यामदास' इति आस श्रीवनवास हर भव दूषणम् ॥

❀ श्रीहरिनामाष्टकम् ❀

निखिल श्रुतिमौलिरत्न मालाद्युति नीराजितपाद पङ्कजान्त ।
अपि मुक्तकुलैरुपास्यमानं परितस्त्वां हरिनाम संश्रयामि ॥
जय नामधेय मुनिवृन्द गेय जनरञ्जनाय परमाक्षराकृते ।
त्वमनादरादपि मनागुदीरितं निखलोग्रताप पटलींविलुम्पसि ॥

यदा भासोऽप्युद्यन्कवलितभव ध्वान्तविभवो
दृशं तत्वान्धानामपि दिशति भक्तिप्रणयिनीम् ।
जनस्तस्योदात्तं जगति भगवन्नाम तरणे
कृती ते निर्वक्तुं क इह महिमानं प्रभवति ॥

यद् ब्रह्मसाक्षात्कृति निष्ठयापि विनाशमायाति विना न भोगैः ।
अपैति नामस्फुरणेन तत्ते प्रारब्धकर्मेति विरौति वेदः ॥
अघदमनयशोदानन्दनो नन्दसूनो कमलनयनगोपीचन्द्रवृन्दावनेंद्राः ।
प्रणतकरुणकृष्णावित्यनेकस्वरूपेत्वयिममरतिरुच्चैं र्वद्धं तांनामधेय ॥
वाच्यं वाचकमित्युदेति भवतो नाम स्वरूपद्वयं

पूर्वस्मात् परमेव हन्त करुणं तत्रापि जानीमहे ।
यस्तस्मिन् विहितापर धनिबहःप्राणीसमन्ताद्भवे-
दास्येनेद मुपास्य सोऽपि हि सदानन्दाम्बुधौ मज्जति॥

सूदिताश्रित जनार्तिराशये रम्यचिद्घन सुखस्वरूपिणे ।
नामगोकुलमहोत्सवाय ते कृष्ण पूर्णवपुषे नमो नमः ॥

नारदवीणोज्जीवन सुधोर्मिनिर्यासमाधुरीपूर
त्वं कृष्णनाम कामं स्फुर मे रसने रसने सदा ॥

वन्दना

(१)

चरण-कमल बन्दौं हरिराइ ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अन्धे कौं सब कछु दरसाइ ॥
बहिरौ सुनै गूंग पुनि बोलै, रङ्क चले सिर छत्र धराइ ।
"सूरदास" स्वामी करुणामय, बार-बार बंदौं सिर नाइ ॥

(२)

बन्दौं चरण-सरोज तिहारे ।
सुन्दर स्याम कमलदल-लोचन,ललित त्रिभङ्गी प्राण प्यारे ॥
जे पद पदुम सदा शिव के धन, सिन्धुसुता उर तें नहिं टारे ।
जे पद पदुम तात-रिस-त्रासत मन-बच-कर्म प्रहलाद सम्भारे॥
जे पद पदुम परस जल पावन सुरसरि दरस कटत अघ भारे।
जे पदपदुम परस ऋषि पतिनी बलि मृग व्याध पतित बहुतारे॥
जे पद पदुम रमत वृन्दावन अहि सिर धरि अगनित रिपुमारे।

जे पद पदुम परसि ब्रजभामिनि सरबस दै सुत सदन विसा
जे पद पदुम रमत पाण्डवदल दूत भए सब काज संवारे
"सूरदास" तेई पद पङ्कज त्रिविध ताप दुख हरन हमारे

(३)

बन्दौं श्रीब्रजनिधि सुखदाई ।
सीस मुकुट जीरा जरतारी, कुण्डल स्त्रवन सुहाई ।
वैजन्तीमाला उर राजै, कटि किङ्किनी छबि छाई ।
नूपुर मधुर मधुर बाजैं पग, गति लखि हंस लजाई ॥
नख सिख लौं शृङ्गार मनोहर, अधरन पान ललाई ।
'ललितलड़ैती' या छबि ऊपर, सरवस देंय लुटाई ॥

(४)

बन्दौं श्रीबन कुञ्जबिहारी ।
नेति नेति जाकूँ श्रुति गावैं, कहत शारदा हारी ॥
लीला अगम अपार पार नहिं पावैं विधि त्रिपुरारी ।
अन्त न पावैं कोटि वर्ष लौं मुनिजन लावैं तारी ॥
कौन सकैं गिन गुण अनन्त तिह जासु श्वास श्रुति चारी ।
अमित चरित्र विचित्र यथामति वरणें सब नर नारी ॥
करत अनेक भाँति सूँ क्रीड़ा भक्तजनन हितकारी ।
सकल मनोरथ निज जन पुरवत पूरण काम मुरारी ॥
श्रीराधाब्रजचन्द विमल यश गान रुची मन धारी ।
पै हों कुटिल मन्दमति विषयी अति अज्ञानि अविचारी ।
भजन भावना हिये न परसी नहीं या रस अधिकारी ।

'ललितलड़ैती' तू ही कृपापद आयो शरण तिहारी ॥

(५)

बन्दौं स्वामिनि चरण तिहारे ।
अरुण कमलमृदु अमल करुण अति, रतिपति मनहिं लुभावनवारे॥
सुन्दर सरस सुचारु सुगन्धित, नखमणिचन्द्र अमन्द उजारे ।
चन्दन चर्चित नूपुर-नादित, ब्रह्मानन्द भुलावन हारे ॥
सखिजन सेवित, लालित पालित, अष्टयाम घनश्यामहिं प्यारे ।
'श्यामदास' के इष्ट शिरोमणि, तीन लोक वेदन ते न्यारे ॥

(६)

बन्दौं पद नखचन्द्र किशोरी ।
श्रीवृषभानु भवन की भानु कीरति कुलहि कलानिधि गोरी ॥
वृन्दावन सुख-सम्पति श्यामा रसिकन जीवनि प्रीतम जोरी ।
परम उदार सुहृद करुणाबली महाभाव मूरति अति भोरी ॥
अबलौं भटक्यौ पथ-पाथर ज्यौं लगि रही मति मोरि ठगोरी ।
'श्याम' अपनपौ तुव पद हरयो स्वामिनि बांह गहो अब मोरी ।

(७)

जय जय जय श्रीशचीकिशोर ।
बन्दौं बारम्बार ध्यान धरि परम कृपापद साधन मोर ॥
भव भय सिन्धु अगाध तरन हित कलि में नहीं आसरो और ।
तुव चरनन नखचन्द्र छटा बिनु त्रिभुवन मांझ तिमि तम घोर ।
'ललितलड़ैती' बेग बोलिये श्रीवृन्दावन कुञ्जन ओर ॥

(८)

बन्दौं गौर प्रभु पद-पावन ।

राधाकृष्ण स्वरूप तत्वपर, करुणाकर जग सुख उपजावन।

प्रेम प्रचार आहार प्रेम नित प्रेमदानि कलिकलुष नावन

'श्यामदास'जन जानि-जानि पन,दान देहु रति हरगुण गावन

(९)

जय जय जय प्रभु नित्यानन्द ।

सङ्कर्षण-बलराम तत्वपर परम दयाल मूरति सुखकन्द।

प्रेम भक्ति-रस मगन मत्त अवधूत शिरोमणि परमानन्द

नाम प्रदाता नाम-भिखारी, आधार उधारी नित्यानन्द।

ढूण्ड-ढूण्ड, चुन-चुनकर तारे,अगनित अधम कुटिल मतिमन्द

'श्यामदास'निजदास दास लखि,करुणा करि काटो जगफन्द

(१०)

जय जय जय श्रीदेवकीनन्दन ।

भक्ति प्रेम की खान मनोहर उर धरि ध्यान करूँ पग वन्द

जगत ओर ते मौन धरी जिन निशिदिन रटत यशोदानन्द

'ललितलड़ैती' दरस किए उर दूर होत तत्छित भवबन्धन

(११)

जय जय जय श्रीदेवकीनन्दन ।

वृन्दावन सुख-सर-मराल मनु मधुकर चरणकमल व्रजचन्दन

प्रेम भक्ति रस रासि कृपामय उर धरि ध्यान करूँ पगवन्द

'श्यामदास' नित लहि शरणागति याचत रतिपद यशुमतिनन्द

(१२)

श्री सतश्याम चरण सुखदाई ।
ध्यान धरत सकले अघ नाशें तम हिरदय मिट जाई ।।
परम कृपा पद साधन मेरे भक्ति-ज्ञान वर दाई ।
'ललितलड़ैती' युगल माधुरी दें तुरन्त दरसाई ।।

(१३)

बन्दौं श्री पग सुरपतिभानु ।
युगललाल पङ्कज पद-मधुकर प्रेम भक्ति करुणा रस खानु ।।
कवि कुलभूषण सन्त शिरोमणि ज्ञान-विरति-गुणशील निधानु ।
'श्मामदास' कुल-कुमुद-कलानिधि दीजे युगल चरण रति दानु ।।

(१४)

वन्दौं पद श्रीरघुपति दास ।
सरल स्वभाव शील गुण सागर युगललाल पद सहज हुलास ।।
सन्त सेवि व्रजनिष्ठ रसिक मति नामगान सेवा सुखरास ।
'श्यामदास' पितु, वंश-विभूषण, पायो चरणकृपा व्रजवास ।।

(१५)

जय श्रीरूप महारस-सागर ।
दर्शन परशन वचन रसायन, आनन्दहू के सागर ।।
अति गम्भीर धीर करुणामय, प्रेम भक्ति के आगर ।
उज्ज्वल-प्रेम महामणि प्रकटित देश गौड़ वैरागर ।।
सद्‌गुण मण्डित पण्डित रञ्जन वृन्दावन निज नागर ।
कीरति विमल सुयश तेंहि 'माधो' सतत् रहहु हिये जागर ।।

(१६)

जो कलि रूप शरीर न धारत ।
तो ब्रज भूतल प्रेम महानिधि कौन कपाट उघारत ।।
नीर क्षीर हंस पान विधायन कौन पृथक् करि पारत ।
को सब त्यजि अरु भजि वृन्दावन बहु निधि ग्रंथ विचारत ।।
जब रितु बनफल फूलत नाना विविध राज अरविन्द ।
सो मधुकर बिन पान को जानत विद्यमान कर बन्ध ।।
को जानत मथुरा वृन्दावन, को जानत ब्रजरीति ।
को जानत राधा-माधव-रति, को जानत सोई प्रीति ।।
जाकर चरण प्रसाद सकल जन गाय गाय सुख पावत ।
चरणकमल शरणागत 'माधो' तुव महिमा उर लावत ।।

(१७)

बन्दौं चरण श्रीषड़् गोसाईं ।
श्रीमद् रूपसनातन जीवहिं युग-रघुनाथ गोपाल सदाईं ।।
श्रीचैतन्यदेव प्रिय पार्षद् प्रेम भक्ति रसखानि सुहाई ।
श्रीवृन्दावन प्रगट कियो जिन राधाकृष्ण रस केलि बताईं ।।
ब्रज अनुराग तत्व के ज्ञाता वीतराग मूरति सुघराईं ।
'श्यामदास' हित भक्ति कल्पतरु त्रिविध ताप भव त्रास नसाईं ।।

❀ श्रीनाम-माधुरी ❀

(१८)

राम कृष्ण गोपाल दामोदर हरि माधव श्रीमधुसूदन।
कीलोमर्दन कंस निकन्दन देवकीनन्दन त्वं शरणम् ॥
चक्रपाणि नृसिंह महीधर जलशायी मङ्गलकरणं।
एते नाम जपो निसिबासर जन्म-जन्म के भय हरणम् ॥

(१९)

हरिजन सुमिरौ उर हरिनाम।
हरि को नाम सकल मङ्गलनिधि पावत जन विश्राम ॥
हरिजन निकट काल नहीं आवै हरिजन पूरण काम।
हरिजन 'इन्द्र' विमान बैठि कर जांए अन्त हरिधाम ॥

(२०)

रटत रटत राधामन-मोहन अपनौं जनम बितावैंगे।
लिखत-लिखत लीला रस दम्पत्ति नैनन नीर बहावैंगे ॥
सुनत-सुनत गुण छली छबीली निशिदन प्रेम बढ़ावैंगे।
'ललितलड़ैती' अचल बास ब्रज ऐसे दिन कब आवैंगे ॥

(२१)

युगलनाम रसना रट मनुवा यही केलि में धन तेरो।
अनत कहां भटकत तू डोले कर श्रीबनहिं बसेरो ॥
टूक मांगि कै उदर जो भरलै कहा मान यह मेरो।
'ललितलड़ैती' चरण शरण रहु जासो होय निबेरो ॥

(२२)

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥

सब वेदों का ज्ञान यही है, योग यज्ञ जप ध्यान यही है ।
सन्तों का उपदेश यही है, जीवन का उद्देश्य यही है ।।हरे
भक्तों का धन धाम यही है,सुख सम्पत्ति विश्राम यही है ।
सब दुखों की जड़ी यही है, सञ्जीवनि सुखभरी यही है ।।हरे
शङ्कर का आधार यही है, नारद की झङ्कार यही है ।
सब विद्या का सार यही है, सर्व शास्त्र परचार यही है ।।हरे
सब साधन का अर्थ यही है,सबका परम पुरुषार्थ यही है ।
निर्धन का धन प्राण यही है,निर्बल का बल मान यही है।।हरे
गोपियों का सद्पन्थ यही है, प्रेमियों का सद्ग्रन्थ यही है ।
कर्म और सतधर्म यही है, सद्ग्रन्थों का मर्म यही है ।।हरे
भागवत का व्याख्यान यही है,गीता का सद्ज्ञान यही है ।
मोक्ष-धर्म-वित काम यही है, 'श्याम'का कृष्ण और राम यही है ।

(२३)

जापै चढ़ै नाम रस रङ्ग ।
सदा फिरै अलमस्त दीवानो डुब्यो प्रेम रस गङ्ग ।।
गावै नाचै रोवै हंसै पुनि मतवारन के ढङ्ग ।
हरि को नाम सकल अघनाशक हरत विषय जग सङ्ग ।।
धन्य श्री गुरु जिन नाम सुनायो कीन्हीं कृपा अभङ्ग ।
'श्यामदास' हरिनाम प्रेम प्रद करुणानिधि गौराङ्ग ।।

(२४)

प्राणी राम नाम गुण गाले ।
नरतन चोला, परम अमोला, विषयन काहे अकारथ खोवै ।
राधेश्याम भज सीताराम भज, जीवन मुक्त बनाले ॥
या तन का कहो कौन भरोसा, प्राण पखेरू आवै न आवै ।
स्वांस स्वांस रट राधेकृष्ण, यम की भीति मिटाले ॥
कलियुग केरो यही धन तेरो, और न साधन होत निबेरो ।
कलियुग केवल नाम अधारा, साधन यही कमाले ॥
प्रेम से गाले क्यों शरमावै, पाप करम तोहे लाज न आवै ।
पागल बन जा गाले रोले, जग की लाज छुड़ाले ॥
पतितन पावन पाप नशावन, पतित उद्धारी कलिमलहारी ।
ऊठत बैठत 'श्याम' राम भज, जो चाहै सो पाले ॥

(२५)

जो सुख होत गोपालहिं गाये ।
सो नहिं होत किये जप तप के कोटिक तीर्थ नहाये ॥
दिये लेत नहिं चारि पदारथ चरण कमल चित लाये ।
तीन लोक तृण सम करि लेखत नन्दनन्दन उर आये ॥
बंशीवट वृन्दावन यमुना तजि, वैकुण्ठ को जाये ?
'सूरदास' हरि को सुमिरन करि, बहुरि न भव जलि आये ॥

(२६)

रे मन कृष्ण नाम कहि लीजै ।
गुरु के वचन अटल करि मानो साधु समागम कीजै ॥

पढ़िये गुनिये भगति भागवत और कहा कथि कीजै ।
कृष्ण नाम बिनु जनम बादिहि बिरथा काहे जीजै ॥
कृष्णनाम रस बह्यो जात है तृषावन्त ह्वै पीजै ।
'सूरदास' हरि सरन ताकिये जनम सफल कर लीजै ॥

(२७)

जो तू राम नाम चित्त धरतौ ।
अब को जन्म आगिलो तेरो दोऊ जन्म सुधरतौ ॥
जम को त्रास सबहि मिटि जातो भक्त नाम तेरो पड़तौ ।
तन्दुल धरत संवारि श्याम को सन्त परोसौ करतौ ॥
होतो नफा साधु की सङ्गति मूल गांठ ते टरतौ ।
'सूरदास' बैकुण्ठ पैठ में कोऊ न फेंट पकड़तौ ॥

(२८)

अब मन कृष्ण कृष्ण कहि लीजै ।
कृष्ण कृष्ण कहि कहिके जग में साधु समागम कीजै ॥
कृष्ण नाम की माला लैके कृष्ण नाम चित दीजै ।
कृष्ण-नाम अमृत रस रसना तृषावन्त ह्वै पीजै ॥
कृष्ण नाम है सार जगत में कृष्ण हेतु तन छीजै ।
'रूपकुँवरि' धरि ध्यान कृष्ण को कृष्ण कृष्ण कहि लीजै ॥

(२९)

परम धन राधानाम अधार ।
जाहि श्याम मुरली में टेरत सुमिरत बारम्बार ॥
जन्त्र मन्त्र और वेद तन्त्र में सबै तारको तार ।

श्रीशुक प्रकट कियौ नहीं यातै जानि सार को सार ।।
कोटि रूप धरैं नन्दनन्दन तऊ न पायो पार ।
'व्यासदास' अब प्रगट बखानत डारि भार में भार ।।

(३०)

राम जपु राम जपु, राम जपु बावरे ।
घोर भव नीरनिधि नाम निज नाव रे ।।
एक ही साधन सब रिद्धि सिद्धि साधि रे ।
ग्रसे कलि रोग जोग सञ्जम समाधि रे ।।
भलो जो है पोच जो है दाहिनो जो बाम रे ।
राम नाम ही सों अन्त सबही को काम रे ।।
जग नभ बाटिका रही है फलि फूल रे ।
धुवां कैसे धौरहर देखि तू न भूल रे ।।
राम नाम छाड़ि जो भरोसो करै और रे ।
'तुलसी' परोसो त्यागि मांगै कूर कौर रे ।।

(३१)

भरोसो जाहि दूसरो सो करो ।
मोकों तो राम को नाम कल्प तरु कलि कल्यान फरो ।।
करम उपासन ज्ञान वेद मत सो सब भांति खरो ।
मोंहि तो सावन के अन्धहि ज्यों सूझत हरो हरो ।।
चाटत रहेऊँ स्वान पातरि ज्यों कबहुँ न पेट भरो ।
सो हौं सुमिरत नाम सुधारस पेखत परुसि धरो ।।
स्वारथ औ परमारथहू को, नहीं कुञ्जरो नरो ।

सुनियत सेतु पयोधि पषानन्हि करि कपि कटक तरो ॥
प्रीति प्रीति जहां जाकि तहँ ताको काज सरो।
मेरे तो माय बाप दोऊ आखर हौं सिसु अरनि अरो ॥
सङ्कर साखि जो राखि कहऊँ कछु तौ जरि जीह गरो।
अपनो भलो राम नाम होते 'तुलसिहि' समुझि परो ॥

(३२)

भजो रे भैया राम गोविन्द हरी।
जप तप साधन कछु नहिं लागत, खरचत नहीं दमरी ॥
सन्तति सम्पति सुख के कारण जासो भूल पड़ी।
कहत 'कबीरा' राम न जा मुख, ता मुख धूल भरी ॥

(३३)

तू तो राम सुमर जग लड़वा दे।
कोरो कागज काली स्याही, लिखत पढ़त वाको पढ़वादे ॥
हाथी चलत है अपनी गति में कुतर झुकत वाको झुकवादे।
कहत 'कबीर' सुनो भई साधो नरक पचत वाको पचवादे ॥

रूप माधुरी

(३४)

रूप अनूप मुकुट मणि रसिकन गुण निधान छबिखान रसीले।
सुन्दर वरण कमलदल लोचन हरत मैन मन हरषीले ॥
मुकट चन्द्रिका मणी लसत सिर छुटी श्याम लट घुंघरारी।

कुण्डल झाईं परत कपोलन झलक देत अद्भुत प्यारी ॥
दसन पांति ज्यौं मुतियन की लरि शरद शशी मुख गिरधारी ।
मृदु मुस्कान मनोहर चितवन वय किशोर भोरी भारी ॥
करत बाल क्रीड़ा नाना विध श्याम रसिकवर छैल छबीले ।
सुन्दर वरण कमलदल लोचन हरत मैन मन हरषीले ॥
शुक नासा भौं दूज चन्द सम भाल सुन्दर सोहै बनमाली ।
चारू चिबुक कण्ठ शोभा नई अधर पान रच रही लाली ॥
नर्म कटी पद-पङ्कज कोमल चलत हंसवत चाल निराली ।
कटि किङ्किनि झनकार होत जब देह दशा विसरत आली ॥
ब्रज युवतिन दृग अञ्जन रसवस भवन भवन दधि गटकीले ।
सुन्दर वरण कमलदल लोचन हरत मैन मन हरषीले ॥
पहिरें भूषण वसन अमोलिक कर सरोज मेंहदी सों लाल ।
शर्द रैन रस रास करें गावें विलास के अद्भुत ख्याल ॥
नृत्य करत धुनि होत नूपुरन अधर बजावत वेणु रसाल ।
कोटि काम वारूँ या छबि पै लेऊँ बलैयाँ मदन गोपाल ॥
कुञ्ज कुञ्ज वृन्दावन विहरतै 'ललितलड़ैती' रसिक रसीले ।
सुन्दर वरण कमलदल लोचन हरत मैन मन हरषीले ॥

(३५)

पिया तेरी चितवन में कछु टोना ।
तन मन विसरि गयो तबही तें देख्यो श्याम सलोना ॥
ढिग रहिवे कूँ होत विकल मन भावत नाँहि भौना ।
लोक चबाब करत घर-घर में धर रहि जिये मौना ॥

छूटी लोक-लाज गृह-तन की और कहा अब होना।
रसिक प्रीतम की बानिक निरखत भूल गई ग्रह गौना॥

(३६)

इस नन्द के फरजन्द की यह अजब परी है बान।
भृकुटी कमान नवाय मारे बान नयनन तान॥
चीरा बँधे है जरकसी सिर पेच रत्न हीरान।
तिरछा मुकुट धरे सीस पै कुण्डल झलकते कान॥
गज मुक्ता लटके नासिका मुख सोहै बीरा पान।
चितवन है जाकी सेल सम बच सके कौन सुजान॥
घुंघरावली अलकावली की बदन पै बिथुरान।
धनि पलक 'ललितलड़ैती' यह, कहा जिये कल्प समान॥

(३७)

जयति श्री राधिके सकलगुण साधिके,
तरुनि मनि नित्य नव तन किशोरी।
कृष्णतनु लीन मन रूपकी चातकी,
कृष्ण मुख हिमकिरन की चकोरी॥
कृष्णदृग भृङ्ग विश्राम हित पद्मिनी,
कृष्णदृग मृगज बन्धन सुडोरी।
कृष्ण अनुराग मकरन्द की मधुकरी,
कृष्ण गुणगान रस सिन्धु बोरी॥
विमुख पर चित्त ते चित्त जाको सदा,
करत निज नाह की चित्त चोरी।

प्रकृति यह 'गदाधर' कहत कैसे बनै,
अमित महिमा इतै बुद्धि थोरी ॥

(३८)

मूरति मुहनियां राधिकाजू की ।
सुन्दर वसन अङ्ग सब राजति, विहसति वदन मृदुल मुसकनियाँ॥
शीश चन्द्रिका बीज धूलयुत कर्णफूल बेसर लटकनियाँ ।
कण्ठ कण्ठ श्री मुक्तन माला, हार जटित नव लाल रतनियाँ॥
बाजू बाजू बटा अजूबा लटकना पहुँची रतन धकनियाँ ।
क्षुद्र घण्टिका राजत मणिमय कर किंकिण बाजत झनकनियाँ ॥
अनवट बिछिया आदि दसांगुर पट युग पायजेब पैजनियाँ ।
'रूपकुंवरि महारानी' चेरी, मातु ! भक्ति दे अचल अपनियाँ॥

(३९)

श्रीराधा रूप-लावण्य की बन्या ।
सुन्दर स्निग्ध सुवर्ण सुगोरी कृष्ण कामिनि कीर्ति-कन्या ॥
नव यौवन प्रति अङ्गहि अद्‌भुत करत प्रकाश सुभङ्गि अगन्या ।
श्यामचन्द्र रसराज मिलन हित उमड़त प्रीति तरङ्ग अनन्या॥
रूप-स्वान्ति के चातक नयना, तकत कुञ्ज पथ वृन्दारण्या ।
कब लखि हैं छबि भामिनि स्वामिनि'ललितविहारिणि'नामसुधन्या

(४०)

श्रीराधाजी के चरण अति नीके ।
सुन्दर सरस सरोरुह सोभित स्याम-हृदय सरसी के ॥
जीवन मूरि रसिक-चतुरानन, मधु मुनिवृन्द अली के ।

'ललित बिहारिणि' ललितबिहारी हार शृङ्गार सुही के

(४१)

धन्य धन्य राधिका के चरण ।
सुभग शीतल अति सुकोमल कमल के से वरण ॥
परम मङ्गल मोदकारी विरह सागर तरण ।
'दास परमानन्द' छिन-छिन श्याम जिनकी शरण ॥

(४२)

हमारी सखी, श्रीराधा-माधव जोरी ।
सजल घटा सम स्याम माधुरी, प्यारी विज्जुत गोरी ॥
एक प्रान द्वै देह, अलौकिक रूप रसामृत घोरी ।
गलबांही दै चलत परस्पर सखी यूथ दोऊ ओरी ॥
अङ्ग अङ्ग आभूषन राजत, लाजत मदन करोरी ।
मृदु मुस्कान वैन रस सागर, नागर नवल किसोरी ॥
वरसत सुधा नैन छबि निरखत, चतुर सिरोमनि भोरी ।
'मधुदासी' हांसी पर सरवस, न्यौछावर करि चोरी ॥

(४३)

अनूपम माधुरी जोड़ी हमारे श्याम-श्यामा की ।
रसीली रसभरी अखियां हमारे श्याम-श्यामा की ॥
कटोली भौं अदा बांकी सुघर सूरत मधुर बतियां ।
लटक गरदन की मन बसियां हमारे श्याम-श्यामा की ॥
मुकुट और चन्द्रिका माथे अधर पर पान की लाली ।
अहो कैसी भली छबि है हमारे श्याम-श्यामा की ॥

परस्पर मिलके जब बिहरें वे वृन्दावन की कुञ्जन में।
नहीं वरनत बने शोभा हमारे श्याम-श्यामा की॥
नहीं कुछ लालसा धन की नहीं निर्वाण की इच्छा।
'सखी श्यामा' को दें दरशन दया हो श्याम-श्यामा की॥

(४४)

रसिक रसीले लाडिली-लाल।
छैल छबीले गुन गरबीले भावत पटु पिक-बैन रसाल॥
रङ्ग रङ्गीले अति चटकीले पीवत अधर सुधा रस-पाल॥
मदन मत्त मद मुदित न जानत बीतत कित सरवरि अनुकाल।
'प्रिया सखी' हिय चाव चौगुनो, छिन-छिन होत विशुद्ध बिशाल॥

(४५)

हमारे श्रीराधा-माधव प्यारे।
श्रीराधा वृषभानु नन्दिनी, माधव नन्द दुलारे॥
कोटि कोटि कन्दर्प दर्प हर, मधुर माधुरी ढारे।
जहां-जहां नैन जात छबि निरखत, रास बिहार विहारे॥
उपमा नाहीं कोऊ इन की जग, अनुपम छटा सिगारे।
'मधुदासी' सुखरासी दम्पति, सम्पति सरवस वारे॥

(४६)

देखो री या मुकुट की लटकन।
निरतत रास लिये राधा सङ्ग वैजन्ती वेसर की अटकन॥
पीताम्बर छुटि जात छिनै छिन नूपुर शब्द पायन की पटकन।
'सूरश्याम' की या छबि ऊपर झूँठो ज्ञान योग को भटकन॥

(४७)

युगल छबि कुञ्ज महल अति बाढ़ी ।
प्रीतम अङ्ग पीत पट सोहै प्रिया नील नव साड़ी।
घन दामिनि मनु भूतल बिहरैं द्रुम बेलिन की आड़ी।
दोऊ मिलि बदन परस्पर निरखत अंशु मेलि भुजडारी।
'केलि सखी' कछु कौतुक अद्भुत देखि चकित रही ठाड़ी।

(४८)

छबि आवन मोहनलाल की ।
काछिनी काछे कलित मुरलि कर, पीत पिछोरी साल की।
बङ्क तिलक केसर कौ कीनें दुति मानों बिधु बाल की।
बिसरत नांहि सखी ! मो मन ते,चितवनि नयन बिसाल की।
नीकी हंसनि अधर सुधरनि की,छबि छीनी सुमन गुलाल की।
जलसों डारि दियो पुरइन पर, डोलनि मुक्ता माल की।
आप मोल विन मोलनि डोलनि, बोलनि मदनगोपाल की।
यह स्वरूप निरखै सोइ जानै या 'रहीम' के हाल की।

(४९)

कमल दल नैननि की उनमानि ।
बिसरत नांहि सखी ! मो मन तैं मन्द मन्द मुसुकानि।
वह दसननि-दुति चपलाहू तें महाचपल चमकानि।
वसुधा की वस करी मधुरता सुधा पगी बतरानि।
चढ़ी रहै चित्त उर बिसाल की मुकत माल थहरानि।
नृत्य समय पीताम्बर हू की फहरि फहरि फहरानि।

अनुदिन श्रीवृन्दाबन ब्रजते आवन आवन जानि ।
अब 'रहीम' चितते न टरति हैं, सकल स्याम की बानि ॥

(५०)

मोहन के अति नयन नुकीले ।
निकसे जात पार हियरा के निरखत निपट गसीले ॥
ना जानौं बेधुन अंनियनि की तीन लोक ते न्यारी ।
ज्यों ज्यों छिदत मिठास हिये में सुख लागत सुकुमारी ॥
जब सों जमुना कूल बिलोक्यौ सब निसि नींद न आवै ।
उठत मरोर बङ्क चितवनियां उर उतपात मचावै ॥
'ललित किशोरी' आज मिलैं जहं ना कुलकान बिचारौं ।
आग लगै यह लाज निगोड़ी, दृग भरि स्याम निहारौं ॥

❀ श्रीगौराङ्ग-माधुरी ❀

(५१)

मङ्गल जय श्री गौर किसोर ।
मङ्गल श्री वृन्दावन-भूषण, राधाभाव रसिक-रसबोर ॥
नित्यानन्द अद्वैत गदाधर, श्रीवासादि चतुर चितचोर ।
मङ्गल महाभाव-भावित-तन, रूप-सनातन हिये हिलोर ॥

(५२)

श्री गौराङ्ग प्रान-आधार ।
षोड़स कलापूर्ण पुरुषोत्तम, प्रगट भये नदिया रसधार ॥
कलि पावन हरिनाम दान करि, पतितन कौ कीनौ उद्धार ।

नित्यानन्द अद्वैत गदाधर, श्री वासादि रसिक प्रतिपार
रूप सनातन भट्ट जीव रघु, रामराय पारषद सुखसार
भव रोगन के वैद यही सब, औषध बांटी विविध प्रकार
दसौ दिसा के दीन हीन जन, इन अनुरागिनि दीने तार
'राधा प्रिया' श्रीराधामाधव, एक रूप अनुपम विस्तार

(५३)

श्री चैतन्य हाथ निरवाह ।
प्रभु हौं भव सिन्धु बूड़त तरल तरङ्ग प्रवाह ॥
उरग मीन विसाल कच्छप नक्र चक्र कराल ।
त्रिविध ताप अति दुसह बड़वा जरत नेह रसाल ॥
विषय विष सम विषम मादक मोह माल अमन्द ।
भ्रमर भ्रम तम तुहिन राका गौर मुख श्रीचन्द ॥
नाम पोत अधार तेरे तरे जेते पार ।
'दास' पै अब कृपा कीजै मिटै दुख अपार ॥

(५४)

महाप्रभु ! तुम परम उदार ।
अद्भुत रीति तुम्हारी देखी, पतितन के तुम अति रिझवार ।
याही आसा लागि रह्यौ हूँ, और न कछू मोर आधार ।
'जगन्नाथ' प्रभु किरपा कीजै प्रेम दान विस्तार ॥

(५५)

श्री चैतन्य दयानिधि धीर ।
कलि कालीन मलीन दीन जन पावन करन परम गम्भीर ॥

पूरन चन्द नन्दनन्दन कौ उदै सदा उमगन की भीर ।
बोहित नाव चढ़ाये बहु जन प्रेम मगन करि पठये तीर ।।
भाव तरंग अभंग भंग गति, महा मधुर रसरूप शरीर ।
निज जन रतन जाल युत राजत,धुनि हुङ्कार उसांस समीर ।।
त्रिविध ताप तें जरे जीव जे, सीतल किये परस पद नोर ।
करुणा दृष्टि वृष्टि सों सींचे जय जय जय 'आनन्द मुदीर' ।।

(५६)

निज कृष्ण भए गौरांग महाप्रभु भाव राधिका लीनौ री ।
दर्पन में अवलोकि अपन छबि कुंवर मनोरथ कीनौ री ।।
ए विधि आस्वाद करैं अपनौ सुख परहित में चित्त दीनौ री ।
'श्री गोपालदास' प्रभु प्रगटे, प्रेम सुधा रस भीनौ री ।।

(५७)

रास मण्डल बने नृत्य नीकी बनी ।
गौर गोविन्द के नैन अरविन्द सूं,
छूटत आनन्द मकरन्द चहुं दिसि घनी ।।
ताल बस मृदु चरण धरत धरनी,
हुलसि विलस हस्तक भेद चलत लोयन अनी ।
पुलक सब देह घन कम्प भरि थहरानि,
परसत प्रस्वेद सुरभेद भारी बनी ।।
निपट अवसन्न जब तबहिं छिति झुकि परत,
अङ्ग नहिं हलत गत स्वास की निगमनी ।।
ता समै जगत में जीव जेतिक बसत,

प्रेम आनन्द के होत सब ही धनी ॥
चहत सब पारषद सब्द मुख मे मिलत,
लगी टकटकी यह सुख 'मनोहर' भनी ॥

(५८)

हम तो श्री गौराङ्ग उपासी ।
आनन्दनिधि करुणानिधि रसनिधि प्रगटे विपिन विलासी ॥
रसिक विहारिणि अपु वपु धार्यौ लिये महाभाव सुरासी ।
रसिक शिरोमणि रूप सनातन तहां नित करत खवासी ॥
महा माधुरी प्रगटित छिन छिन भक्तन के सुखरासी ।
'श्रीबन विहारिन' दासी के हित विहरत निकुञ्ज निवासी ॥

(५९)

श्री गौरचन्द्र कलि के आधार ।
उदित निरखि जिन करुणा-सागर ह्वै स्वतंत्र उमड़्यो अपार ॥
अनायास भए धन्य चराचर, जय कलि पावन प्रेमावतार ।
सुरमुनि दुर्लभ प्रेमभक्तिमणि दियो दान सब हित अविचार ॥
तृष्णा-ताप-अज्ञान तिमिर हर, भक्त कुमुद जन-प्राणाधार ।
'श्यामदास' भवतप्त हृदयथल, करहु श्रीनाम सुधा सञ्चार ॥

(६०)

कहो रे भैया ! कहां गए गौर-निताई ।
कलियुग के जीवन तारन हित, जो प्रगटे कलि आई ॥
जानि सुअवसर मैं कलि जन्मयो, खोजत कहुँ न पाये ।
या कलि में प्रगटे सुनि आयो, कोई तो उन्हें मिलाये ॥
सुन्यो भक्ति कल्पतरु रोप्यो, फल्यो प्रेम फल पाये ।

परम दयालु गौर माली ने सो फल खाये खवाये ॥
मांगे बिन मांगे फल दीन्हें, देश विदेश पठाये ।
भरि भरि झोली घर घर बांटे, मेरे घर नहिं आये ॥
पाय प्रेम फल सभी धन्य भए, नर पशु पक्षि पतङ्गा ।
सबने जनम सफल कर पायो, बही प्रेम की गङ्गा ॥
ऐसी भूल भयी कहा मेरी, मो पर चित्त न कीन्हों ।
'श्यामदास' प्रेम के दाता, प्रेम भिखारी चीन्हों ॥

(६१)

अब तो हरिनाम लौ लागी ।
सब जग को यह माखन चोरा, नाम धरयो वैरागी ॥
कित छोड़ी वह मोहन मुरली, कित छोड़ीं सब गोपी ॥
मूंड़ मुड़ाई डोरी कटि बांधी, माथे मोहन टोपी ॥
मात जसोमति माखन कारन, बांधै जाके पांव ।
स्याम किशोर भयो नव गौरा, चैतन्य जाको नांव ॥
पीताम्बर को भाव दिखावै, कटि कोपीन कसै ।
गौरकृष्ण की दासी 'मीरा' रसना कृष्ण बसै ॥

❀ श्रीगौराङ्ग जन्म बधाई ❀

(६२)

नदिया में बधायो छायो है ।
प्रगटे श्री आनन्दकन्द प्रभु, सब को मन उमंगायो है ॥

हर्ष भरी नदिया की नारी गावत सुभग बधायो है।
हरि हरि बोलत गलियन डोलत प्रेम न हृदय समायो है॥
भक्ति गुलाल उड़त नदिया में प्रेम रङ्ग बरसायो है।
'सूरज' निरख मनोहर ललना, अपनो पनहिं भुलायो है॥

(६३)

नदिया नगर बधाई छाई।
इक तो होरी दिवस सहजहिं, सब के मन उमंगाई।
पुनि प्रगटे आनन्दकन्द प्रभु, उठे सकल हर्षाई॥
रहे सब अङ्ग पुलकाई ॥ नदिया० ॥
पुत्र जन्म सुनि श्रीमिश्रन घर, नर नारी उठि धाई।
हूला हूली देत परस्पर, गावत नवल बधाई॥
सकल सची ढिग आई ॥ नदिया० ॥
निरखि ललन छबि होत मगन सब, हर्ष हृदय न समाई।
कहत धन्य ऐसो सुत जायौ, सोभा कही न जाई॥
निरखि सत काम लजाई ॥ नदिया० ॥
देत असीस जियौ सुत तुम्हरो, जुग जुग लब सुखदाई।
'सूरज' सिर पर सदा विराजौ, तुमरै सुतपद छाई॥
कभी नहीं हो बिलगाई ॥ नदिया० ॥

(६४)

बधाई नीकी बाजत आज।
फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा तिथि को प्रगटे प्रभु सुख साज॥
सन्ध्या समय सुहावनि सुन्दर, बाजत साज अरु बाज।

जन्मे श्री चैतन्य महाप्रभु सन्तन के सिरताज ॥
आये रसिक सिमिट सब पुर के हिल मिल कियो समाज ।
नाचत प्रेम मुदित जय जय कहि, मेटि लोक कुल लाज ॥
केशर चन्दन छिरक परस्पर किये मन पूरन काज ।
'सरस-माधुरी' जुग जुग जीवो, गौर हरि महाराज ॥

(६५)

बाजत आज आनन्द बधाई ।
पद्मावती पुत्र जायो है नगर बधाई छाई ॥
हर्ष भरीं सब नारि नगर की देन बधावा आई ।
निरखि २ छबि नित्यानन्द की आनन्द उर उमगाई॥
प्रेम मगन पण्डित हाड़ाई फूले न अङ्ग समाई ।
विप्र बोलि मङ्गल विधि कीन्हीं चौके चारु पुराई॥
लगन बिचारि गुणी जब बोले मन ही मन मुसकाई।
यह तो करैं पतित को पावन देई हैं गति सुखदाई ॥
महापुरुष बलराम प्रतापी, सुनहु सबै मनलाई ।
'सूरज 'दीन हीन जन के हित,दया ध्वजा फहराई॥

❀ श्रीगौराङ्ग सेवा पद ❀

(६६)

जागहु श्री गौरदेव देववंद्य स्वामी ।
रवि की छबि प्रगट भई, ससि की सब कान्ति गई,
कोकिल कल कण्ठ छई गुणनिधि गजगामी ॥

सुखकर करुणानिधान, भक्तवृन्द परम प्रान,
दीजै निज भक्तिदान, नाथ गौरधामी ॥
मङ्गलमय तेजधार, अनुपम रसरासि सार,
भक्ति विभव के आगार, पूज्य धन्य नामी ॥
परिकर निज ले कृपाल, सङ्ग सुखद गौर लाल,
श्री श्री प्रभु 'चन्द्रलाल' उठहु हे अकामी ॥

(६७)

करहु हे गौरचन्द स्नान ।
सीतल जल निर्मल सों सुन्दर, सर्वस कृपा निधान ।
अतर गुलाब आब सों सुखकर, परम रम्य सुरमान ॥
श्री नित्यानन्द महाप्रभु सङ्ग, मुदित प्रेम धीमान ।
श्री प्रभु 'चन्द्रगोपाल' सचीसुत, निज जन जीवन प्रान ॥

(६८)

भोजन करत सची-सुत सब रस ।
मधुर मधुर रस खीर मुदित अति, परिकर के हैं सोहैं स
सची मात रस कौर देत मुख, पावत प्रेम भरे गत आल
दूध पान करि करि हंस सब जन, बासोंदी रुचि राजे रति
श्री प्रभु 'चन्द्रगोपाल' अलौकिक, भोग धरचो श्रीगौर पूर्ण

(६९)

जुगलवर क्रीड़त जमुना तीर ।
श्रीगौराङ्ग गदाधर मिलि मिलि, सुन्दर धीर समीर ॥
ललिता श्री स्वरूप दामोदर लाड़ भरे गम्भीर ।

गलबाहीं दै चलत महासुख परछाईं लखि नीर ॥
रामानन्द विसाखा बपु सों खेल खिलावत वीर ।
श्री प्रभु 'चन्द्र' भीर भौंरन की,बोलत कोकिल कीर ॥

(७०)

अरी अब कौन कुञ्ज के मांही ।
बिलसत गौर किसोर चोर चित्त, लियें दियें गलबाहीं ॥
बतरावत आवत जो पूछत, सो बतात जब नाहीं ।
अपनी अपनी बातन भूलीं, एक तान चित्त लाहीं ॥
मेलो मच्यौ डगर में दीसत, कोउ दरसन हित जाहीं ।
श्री प्रभु 'चन्द्र' कलिन्द सुता की, छटा छई परछाहीं ॥

(७१)

झूलत गौर निताई हिंडोरैं ।
सुरङ्ग हिंडोरे लचकत मचकत छबि को सिन्धु झकोरैं ॥
झोटा देत स्वरूप दामोदर,चहुँ दिसि भक्तगन करत किलोरैं।
श्री रूप सनातन 'वन विहारिन-बिहारी' को चित्त चोरैं ॥

(७२)

आरती कीजै श्री गौड़ेश्वर की ।
नित्यानन्द महाप्रभु राजत, प्यारे सची कुंवर की ।
कलि पावन अवतार धरन की,गजगति विश्वम्भर की ॥
श्रीराधा पद पद्म मत्त मन, मोद भरे मधुकर की ।
श्री प्रभु 'चन्द्रगोपाल' प्रेम सों प्रवर पञ्च परिकर की ॥

❀ श्रीवृन्दावन-माधुरी ❀

(७३)

श्रीबन धाम सबन तें नीकौं।
जाकी रज दुर्लभ ब्रह्मादिक सुर नर मुनि आदी कौं॥
केलि विहार परस्पर होवत श्याम-भानुनन्दनी कौं।
जो रस निरखि देव वधूगन कौं सुरपुर लागत फीकौं॥
जहं दूख द्वन्द रहत नहीं कोऊ सुख उपजत है जीकौं।
'ललितलड़ैती' होय वास किम बिन सेवै प्रिया—पी कौं॥

(७४)

जाऊं बाकी बलिहारी पावन ब्रजरज परसावै री।
कालिन्दी को दरस करावै शीतल जल अचवावैरी॥
गुण नहीं भूलों वाके राधा-माधव छबि छकावैरी।
'ललितलड़ैती' सो दृग, चन्दा जो मोंहि युगल मिलावै री॥

(७५)

श्री वृन्दावन यमुना कूलन विचरन की जिये आशा है।
ज्ञान गूदरी ज्ञानी-ध्यानी सन्तन रसिकन वासा है॥
वंशीवट तट नटनागर सङ्ग प्यारी केलि विलासा है।
'ललितलड़ैती' को मन मधुकर मुख-पङ्कज रस प्यासा है॥

(७६)

श्री वृन्दावन ध्याना हेली, श्रीवृन्दावन ध्याना है।
गौरश्याम चरणारविन्द सों अब अनुराग बढ़ाना है॥
रहौ प्राण कि जाओ सखी री नेम यही दृढ़ ठाना है।

"ललितलड़ैती" ऊठत बैठत युगल नाम-गुण-गाना है।

(७७)

वृन्दावन सुख लूटेंगे हम वृन्दावन सुख लूटेंगे।
ललित-लता कुञ्जन के नीचे रसिकन सूं जा जूटेंगे॥
छके रहैं छबि ललित माधुरी लीला गुण रस घूटेंगे।
"ललितलड़ैती" युगल प्रेम में नैन हिये के खूटेंगे॥

(७८)

हौं न भई ब्रज प्रगट अलीरी
छकी प्रेम रस युगल माधुरी निरखत दम्पत्ति कली-कली री॥
गौरश्याम ध्वनि पड़ती श्रवणन निशिदन विचरत कुञ्जगली री।
'ललितलड़ैती' तो मिलतो सुख जो होते मम भाग्य बली री॥

(७९)

करो कोई जैसे मन भावै हम तो दम्पत्ति शरण गही है।
नित्य-किशोर को जाप उपासन यह बाणी रसकिन जो कही है॥
वृन्दावन सेवाकुञ्ज श्यामा प्रीतम सङ्ग सुख विलस रही है।
'ललितलड़ैती' वसत तहां वे जिनपै उनकी कृपा भई है॥

(८०)

धनि भाग्य सखी वन खग मृग के
सुख निरखि श्याम सुख पावत हैं।
लोचन तिन सफल विहार समय,
लखि रूप लाल उर लावत हैं॥
सुर वधुअन ते उन भाग्य अधिक,

वंशी धुनि सुनि गुण गावत हैं।
अहो भाग्य विशाल उन गैयन के,
जिन आप गोपाल चरावत हैं॥
धनि भांति भांति के वन पक्षी,
बोलत पिया सुख उपजावत हैं।
धनि वे केशर छुटो अङ्ग श्याम,
जो अपने शीश चढ़ावत हैं॥
धनि धनि भाग्य गोवर्धन के,
जहां प्रीतम चरण छुआवत हैं।
कालिन्दी धनि जामें ब्रजपति,
नित्य जल विहार हित धावत हैं॥
धनि तरु श्याम जिन छैयां तरे,
अपनी तन तपत नसावत हैं।
हमहुँ धनि "ललितलड़ैती" मोहन,
निज छबि हमें दिखावत हैं॥

(८१)

धनि धनि श्री वृन्दावन धाम।
दिव्य लीला स्थल मनोहर अचल छबि अभिराम॥
चर-अचर कण कण अलौकिक सुषमा ललित ललाम।
भक्ति सम्पत्ति प्रेम भूपति मुक्ति रहत गुलाम॥
खगरो--मृग--नर कोट हर क्षण रटत राधा—नाम।
रसिक जीवन-प्राण जेहिं नित्य रमत श्यामा 'श्याम'॥

(८२)

पलकन सों रज झारूं श्रीबन की ।
विहरत युगललाल मिलि सुख सों-
मञ्जुल छाँहि निकुञ्ज सघन की ।
निर्मल नीर बहत यमुना को,
हरत त्रिविध पीड़ा जन मन की ।
शिव नारद अज सुर सनकादिक-
आस करत जित वास करन की ॥
भूरि भाग्य इन ब्रजवासिन के,
छके रहत छबि श्याम बदन की ।
"ललितविहारिणि" देहु कृपा कर--
ब्रजबसिबो नित शरण चरन की ॥

(८३)

चल मन वृन्दावन चल रहिये ।
परम पुनीत सो ब्रज की धरणि रज धरि शीश जनम-फल लहिये।
मञ्जुल सघन पुलिन यमुनातट सुन्दर पर्ण कुटी चलि छइये ।
सन्त टूक लहि पाय यमुना जल मिलि रसिकन राधागुण गइये।
विहरत आवहिं युगललाल जब मन की व्यथा कथा सब कहिये ।
'श्याम' कृपा ऐसी कब करिहो चलि वृन्दावन लौट न अइये ॥

(८४)

वृन्दाविपिन बनाऊँगी घर मैं तजि कै सब संसार ।
यह जीवन तब सुखमय होगा मिलि हैं नन्दकुमार ॥

कुञ्जगलिन विचरत डोलूंगी रसिकन टूक अधार।
'ललितविहारिणि" वेग बोलिए श्रीबन प्रेमागार ॥

(८५)

जब जब वृन्दावन सुधि आवत।
हृदयाकाश विरहघन उमड़त असुवन धार नैन भरि लावत
फड़क उठत प्रति रोम रोम तन मति बौरात जिया अकुलावत
श्रीब्रजरज पावन परसन हित कल न पड़त पल युगसम जाव
पड़ो रहत तन रहत जहां पर प्राण पखेरू कुञ्जन धावत
'ललितविहारिणि' जात न बस कछु अपनेहि भाग्य धुनत पछितावत

(८६)

पुनि कब ह्वै है कृपा घनेरी।
सुखदवास वृन्दावन केरो बांकी चितवन चितवौं तेरी।
दरस परस सत्संग श्रीहरि-गुरु, मिलि रसिकन ब्रज कुञ्जन फेरी
'ललितविहारिणि' ललित विहारी करि राखो व्रज चरणन चेरी

(८७)

मोहि किन देव कियो ब्रजवासी।
परसति युगललाल पद रेणु,
लोचत सुर सिद्ध मुनि कमला सी।
पावति लहति प्रेम प्रसाद निरन्तर,
निरखति पिया प्रीतम छबिरासी
मिलि रसिकन नित हरि गुण गावति,
तृणसम तोड़ति भव भय फांसी ॥

वृन्दावन सुख श्रीवृन्दावन तरसत,शिव—हरि—ब्रह्मपुरवासी ।
'ललितविहारिणि'' गनि पद पायिक,वेगहि कीजै महलखवासी ॥

(८८)

जगत में जागै जाको भाग ।
ताके हिये उपजत वृन्दावन दर्शन को अनुराग ॥
तृण सम तजै सकल सुख सम्पत्ति बाढ़े विषय-विराग ।
श्रीवनवास करन चित्त चाहत पाय अलोनो साग ।
'केलि सखि' घनश्याम कुञ्ज लखि बुझत बिरह की आग ॥

(८९)

जो कोउ वृन्दावन रस चाखै ।
भुवन चतुर्दश तिहूँ लोक को, स्वपनेहुं नहिं अभिलाखैं ॥
"ललितकिशोरी" पड़ा कौन में, श्यामा-राधिका भाखै ।
युगलरूप बिन पलक न खोलै, लोभ दिखावो लाखै ॥

(९०)

रे मन वृन्दाविपिन निहार ।
यद्यपि मिले कोटि चिन्तामणि तदपि न हाथ पसार ॥
विपिन राज सीमा के बाहर हरिहूं को न निहार ।
जय "श्रीभट्ट" धूर धूसर तन यह आशा उरधार ॥

(९१)

आली ! म्हाने लागे वृन्दावन नीको ।
घर घर तुलसी ठाकुर पूजा, दरसण गोविन्दजी को ॥
निरमल नीर बहत जमुना को, भोजन दूध--दही को ।

रतन सिंहासण आप विराजैं मुकुट धरयो तुलसी को।
कुञ्जन कुञ्जन फिरत राधिका शब्द सुनत मुरली को।
"मीरा" के प्रभु गिरधर नागर, भजन बिना नर फीको।

(६२)

ब्रजरज मोहिनी हम जानी।
मोहन कुञ्ज मोहन वृन्दावन मोहन यमुना पानी।
मोहन नारि सकल गोकुल की बोलत मोहिनी बानी।
"श्रीभट्ट" के प्रभु मोहन नागर मोहिनि राधा-रानी।

(६३)

वृन्दावन के राजा दोऊ श्याम राधिका रानी।
चारि पदारथ करत मजूरी मुक्ति भरैं जहां पानी।
कर्म धर्म दोऊ बटत जेवरी घर छाये ब्रह्मज्ञानी।
योगी यति तपी संन्यासी महिमा किनहु न जानी॥
पचिहारे वेद पुराण लगुनियां गावत सगुनियां बानी।
घर घर प्रेम भक्ति की महिमा सहचरि 'व्यास' बखानी॥

(६४)

श्रीराधाकुण्ड की बलि जैये।
सघन लतान वितान तनाये, गिरिवर सोभा पैये।
श्री गोविन्द नाम प्रभु पायौ, जनम जनम जस गैये॥
ऐरावत अप्सरा मानसी, गङ्ग धार सुख लैये।
दास जहां को वास सुहायो चक्रेश्वर छबि छैये॥
श्री गोवर्धन सघन तरहटी, लोटि लोटि हरसैये।

'श्रीराधा प्रिया' श्रीराधामाधव, सेवा रस में न्हैये ।।

अनुराग-माधुरी

(९५)

श्यामा श्याम लगन जिहिं लागै ।
नैनन नीर फुंवारे छूटैं मन दम्पति छबि पागै ।
हा राधा हा मोहन कहि मुख उठि कुञ्जन को भागै ।।
'ललित लड़ैती' छुट वृन्दावन अनत न कहुँ अनुरागै ।

(९६)

जापै चढ़ै युगल को रङ्ग ।
भूल जाए त्रिभुवन सुख पल में निरखत दम्पति अङ्ग ।।
तोरि कानि कुल फाड़े घूंघट नैन नीर सुर भङ्ग ।
"ललितलड़ैती" नाचै गावै मतवारन के ढङ्ग ।।

(९७)

नाचूं राधा--मोहन आगे नये नये दृगन के भाव बताऊं ।
ईमन भैरव राग केदारा झीनी स्वर सूं गाय सुनाऊं ।।
निरखि निरखि छबि युगल माधुरी नयनन नेह जलधार बहाऊं ।
श्री वृन्दावन बास निरन्तर "ललितलड़ैती" यह वर पाऊं ।।

(९८)

यमुना कूलन छांहि माधुरी युगलविहारी ठाढ़े हेरौं ।
मृदु मुस्कान मनोहर छबि लखि प्रेमधार जल नैनन गेरौं ।।
हाथ जोड़ि कछु करौं वीनती रसना श्याम-राधिका टेरौं ।

ललितलड़ैती'चरणन शिर धरि विरह जनित तनताप निवेरौ।

(९९)

अब न हमारो मन मानत मनाएँ नैक,
टेक करि बापुरो विवेक नखि लैन देहु।
कहै 'रतनाकर' सुधाकर सुधा कों धाइ,
तृषित चकोरनि अघाई चखि लैन देहु॥
सङ्क गुरु लोगन के बङ्क तकिबे की तजि,
अङ्क भरि सिगरौ कलङ्क सखि लैन देहु।
लाज कुल कानि के समाज पर गाज गेरि,
आज ब्रजराज की लुनाई लखि लैन देहु॥

(१००)

सुनो चित्तचोर छैल गिरधारी।
तबसों जिये चैन नहीं आवे सूरति देखि तिहारी॥
मदन गोपाल माधुरी मूरति मोह लई ब्रज सारी।
और न मानूं अनत न जाऊं एकहिं आस तिहारी॥
भलें हो ज चर्चा मेरी लिखी टरट नहीं टारी।
"ललितलड़ैती" को अपनावहु या छबि पै बलिहारी॥

(१०१)

अखियां नन्दनन्दन सो अटकीं।
इन पै चलत न कछु बस मेरो तजत न पल छिन भूलो भटकीं
मन्द हसन नयन बतरावनि, बङ्क विलोकिन छबि उर खटकीं
'ललितलड़ैती' रंगी श्याम रंग,ओट किए कहा घूंघट पटकी

(१०२)

मनमोहन छबि सदन बदन कौं एक बेर जिन हँसते देखा ।
ताको मन तजिके सुख त्रिभुवन बन कुञ्जन में धँसते देखा ।।
बरछी सी तिरछी चितवन सङ्ग बहुतों को हम फसते देखा ।
'ललितलड़ैती' रूप सिन्धु में गिरा कोऊ न निकसते देखा ।।

(१०३)

सखि ! मैं जबते निरखे श्याम, कछू न सुहावैरी ।
ऐसो सुन्दर रूप उजेरो, नाँहि कोऊ मैं त्रिभुवन हेरो,
फिर फिर मेरो चित्त उतही कों धावैरी ।।
वा बिन सब जग अन्धहि दीखै, सुख सम्पति गृह लागत फीके,
अब मेरे मन धीरज कौन बंधावैरी ।
तारे गिनत विहात न रज़नी, मानूंगी गुण अधिकही सजनी,
"ललितलड़ैती" जो तू वाहि मिलावैरी ।।

(१०४)

लगा प्रेम राधामोहन सों छुटा और नहीं भाती है ।
चूर हुआ दिल देखि ललित छबि पुनि पुनि वही सुहाती है ।।
भीतर बाहर द्वार पौर पै बांकी छबि दरसाती है ।
"ललितलड़ैती" रूप इश्क में पल छिन नींद न आती है ।।

(१०५)

लोक लाज यमुना में बहाई ।
नाम धरो चाहे देहु तानें कोटि उपाय करो समुदाई ।
यत्न अनेक किए नहीं छूटत प्रीति जासों जाकी जुरि आई ।।

'ललितलडैती'बस गए मो मन श्याम सलौने कुंवर कन्हाई।

(१०६)

हा हा चलत न कछू बस आली।
हौं तौ घनो चाहूँ न करूं सुधि, उरछाई मूरति बनमाली॥
कहा करौं वा सांवरिया ने बरछी सी चितवन उर साली।
'ललितलड़ैती'मिलिहौं सांवरो,नाम धरो चाहे देबहु गाली॥

(१०७)

किधौ दृगन में धाम श्याम री।
जित देखौं तितही वही दीखै, मोंहि सूझत नहीं पन्थ धाम री॥
निरखि हसन सुधि रही न तनक तन,मैं भई घायल ताहि याम री।
'ललितलड़ैती'जाने कियो कहा जी न लगत मेरो काहू काम री॥

(१०८)

भोरहीं जा मग निकस्यौ हैके रूप उजागर छैल छली री।
वा मग पै बलिहार जाऊं मैं पलकन झारूँ धूरि गली री॥
एक नजर त्रिभुवन मन मोहै, कौन चलाई मेरी चली री।
'ललितलड़ैती' बिनु देखे वा मो जियरा घबरावै अली री॥

(१०९)

श्याम दृगन की चोट सहे को।
जिन लागी तनही तन जानी पीड़ हिय-लगि कासों कहै को।
पल में होत सुजान बावरो विचरत वेकल भौन रहै को।
'ललितविहारिणि'नैन तीर लगि धीर धरै सो बीर अहै को।

(११०)

प्रेम सदन की कठिन गली री ।
कै जानत ब्रजचन्द्र सांवरो कै जानत वृषभानु लली री ॥
जग-कुल कानिहुं छोड़ अपनपन, चले शीश धरि हाथ तली री।
'ललितविहारिणि' बसै प्रेमपुर जो पावै उन कृपा भली री॥

(१११)

सोच समझ या मग पग धरना ।
यह मग प्रेम नाम कर बाजै, हांसी जान न धोके पड़ना ॥
या मग में पग वीर धरै सो, जो जाने जिये जीवत मरना ।
नैन नीर तन वेसुद्धि वेकल पागल हो दिन रैन विचरना ॥
हा प्रीतम हा प्रीतम रट मुख प्रेम भाव नित सेवन करना ।
चढ़ि के मोम तुरङ्ग अङ्ग पै 'श्याम' अनल में कूदि निकरना ॥

(११२)

मैं गिरधर आगे नाचूंगी ।
नाच नाच पिया रसिक रिझाऊं प्रेमीजन को जाचूंगी ॥
प्रेम प्रीति के बांधि घूंघरू सूरत की कछनी काछूंगी ।
लोक लाज कुल की मर्यादा यामें एक न राखूंगी ॥
पिव के पलङ्ग पर जा पौढ़ंगी 'मीरा' हरि रङ्ग राचूंगी ॥

(११३)

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई ।
जाके शिर मोर मुकुट मेरो पति सोई ॥
तात मात भ्रात बन्धु आपनो न कोई ।

छांड़ि दई कुलकी कानि कहा करिहै कोई ॥
सन्तन ढिग बैठि बैठि लोक लाज खोई ।
चुनरी के किये टूक ओढ़ लीन्ही लोई ॥
मोती मूंगे दिये उतार बनमाला पोई ।
अंसुअन जल सींच सींच प्रेमबेलि बोई ॥
अब तो बेलि फैल गई आनन्द फल होई ।
दूध की मथनियां बड़े प्रेम से बिलोई ॥
माखन जब काढ़ि लियो छाछ पिये कोई ।
भगति देखि राजी हुई जगत देखि रोई ॥
दासी 'मीरा' लाल गिरधर तारो अब मोई ॥

(११४)

या सांमरे सों मैं प्रीति लगाई ।
कुल कलङ्कते नाहिं डरूंगी, अब तो करूं अपने मनभाई ॥
बीच बाजार पुकार कहूँ मैं, चाहे करो तुम कोटि बुराई ।
लाज मर्याद मिली औरन कूं, मृदु मुसिक्यान मेरे बट आई ॥
बिन देखे मनमोहन को मुख, मोहि लगत त्रिभुवन दुखदाई ।
'नारायण' तिनकूं सब फीको, जिन चाखी यह रूप मिठाई ॥

(११५)

प्रीतम नूपुर मतिना उतरो ।
इनकी धुनि सुनि पार पड़ौसन कहा करैगी हमारो ॥
भलें होय जग चर्चा मेरी तुम निज प्रहीं टारो ।
'नारायण' जे शरण चरण की तिन्हें न कीजै न्यारो ॥

(११६)

प्रीति की रीति कौ पैंड़ोहि न्यारो ।
कै जानत वृषभानुनन्दनी, कै जानत यह कान्हर कारो ॥
सहजें प्रीति न होय सखी री,यह अपने मन सोच विचारो ॥
प्रेम पंथ को तो चलन बांकुरो,रसिक बिना को समझन वारो ।
'सूरदास' यह प्रीति कठिन है,सीस दिये भी न होत निभारो ॥

(११७)

मिलिवौ नयननहि को नीको ।
चारों नैन भये इकठौरें, धोको मिट गयो जी को ।
नन्द के लाल हमारे ठाकुर, और जगत सब फीको ॥
वेद पुराण भागवत गीता, गूढ़ ज्ञान सब ठीको ।
खट्टी छाछ नहिं रुचि आवै, "सूर" खवैया घी को ॥

(११८)

गोपी प्रेम की ध्वजा ।
जिनन गोपाल किए वश अपने उर धर श्याम भुजा ॥
शुक मुनि व्यास प्रशंसा कीन्हीं उद्धव सन्त सराहिं ।
भूरि भाग्य गोकुल की वनिता अति पुनीत जग माहिं ॥
कहा भयो जो विप्रकुल जन्म्यो सेवा सुमिरण नाहिं ।
श्वपच पुनीत "दास परमानन्द" जो हरि सन्मुख जाहिं ॥

(११९)

रसिक अनन्य हमारी जाति ।
कुलदेवी राधा बरसानो खेरौ, ब्रजवासिन सों पांति ॥

गोत गोपाल जनेऊ माला सिखा सिखण्डी हरि मन्दिर भा
हरिगुन नाम वेद ध्वनि सुनियत,मूंज पखावज कुस करता
साखा जमुना हरिलीला षटकरम प्रसाद प्रान धन रा
सेवाविधि निषेध जड़ सङ्गति, वृत्ति सदा वृन्दावन वा
स्मृति भागवत, कृष्ण नाम सन्ध्या तरपन गायत्री जा
बंसी रिषी जजमान कल्पतरु, 'व्यास' न देत असीस सरा

(१२०)

हमारौ मुरली वारो स्याम।
बिनु मुरली वनमाल चन्द्रिका, नहिं पहचानत नाम
गोप रूप वृन्दावन चारी, ब्रज जन पूरण काम
याही सों हित चित्त बढ़ौ नित,दिन दिन पलछिन याम
नन्दीसुर गोवरधन गोकुल बरसानों विश्राम
'नागरिदास' द्वारका मथुरा, इन सौं कैसो काम

(१२१)

गौरश्याम चरणारविन्द पर जिसको वीर मचलते दे
नैनबान मुस्कान सङ्ग फंसि फिर नहिं नैक सम्भलते देख
'ललितकिशोरी' युगल इश्क में ,बहुतों के घर घलते दे
डूबा प्रेमसिन्धु में कोई हमने नहीं उछलते देख

(१२२)

देखो री यह नन्द का छोरा बरछी मारे जाता है
बरछी सी तिरछी चितवन की पैनी छुरी चलाता है
हमको घायल देख बेदरदी मन्द मन्द मुस्काता है

'ललितकिशोरी' जखने जिगर पर नोन पुरी बुरकाता है ॥

(१२३)

श्याम श्याम श्याम रटत प्यारी आप ही श्याम भई ।
पूछत फिरत अपनी सखियन ते राधा कहां गई ॥
वृन्दावन वीथिन यमुना तट श्रीराधे श्रीराधे ।
सखी सङ्ग की यह छबि निरखत रही मौन सब साधे ॥
गरुवी प्रीति कहा न करावै, क्यों न होय गति ऐसी ।
कहै 'भगवान-हित' रामराय प्रभु लगन लगे जो जैसी ॥

(१२४)

जित देखौं तित श्याममयी है ।
श्याम कुञ्ज बन यमुना श्यामा, श्याम गगन घन घटा छई है॥
सब रङ्गन में श्याम भरो है, लोग कहत यह बात नई है ।
मैं बौरी कै लोगन ही की श्याम पुतरिया बदल गई है ॥
चन्द्रसार रविसार श्याम है दीप शिखा पर श्याम तई है ।
नीलकण्ठ को कण्ठ श्याम है मृगमद श्याम काम बिजई है ॥
श्रुति को अक्षर श्याम देखियत मनो श्यामता बेलि बई है ।
नरदेवन की मोहर श्यामा अलख ब्रह्म छबि श्याम भई है ॥

(१२५)

ध्यान घनश्याम का दीवाना बना देता है ।
बागे दुनियां को भी वीराना बना देता है ॥
बिहार सांवले सरकार का, मेरे दिल को ।
कभी गोकुल, कभी बरसाना बना देता है ॥

शमाए इश्क ने तेरे, यूँ दिल किया रोशन।
दीनों दुखियों को परवाना बना देता है॥
बुत परस्ती का कड़ा शौक इसे कहते हैं।
सर जहां झुकता है बुतखाना बना देता है॥
प्रेम-प्याले जो पियें भर के वो अपनी जानें।
'बिन्दु' को बिन्दु ही मस्ताना बना देता है॥

(१२६)

सखी, हौं स्याम रङ्ग रङ्गी।
देखि बिकाय गई वह मूरति, सूरति मांझ पगी॥
सङ्ग हतौ सपुनें अपुनें पुनि सोइ गई रस भोय।
जागैहु आगे दृष्टि परै सखि, नैक न न्यारो होय॥
एक कन्हैया नैननि में निसि, द्यौस रह्यौ करि भौन।
गाय चरावन जात सुन्यौ सखि, सो धौं कन्हैया कौन॥
कासों कहौं कौन पतियाइ, मेरैं कौन करै बकबाद।
कैसे कै कह्यौ जात 'गदाधर' गूंगे को गुड़ स्वाद॥

(१२७)

कृपा की न होती जो आदत तुम्हारी।
तो सूनी ही रहती अदालत तुम्हारी॥
जो दीनों के दिल में जगह तुम न पाते।
तो किस दिलमें होती हिफाजत तुम्हारी॥
गरीबों की दुनियां है आबाद तुमसे।
गरीबों से है बादशाहत तुम्हारी॥

न मुलजिम ही होते, न तुम होते हाकिम ।
न घर घर में होती इबादत तुम्हारी ॥
तुम्हारी ही उल्फत के दृग 'बिन्दु' हैं यह ।
तुम्हें सौंपते हैं अमानत तुम्हारी ॥

(१२८)

कुछ अनोखा वह मेरा नन्द का लाला निकला ।
जिसकी उल्फत का हर इक लुत्फ निराला निकला ॥
क्यों न लेते वे भला इसको बड़े शौक के साथ ।
उनकी हम शक्ल मेरा दिल भी तो काला निकला ॥
इक नजर में लुटी, कुछ ऐसी मेरे दिल की दुकान ।
हर तरह ख्वाहिशे दुनियां का दिवाला निकला ॥
अपनी चितवन के निशानात जो देखे उसने ।
मेरा हर दागे जिगर नाज से पाला निकला ॥
श्याम-सुन्दर की न हो नजरे इनायत क्यूँ कर ।
जब कि दृग 'बिन्दु' भरा दर्द का प्याला निकला ॥

(१२९)

कन्हैया को इक रोज रोकर पुकारा ।
कहा उनसे जैसा हूँ अब हूँ तुम्हारा ।
वे बोले कि साधन किये तूने क्या हैं ?
मैं बोला 'किसे तूने साधन से तारा" ॥
वे बोले 'न दुनियां में आकर क्रिया कुछ' ।
मैं बोला कि 'मत भेजना फिर दुबारा' ॥

वे बोले परेशाँ हूँ तेरी बहस से ।
मैं बोला 'ये कहदो—तू जीता मैं हारा' ॥
वे बोले कि जरिया तेरा क्या है मुझ तक ?
मैं बोला कि दृग 'बिन्दु' का है सहारा ॥

(१३०)

ऐ श्याम मेरे दिल को वह मर्ज लगा देना ।
हो दर्द तेरा जिसमें और कुछ न दवा देना ॥
एक दिन तो मिलेंगे ही बोलेंगे हँसेंगे ही ।
इस ख्वाबे तमन्ना से हरगिज न जगा देना ॥
हम तेरे तसब्बुर में बेहोश हैं पागल हैं ।
दिखला के कहीं सूरत कुछ होश न ला देना ॥
मिलने की जो मुझसे है लौ दिल में लगी बेहद ।
मिलकर न कहीं उसकी बुनियाद मिटा देना ॥
ऐ यादे जुदाई तू इन आंखों के परदे पर ।
हर 'बिन्दु' को दिलवर की तसवीर बना देना ॥

(१३१)

रूठे हैं अगर श्याम तो उनको मनाये कौन ।
अपनी जो बनी शान है उसको घटाये कौन ॥
कुछ उनका भला होता तो करते भी खुशामद ।
अपनी गरज के वास्ते अहसाँ उठाये कौन ?
अब तक तो रहे दोस्त बराबर का था दावा ।
अब फर्जे वन्दगी की शरायत निभाये कौन ?

माना कि जान उनकी है, लेंगे वही आखिर।
पर बनके खतावार ये गर्दन झुकाये कौन ?
गर कद्र करें वे तो ये दृग 'बिन्दु' नजर हैं।
वरना फिजूल खाक में मोती मिलाये कौन ?

(१३२)

दुनियां तो क्या ? अपनी ही हस्ती को भुला बैठे।
जिस दिन से लगन अपनी मोहन से लगा बैठे॥
हम मर मिटें फिर क्योंकर उनकी न नजर कुछ हो।
इस शजरे मुहब्बत में क्योंकर न असर कुछ हो॥
तड़फती हुई आहों में क्योंकर न असर कुछ हो।
मुमकिन नहीं इस दिल की उनको न खबर कुछ हो॥
हर तौर से इस जिद पर एतकाद जमा बैठे।
जिस दिन से लगन अपनी मोहन से लगा बैठे॥
माना, हैं अजब उनके अन्दाज जमाने में।
एकता है मगर हम भी जाँबाज जमाने में॥
इक दिन तो खुलेगा ही यह राज जमाने में।
कुर्बानिये दिल देगी आवाज जमाने में॥
हम दार पै सर देकर दिलदार को पा बैठे।
जिस दिन से लगन अपनी मोहन से लगा बैठे॥
आशिक को कभी दम भर आराम नहीं होता।
रोने के सिवा उसका कुछ काम नहीं होता॥
है कौन ? जो इस फन में बदनाम नहीं होता।

मरने के सिवा इसका अञ्जाम नहीं होता ॥

सब कुछ ये समझकर भी इस दिल को लुटा बैठे।

जिस दिन से लगन अपनी मोहन से लगा बैठे॥

थोड़ा सा सहारा कुछ पाया भी तो कब पाया।

बरसात का मौसम कुछ आयाभी तो कब आया॥

घनश्याम इन आंखों में छाया भी तो कब छाया।

कुछ 'बिन्दु' बरसने का लाया भी तो कब लाया॥

जब आतिशे फुरकत में यह जिस्म जला बैठे।

जिस दिन से लगन अपनी मोहन से लगा बैठे॥

(१३३)

गर प्रेम की इस दिल में लगी घात न होती।

तो सच है कि मोहन से मुलाक़ात न होती॥

सरकार को नजराने में देता मैं भला क्या ?

कुछ पास गुनाहों की जो सौगात न होती॥

क्यों होते मुखातिब, वे भला मेरी तरफ को।

आहों में कशिश की जो करामात न होती॥

है दर्दे मुहब्बत का फ़कत सारा तमाशा।

यह दिल में न होता तो कोई बात न होती॥

दृग 'बिन्दु' बताते हैं कि घनश्याम हैं दिल में।

घनश्याम न होते तो यह बरसात न होती॥

(१३४)

जब से घनश्याम इस दिल में आने लगे।

क्या कहें ? रङ्ग क्या क्या दिखाने लगे ॥

आये यूं ही जो इक दिन टहलते हुए।
कुछ झिझकते हुए, कुछ सम्हलते हुए ॥
चुपके चुपके से दिल लेके चलते हुए।
मैंने पकड़ा जो बाहर निकलते हुए ॥

मोहिनी डालकर मुस्कराने लगे।
क्या कहें ? रङ्ग क्या क्या दिखाने लगे ॥

एक दिन उनके आने का बतलाऊँ ढब।
आ गये नैन से ही लगा कर नकब ॥
बाँध कर ले चले जानो-दिल माल सब।
मैंने देखा तो पूछा कि यह क्या गजब ॥

कुछ मचल कर वह मुरली बजाने लगे।
क्या कहें ? रङ्ग क्या क्या दिखाने लगे ॥

एक दिन ख्वाब में ही खड़े आप हैं।
दिल उड़ाने की धुन में अड़े आप हैं ॥
मैं ये बोला कि हजरत बड़े आप हैं।
क्यूँ मेरे दिल के पीछे पड़े आप हैं ॥

चोट चितवन की चित्त पर चलाने लगे।
क्या कहें ? रङ्ग क्या क्या दिखाने लगे ॥

एक दिन आप आये तो इस तोर से।
दर्दे दिल बन के ही वह उठे जोर से ॥
मैंने देखा उन्हें जब बड़े गौर से।

भागने फिर न पाये किसी ओर से
बन गये 'बिन्दु' आँखों से जाने लगे।
क्या कहें ? रङ्ग क्या क्या दिखाने लगे ॥

❀ विनय-माधुरी ❀

(१३५)

[श्री] भानुनन्दिनी मो तन हेरो।
तपत रहत मन विषय वासना शीतल दृष्टि कृपा-कण गेरो
बोल लेहु दरबार स्वामिनि, हा हा अब न करो अवसेरो
'ललितलड़ैती' तन मन अकुलित, श्रीवृन्दावन देहु बसेरो

(१३६)

अहो विहारिणि प्राणजीवनि मो अवगुण मन में न विचा
करुणा सिन्धु जानि निज दासी, दीन दशा मेरी निरखा
निजपन सुमिरो स्वामिनि भामिनि बिगड़ी को अब बेग संभा
'ललितलड़ैती' घटे न बल कछु कृपा विलोकिन नैक निहा

(१३७)

कुंवरि किशोरी देर करो जनि नैक कृपा करि हेरो
मधुप होय मन निशिदन सेवै पदपङ्कज प्रिय तेरो।
युगल रूप बिनु नयन न खोलूं त्रिभुवन सूं कहा मेरो
'ललित लड़ैती' करौं निरन्तर कुञ्जन मांहि बसेरो।

(१३८)

पानकर युगलरस रूप माती फिरूं,

माधुरी लतन श्रीबन मंझारी ।
नाम-गुण मत्त गाऊं रटूं रसना नित,
राधिका राधिका श्री विहारी ॥
कबहुँ यमुना निकट बैठि आनन्द सूं,
धरूं उर ध्यान तन सुद्धि विसारी ।
'ललितलड़ैती' झलके नई छबि दृगन,
ऐसी कब करिहौं जू कृपा प्यारी ॥

(१३९)

ऐसो कब करिहो प्यारीजू निशिदन तुम्हरो ही ध्यान लगाऊं ।
टूक झूंट पनवारे चुनि चुनि बचे सीथ रसिकन के पाऊँ ॥
कुञ्जगलिन में बिचरत डोलौं अन्य न मानूं अनत न जाऊँ ।
'ललितलड़ैती' यही लालसा तुमकों हिये-निकुञ्ज बसाऊँ ॥

(१४०)

हे स्वामिनि हर्षामिनि भामिनि अब मेरी सुधि लीजै ।
हा हा करी बिगाड़ भाँति बहु भूल माफ करि दीजै ॥
दीन टेर सुनि देखि गरीबी ज्यौं त्यौं ही अपनीजै ।
'ललितलड़ैती' श्रीवृन्दावन रज अधिकारी कीजै ॥

(१४१)

पड़त हौं पैयां कुञ्जविहारिनि गौराङ्गी वृषभानुदुलारी ।
करुणा-स्वांति बूंद हौं चातक मुख छबि-चन्द्र चकोरी प्यारी॥
औसर नहीं अवसेर करन को सुनि लीजै दरखास्त हमारी ।
'ललितलड़ैती' देहु वास-ब्रज पुरिवौ आस भानुपुर वारी ॥

(१४२)

पड़त हों पैयां कुञ्ज विहारिणि रास ईश्वरी भानु दुलारी।
करुणा स्वान्ति बूंद हौं चातक मुख छबि चन्द्र चकोरी प्यारी।
हा हा देर करो न किशोरी छिन-छिन बीतत युग सम भारी।
बोल लेहु दरबार स्वामिनि 'ललितलड़ैती' शरण तिहारी।

(१४३)

हा हा देर करो न किशोरी।
श्रीवृन्दाबन बास दीजिये टहल महल नव कुञ्जन खोरी।
वंशीवट तट करत केलि नित अवलोकूं सुन्दर वर जोड़ी
'ललितलड़ैती' आस पुरावो चूक माफ करि लखि निज ओरी।

(१४४)

श्री श्यामा यही विनती चित्त धरिये।
श्रीवृन्दावन बास दीजिये चरणन दासी करिये।
नव निकुञ्ज सुखपुञ्ज निरन्तर सेवन तुम्हरो करिये
वदन निहार नैन शीतल करि त्रिविध ताप मन हरिये।
आप दोऊ मिल हंसि हंसि गावैं श्रवण सुधा रस भरिये
'ललितलड़ैती' यह छबि हियेते स्वप्नेहूँ नहीं टरिये

(१४५)

अब विलम्ब जनि करो लाडिली कृपा दृष्टि टुक हेरो
यमुना पुलिन गलिन गहवर की विचरूं सांझ सवेरो
निशिदन निरखौं युगल माधुरी रसिकन ते भट भेरो
'ललितकिशोरी' तन मन अकुलित श्रीवन चहत बसेरो

(१४६)

माल खजाना हीरा मोती पल छिन मांहि लुटावैंगे।
त्रिभुवन शाही जान गदाई बायें हाथ बहावैंगे ॥
श्रीवृन्दावन सेवा महलन कुञ्ज खवासी पावैंगे।
'ललितलड़ैती' रूप अमीरस लोचन तृषित पियावैंगे ॥

(१४७)

किशोरी तेरे चरणन की रज पाऊं।
बैठि रहौं कुञ्जन के कोने श्याम - राधिका गाऊं ॥
जो रज शिव सनकादिक लोचत सो रज शीश चढ़ाऊं।
'व्यास'स्वामिनी की छबि निरखत विमल विमल यश गाऊं ॥

(१४८)

किशोरी मोंहि अपनी कर लीजै।
और हिये कछु भावत नांहि वृन्दावन रज दीजै ॥
खग मृग पशु पन्छी या बनके चरण शरण रख लीजै ॥
'व्यास' स्वामिनी की छबि निरखत महल टहलनी कीजै ॥

(१४९)

हम श्यामाजू के बल अभिमानी।
टेढ़े रहें मोहन रसिया सों बोलैं अटपटी बानी ॥
पड़े रहें अलमस्त कुञ्ज में सिर पर राधा रानी।
'किशोरी अली' के प्राण-जीवन-धन वृन्दावन रजधानी ॥

(१५०)

[श्री] नन्दलाल मो तन टुक हेरो।

श्रीब्रजरज पावन दरसावहु जासों सहज ही होय निबेरो।
ऊक-चूक सब क्षमौ साँवरे हा हा अब न करो अवसेरो।
'ललितलड़ैती' देहु कृपा करि, श्रीवृन्दावन कुञ्ज बसेरो ॥

(१५१)

गौर श्याम अभिराम मनोहर नैक कृपा करि हेरो।
नित्य को लाड चाव सेवा सुख यह चितवै चित्त मेरो ॥
युगल मन्त्र को जाप उपासन जासों होये निबेरो।
'ललितलड़ैती' इष्ट प्रिया प्रिये श्रीवन मांहि बसेरो ॥

(१५२)

मो सम कौन पतित ब्रजराज।
जो तन दियो युगल चिन्तन को, भ्रमत भोग सुख काज।
भरि भरि उदर विषयन को धाऊं, तजि हरिजनन समाज।
'ललितलड़ैती' तू ही कृपापद बांह गहे की लाज ॥

(१५३)

मो सम कौन कुटिल अविचारी।
जिहि रसना रस-नाम त्यागि कै निशिदन बातें बकत लबारी।
जे अखियां तजि युगल रूप रस, छकी रहत नित नेह सुत नारी।
जे कर दम्पति चरण पलोटत, लगे हरन पर धन दुख भारी।
निशिदन आस वास वृन्दावन, रूप सुधारस पीवौं पियारी।
कृपा दृष्टि टुक हेरो मो तन, "ललित लड़ैती" शरण तिहारी।

(१५४)

मो सम कौन आलसी बीर।

बिनु हरि सेवा वृथा जात दिन लगत न लाज उठत न पीर।।
पावत पातर नित परोस धरि भरि भरि पोषत कुटिल शरीर।
'ललितलड़ैती' देखि युगल छबि बहत प्रवाह न नयनन नीर।।

(१५५)

ऐसो कब ह्वै छैला मोहन रसिक नयन भरि हेरौं।
दै तिलाञ्जली लाज निगोड़ी चितवत दृष्टि न फेरौं।।
लोचन तृषित अमीरस प्यावौं पल छिन पलक न गेरौं।
'ललितलड़ैती' छकी प्रेम रस कुल की कानि निबेरौं।।

(१५६)

अब विलम्ब जनि करो प्राणपति कृपादृष्टि टुक हेरो।
नित्य को ध्यान भजन सिमरण सुख यह चितवे चित्त मेरो।।
अविरल भक्ति प्रीति दृढ़ चरणन जासों होय निबेरो।
"ललितलड़ैती" इष्ट प्रियाप्रिय वृन्दाविपिन बसेरो।।

(१५७)

अलबेली स्वामिनि राधा, अब बेग हरहु मम बाधा।
कीरति वृषभानु दुलारी, हम आये शरण तिहारी।।
अब राखहु लाज हमारी, करुणामय गुणन अगाधा।।अब।।
तुम निजपन कांहि निहारो,जन अवगुन मन न विचारो।
सब बिगड़ी बेग संवारो, तुम बहुतन के कृत साधा।।अब।।
हम दीन दुखी जन सारे, मिल आये तुम्हरे द्वारे।
तुम सब के कष्ट निवारे, जिनने तुमको अराधा।।अब।।
हम 'श्याम' से कछु न कहेंगे,अब रावरि शरण रहेंगे।

पद पङ्कज धूरि लहेंगे, सब छोड़ के जग मर्यादा ॥अब॥

(१५८)

श्री राधिका रसीली सुन्दर श्याम हो ।
मेरी जीवन-प्राण येही जोड़ी अभिराम हो ॥
दे गलबाहीं, मृदु मुस्काहीं, बोलिन परम रसाल हो ।
अलकें झलकें, रति रस छलकें, हलकें उर मणिमाल हो ॥
करुण सुभायन, पङ्कज पायन, पायल की झङ्कार हो ।
यह छबि बांकी, नैनन राखी, पलकन देहौं किवार हो ॥
परम पुनीता, त्रिजग अतीता, श्रीवृन्दावन धाम हो ।
कुञ्जन कुञ्जन विचरत डोलूं गाऊं मधुरे नाम हो ॥
भानुदुलारी कुञ्जबिहारी भगतन पूरण काम हो ।
कहौं कर जोड़े,यहि मन मोरे 'श्याम' के श्यामा श्याम हो ॥

(१५९)

ऐसो कब करिहो प्रिया प्रीतम निशिदिन टहल महल चित लाऊं
सुन्दर सरस स्वरूप माधुरी अनिमिष अचवत नैन सिराऊं
नव सत नव शृङ्गार मनोहर सुभग अङ्ग प्रति अङ्ग धराऊं
"ललितबिहारिणि" यही लालसा सहज स्नेह युगल पद पाऊं

(१६०)

मम हिये आये बसहु प्रिय जोरी ।
नन्दलाल जू रसिक शिरोमणि रासरसेश्वरी भानु-किशोरी
नैन सूं नैन मेलि मुस्क्यावत करत मधुर बतियां रस बोरी
'ललितबिहारिणि' चन्द्र बदन दोऊ चितबन कूं रहैं नैन चकोरी

(१६१)

दृगन बसे रहहु प्रानन पियारे ।
नन्दलाल वृषभानु लाडिली वृन्दावन-बरसाने बारे ॥
अभिनव नील नीरप्रद प्रीतम स्वामिनि दामिनि रूप उजारे ।
खञ्जन नैन हसन रङ्ग भीनी मृदु बोलिनि शत मन मथवारे ॥
निशिदन बिलसहु मम हृदिमन्दिर परम स्वतन्त्र टरहु नहिं टारे ।
श्यामा-श्याम उदार मुकुट मणि प्रणत कामना पुरण हारे ॥

(१६२)

दृगन बसहु यह छबि सुखकारी ।
अवध किशोर श्रीराम दयानिधि करुणावली श्रीजनकदुलारी ॥
कनक मुकुट उत शीश चन्द्रिका कुण्डल झलक अलक घुंघरारी,
अति सुन्दर मणि जटित सिंहासन मिलि राजत सुषमा सुख भारी॥
लखन भरत ठाढ़े रिपुसूदन सेवत पद हनुमत बलधारी ।
'श्यामदास' दृग यह छबि सिन्धु रहैं मीन प्रानन बलिहारी ॥

(१६३)

मेरे बट चरणकमल रज दीजै ।
अधम कुकर्मी कुटिल अभिमानी पापिन में पतित प्रथम गन लीजै ॥
अधम उधारन धांक तिहारी लखि निजपन ज्यों त्यों अपनीजै ।
'श्यामदास' स्वामि करुणामय चरणकमल नित चेरो कीजै ॥

(१६४)

नाथ ! अब रावरि चाकरि चैहों ।
जनम जनम सों यहि धन धन्धो सब विधि नेम निबैंहों ॥

चाकरि गुण कौशल यह, सेव्यो इक तनु पाचंहु स्वामी
काम कोह मद मोह लोभ जो प्रबल वेग गुण नामी।
सदा सदा सब ने मन भायो लख्यो तमाशा मेरो
ह्वै गुलाम मैं अनथक सेव्यो तक्यो न सांझ सवेरो।
मैं हारयो पर भये न राजी पलहूँ न छुट्टि दीन्हीं
सो साहिब कहो कौन काम जिन सेवक कदर न चीन्हीं।
करुणा करि आपही यश लेहो निबटै झंझट मेरो
"श्यामदास" मन आस बास ब्रज युगललाल पद चेरो।

(१६५)

नाथ ! मेरी नैया भार भरी।
भवसागर में पापन लादी आ मंझधार अड़ी॥
शोक मोह मद भंवर तरङ्गन अब नहिं जात तरी।
चहुँ दिशि जल महँ बिनु आधार भई तजि आशा सिगरी॥
नीलकमल द्वै प्रणितारतिहर निरखत धीर बढ़ी।
"श्यामदास" प्रभु सहजहिं तरि है जो इन पास करी॥

(१६६)

कन्हाई तुम तजि के कित जाऊँ।
तुम सो कौन दयालु प्रभु दूजो जा हित टेर लगाऊं॥
तेरो कहाय के जाऊँ कहां कहो किन दर जाये बिकाऊं।
अपनी बिरद सम्भारो आपहिं निज मुख काहे जताऊं॥
तुमहि मातु पिता प्रियबन्धु तुम्हरो हि दास कहाऊं।
'श्यामदास' अब वेगि उबारहु तुम तजि ठौर न पाऊं॥

(१६७)

जो हम भले बुरे सो तेरे।

तुम्हैं हमारी लाज बड़ाई, बिनती सुनहु प्रभु मेरे ॥

सब तजि तुव सरनागत आयो, निज कर चरण गहे रे।

तुव प्रताप-बल बदत न काहू, निडर भये घर चेरे ॥

और देव सब रङ्क भिखारी, त्यागे बहुत अनेरे।

"सूरदास" प्रभु तुम्हरी कृपा तें पाये सुख जु घनेरे ॥

(१६८)

हरि हौं बड़ो देर को ठाढ़ो।

जैसे और पतित तुम तारे तिनहिन महं लिखि काढ़ो ॥

जुग जुग बिरद यही चलि आयो टेर कहत हौं ताते।

मरियत लाज पञ्च पतितन मंह हौं घट कहो कहांते ॥

कै अब हार मानि कर बैठो कै करहु बिरद सही।

"सूर" पतित जो झूंठ कहत है, देखो खोलि बही ॥

(१७९)

दीनन दुख हरन देव सन्तन हितकारी।

अजामील गीध व्याध, इनमें कहो कौन साध,

पंछी हू कूं पद पढ़ात, गनिका सी तारी ॥

ध्रुव के सिर छत्र देत, प्रह्लाद कहं उबार लेत।

भगत हेत बांध्यो सेत लङ्कपुरी जारी ॥

तन्दुल देत रीझ जात, साग पात सों अघात।

गिनत नांहि झूंठे फल, खाटे मीठे खारी ॥

गज को जब ग्रह ग्रस्यो, दुस्सासन चीर खस्यो।
सभा बीच कृष्ण कृष्ण द्रौपदी पुकारी॥
इतने में हरि आइ गये, बसनन आरूढ़ भये।
"सूरदास" द्वारे ठाढ़ो, आंधरो भिखारी॥

(१८०)

सुने री मैंने निरबल के बल राम।
पिछली साख भरूं सन्तन की, अड़े संवारे काम॥
जब लगि गज बल अपनो बरत्यो नेक सरयो नहिं काम।
निरबल ह्वै बलराम पुकारयो, आये आधे नाम॥
द्रुपद सुता निरबल भइ ता दिन, तजि आये निज धाम।
दुस्सासन की भुजा थकित भईं बसन रूप भये श्याम॥
अप बल तप बल और बाहु बल, चौथो है बल दाम।
'सूर' किशोर-कृपा ते सब बल हारे को हरिनाम॥

(१८१)

पतित पावन हरि बिरद तुम्हारो कौने नाम धरयो।
हौं तो दीन दुखित अति दुर्बल द्वारे रटत परयो॥
चारि पदारथ दये सुदामहिं तन्दुल भेंट धरयो।
द्रुपद सुता की तुम पति राखी अम्बर दान करयो॥
सन्दीपन सुत तुम प्रभु दीने विद्या पाठ करयो।
'सूर' की विरियां निठुर भये प्रभु मोतें कछु न सरयो॥

(१८२)

जो तारे स्वारथ के तारे ।
शबरी एक सुनियत तुम तारी, बन-मग के कण्टक चुनि डारे ।
कितिक दिनन सों बाट जुहत रही,चुनि चुनि मीठे बेर संबारे ।।
गीध उबारचौ बिनु स्वारथ कहा ? व्याकुल फिरत रहे बनमारे ।
अति उपकार कियौ वा तुमपै, पत्नी थांग कही, तन वारे ।।
अजामिल तो तरचौ अपन बल, अन्त समय हरि नाम उचारे ।
जाने अजाने लियौ तुव नामहिं, वेद विदित साधन सब पारे ।।
सुनियत जड़ जोषित इक तारी, आवत न परतीति हमारे ।
परम पुनीत ऋषि की नारी, पति करणी फल निपट विचारे ।।
कहो नाथ ! मोसो को तारचो, कलमष काजर कूट करारे ।
जासों सरचौ न काज तिहारो, क्षण न भ्यो अनुकूल तिहारे ।।
अधम-उधारन विनु कारण प्रभु, नाम सुयश ऐसन के तारे ।
"श्यामदास" खल वेग उबारो, गावहि यश जग भुजा पसारे ।।

(१८३)

मो सम कौन कुटिल खल कामी ।
जिन तनु दियो ताहि बिसरायो, ऐसो नमक्र हरामी ।।
भरि भरि उदर विषयन कों धायो, जैसे सूकर ग्रामी ।
हरिजन छांड़ि हरि विमुखन की निसिदिन करत गुलामी ।।
पापी कौन बड़ो जग मोतें सब पतितन में नामी ।
'सूर' पतित को ठौर कहां है तुम बिनु श्रीपति स्वामी ।।

(१८४)

ऐसौ को उदार जग माहीं ।
बिनु सेवा जो द्रवहिं दीन पर राम सरसि कोउ नाहीं ॥
जो गति जोग विराग जतन करि नहीं पावत मुनि ज्ञानी ।
सो गति देत गीध शबरी कहं प्रभु न बहुत जिए जानी ॥
जो सम्पत्ति दस सीस अरपि के रावन शिव पै लीन्हीं ।
सो सम्पदा विभीषण कहं अति सकुच सहित हरि दीन्हीं ॥
'तुलसीदास' सब भान्ति सकल सुख जो चाहत मन मेरो ।
तो भज राम काम सब पूरन करहिं कृपानिधि तेरो ॥

(१८५)

तू दयालु दीन हौं, तू दानी हौं भिखारी ।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप पुञ्ज हारी ॥
नाथ तू अनाथ को अनाथ कौन मोसो ।
मो समान आरत नहिं, आरतिहर तोसो ॥
ब्रह्म तू मैं जीव हौं तू ठाकुर हौं चेरो ।
तात मात गुरु सखा तू सब विधि हितु मेरो ॥
मोहि तोहि नाते अनेक मानिये जो भावै ।
ज्यौं त्यौं 'तुलसी' कृपालु चरण शरण पावै ॥

(१८६)

तुमने घनश्याम अधीनों को जो तारा होगा ।
तो कभी हमको भी तरने का सहारा होगा ॥
हम जो मशहूर हैं पापी, तो तुम पतित-पावन ।

तुम न होगे तो भला कौन हमारा होगा ॥
गम न होगा हमें बरबाद या पामाल रहें ।
नाम हरहाल में बदनाम तुम्हारा होगा ॥
क्या हमारी हो कुटिलता न सुधारोगे कभी ।
गरचि कुबजा की कुटिलता को सुधारा होगा ॥
माना, सरकार की आंखों में अनेकों हैं अधम ।
'बिन्दु' का आंख के कोने में गुजारा होगा ॥

(१८७)

दीन को दयालु दानि दूसरो न कोऊ ।
जासों दीनता कहौं हौं देखौं दीन सोऊ ॥
सुर नर मुनि असुर नाग साहब तो घनेरे ।
तौलौं जोलौं रावरे न नैकु नयन फेरे ॥
त्रिभुवन तिहुँ काल विदित वदत वेद चारी ।
आदि अन्त मध्य नाथ साहबी तिहारी ॥
तोहि मांगि मांगनो न मांगनो कहायो ।
सुनि सुभाव शील सुजस जांचन जन आयो॥
पाहन पशु विटप विहङ्ग अपने करि लीन्हें ।
महाराज दशरथ के ! रङ्क राव कीन्हें ॥
तू गरीब को निवाज हौं गरीब तेरो ।
बारेक कहिये कृपालु 'तुलसीदास' मेरो ॥

(१८८)

जाऊं कहां तजि चरण तुम्हारे ।
काको नाम पतित पावन जग, केहि अति दीन पियारे ॥
कौन देव बराई बिरद हित, हठि हठि अधम उधारे ।
खग, मृग, व्याध, पषान, विटप, जड़, जवन, कवन सुर तारे ॥
देव दनुज मुनि नाग मनुज सब माया विवस विचारे ।
तिनके हाथ दास 'तुलसी' प्रभु, कहा अपनपौ हारे ॥

(१८९)

मोहन की लिखी ह कौन मिटावै ।
राज-पाट सुख-सम्पत्ति तबलौं, जबलौं प्रभु कों भावै ॥
टेढ़ी नजरिय नन्दनन्दन की दर-दर भीख मंगावै ।
यश कीरति प्रभुता सब तोलौं, तोलौं जग अपनावै ।
जो लौं रीझ, प्रभु के खीजै आदर कहूँ न पावै ॥
जाकूं राखै जैसे राखै तैसेहि सो रहि आवै ।
राम संवारै, कौन बिगाड़े, बिगड़े कौन बनावै ॥
भावी प्रबल, टरत नहीं टारे, अपनी कौन चलावै ।
'श्यामदास' प्रभु चरणन दृढ़ गहु, क्यों चिन्ता मन लावै ॥

(१९०)

मदन गोपाल शरण तेरी आयो ।
चरण कमल की सेवा दीजै चेरो करि राखो घर जायो ॥
धनि धनि मात पिता सुत बन्धु धनि जननी जिन गोद खिलायो ।
धनि धनि चरण चलत तीरथ कूं धनि गुरु जिन हरिनाम सुनायो ॥

जो नर विमुख भये गोविन्द से जनम अनेक महा दुख पायो ।
'श्रीभट'के प्रभु दियो अभय पद यम डरप्यो जब दास कहायो ॥

❀ विरह-माधुरी ❀

(१९१)

अखियां हरि दर्शन की प्यासी ।
देख्यो चाहत कमल नैन को निसि दिन रहत उदासी ॥
केसर तिलक मोतिन की माला वृन्दावन के बासी ।
नेह लगाए त्याग गए तृण सम डारि गए गल फांसी ॥
को जाने काहू के मन की लोगन के मन हांसी ।
'सूरदास' प्रभु तुम्हारे दरस बिन लैहों करवट कासी ॥

(१९२)

कोई कहियो रे प्रभु आवन की ।
आप न आवैं लिख नहीं भेजें बान पड़ी ललचावन की ।
ये दोऊ नैन कह्यो नहीं मानें, नदिया बहै जैसे सावन की ॥
कहा करूं कछु बस नहीं मेरे पङ्ख नहीं उर जावन की ।
"मीरा" के प्रभु कब रे मिलोगे चेरी भई बिनु दामन की ॥

(१९३)

घनश्याम तुम्हें ढूंढ़ने जायें कहां कहां ।
अपने विरह की याद दिलायें कहाँ कहां ॥
तेरी नजर में, जुल्फ में, मुसकान मधुर में ।

उलझा है सब में, दिल तो छुड़ायें कहां कहां ॥
चरणों की खाकसारी में खुद खाक बन गये ।
अब खाक पै हम खाक रमायें कहां कहां ॥
जिनको तबीब देख के खुद बन गये मरीज ।
ऐसे मरीज मर्ज दिखायें कहां कहां ॥
दिन रात अश्रु 'बिन्दु' बरसते तो हैं मगर ।
सब तन में लगी आग बुझायें कहां कहां ॥

(१९४)

दरस बिनु दूखन लागे नैन ।
जब से तुम बिछुरे मेरे प्रभु कबहुँ न पायो चैन ॥
शब्द सुनत मेरी छतियां कांपै मीठे लागे बैन ।
विरह कथा कासों कहुँ सजनी बह गई करवत ऐन ॥
कल न पड़त पल हरि मग जोवत भई छमासी रैन ।
"मीरा" के प्रभु कबरे मिलोगे दुख मेंटन सुख दैन ॥

(१९५)

बेदरदी तोहि दरद न आवै ।
चितवन में चित्त बश करि मेरो, अब काहे को आंखि चुरावै ॥
कब सों पड़ी तेरे द्वार पै, बिन देखे जियरा अकुलावै ।
'नारायण' महबूब सांवरे, घायल करि फिर गैल बतावै ॥

(१९६)

रूठ कर बोलो न घनश्याम तो चारा क्या है ।
हां, मगर कहदो कि दर्शन में इजारा क्या है ॥

जो निगाहों को मेरी खुद ही बुलाते हो तुम्हीं।
तो बतादो कि भला मेरा इशारा क्या है॥
खींच ली आंखों ने तस्वीर तुम्हारी जो कहीं।
मेरी तकदीर है अहसान तुम्हारा क्या है॥
अपने गर एक खरीदार से तुम होंगे खिलाफ।
इसमें नुकसान तुम्हारा है, हमारा क्या है॥
न जलन दिल की मिटायें जो अश्रु 'बिन्दु' कहीं।
तो विरह आग से बचने का सहारा क्या है॥

(१६७)

सखि ? तू मति ले वाको नाम, नहीं पछतावैगी।
मन कपटी मुख मीठो बोले, कली कली रस चाखत डोलैं,
ऐसे सों करि प्रीति कहा फल पावैगी॥
मेरी कही तू चित्त न धरति है,यासों मोहि अब जानि परति है,
तू अपने सुन्दर तन रोग लगावैगी॥
नेह किए कछु हाथ न आवै, लोक लाज कुल धर्म नसावै,
"नारायण" तू नाहक जगत हंसावैगी॥

(१६८)

नैनो रे ! चित्त चोर बतावौ।
तुमही रहत भवन रखवारे, बांके बीर कहावौ॥
तुम्हरे बीच गयो मन मेरो, चाहे जिती सौं खावौ।
घर के भेदी बैठि द्वार पै, दिन में घर लुटवावौ॥

अब क्यों रोवत हो दईमारे, कहूँ तो थांग लगावौ ॥
'नारायण' मोहि वस्तु न चहिये, लेने हार दिखावौ ।

(१९९)

सांवरिया तेरे लिए मैंने जोगिन भेष बनाया ॥
तेरे प्रेम में सब घर छोड़ा, तृण सम नाता जग सों तोड़ा ।
तुम सों नेह बढ़ाया ।। सांव० ।।
श्याम नाम की पड़ीं उर रेखें, दुनिया को पुनि हम क्यों देखें ।
तू दिल बीच समाया ।। सांव० ।।
सांवरि सूरत मो मन भाई, लोग कहत यह बावरी आई ।
मो मन क्यों भरमाया ।। सांव० ।।
सांवरे सों मैं प्रीति जोड़ी, मित मर्याद लाज सब तोड़ी ।
घर घर अलख जगाया ।। सांव० ।।

(२००)

हे नन्दलाल हे नन्दलाल, दीजिए दर्शन दीन दयाल ।
प्राण जीवन धन तुम मेरे लाल, हे नन्दलाल हे नन्दलाल ॥
बोल सुनन कों व्याकुल प्राण, रूप सुधा को तड़पत प्राण ।
दुख हरो जू नैन विशाल, हे नन्दलाल हे नन्दलाल ॥
कब निरखौं नटवर छबि श्याम, कब निरखौं मुख चन्द्रललाम ।
आए मिलो जसुदाजी के लाल, हे नन्दलाल हे नन्दलाल ॥

❀ मन-शिक्षा ❀

(२०१)

रे मन युगल मन्त्र है सार ।
सावधान ह्वै अब नहीं चिन्तै फिर कब ह्वै गो पार ।।
यह जग अपने सुख सों बान्ध्यो देखहु भले विचार ।
'ललितलड़ैती'' सेव युगलपद, जासों होय उद्धार ।।

(२०२)

रे मन अजहुँ न करत विचार ।
बहुत गई यह वयस वृथा ही, सेवत विषय असार ।।
मात तात सुत भ्रात बन्धुजन, निज स्वारथ के मीत ।
अपने सुख कूं सब कोऊ बान्ध्यो यही जगत की रीति ।।
सुख में मित्र मण्डली जोड़ैं गढ़ि गढ़ि बात बनावैं ।
दुख में आँख बचाय चलें सब बोलेहुँ निकट न आवैं ।।
सम्पति सन्तति कुशल देखि तिया हंसि बोलत मृदु बानी ।
नाक सकोरे सोऊ उठि भागे विपत्ति पड़ै जब प्रानी ।।
यातें अब तूं सावधान हो सब विधि ममता त्याग ।
"ललितलड़ैती'' कर हित चित्त सूं युगल चरण अनुराग ।।

(२०३)

रे मन त्याग विषय रस धूलि ।
टेसु फूल जगत शोभा यह ललित देखि जनि भूल ।।
शक्र समान तेज बल सम्पत्ति भूपति भए अनेक ।
मैं-मेरी करते युग बीते ले न गये तृण एक ।।

मात-तात सुत भ्रात बन्धुजन, परम सनेही नारि।
निज स्वारथ हित प्रीति रीति सों तोसों करत प्यार॥
बसि वृन्दावन, रसिक सीथ पा, कर यमुना जल पान।
"ललितलड़ैती" पिया-लाल सों वेगहि कर पहिचान॥

(२०४)

कर मन रसिक जनन सत्सङ्ग।
जिनके सङ्ग प्रेम रस उपजै चढ़ै भजन को रङ्ग॥
चरचा ज्ञान-ध्यान वर पूजा कथा भक्ति बहु अङ्ग।
सेवा प्रीति भावना भक्ति मन उत्साह उचङ्ग॥
जाकी छबि त्रिभुवन मन मोहे लीजै कोटि अनङ्ग।
'ललितलड़ैती' युगललाल भज पड़े न सेवा भङ्ग॥

(२०५)

सुन मन सार सन्तजन बानी।
विष सम भोग सम्पदा अपदा,नरक द्वार नेह नारि बिरानी॥
अञ्जली को जल धन जौबन यह,जापै भूलि रह्यौ अभिमानी।
'ललितलड़ैती' तजि प्रपंच सब,भज ब्रजराज कुंवर सुखदानी॥

(२०६)

सर्व मतन को सार यही है।
भजिये चरण कमल गिरधर के जग में फेर न बहि है॥
उपजे परमानन्द छनक में दूर होय दुख द्वन्द सही है।
'ललितकिशोरी' लेख पुरातन निगमागमहूँ पुकार कही है॥

(२०७)

मन के कौतुक लखे न जावत ।
मुख सों रसिक जनन की निन्दा, कान कहानी विषय सुहावत।।
जरत देखि परधन परदारा बाहर परम विराग जनावत ।
अपने सुख स्वारथ के कारण औरन फूट कलह उपजावत ।।
जेहि कंचनतन दियो भजनहित छिनभर बैठि न ताहि ध्यावत।
लगत न लाज काज छल करते 'ललितलड़ैती' भेष लजावत।।

(२०८)

सुन या मन बौरे की बात ।
मृग-मर्कटवत् धावत विषयन, तकत सांझ न प्रात ।।
भेट धनीले करत प्रशंसा—"तुम हमरे पितु मात ।
पालन पोषण होवत या तन तुम किरपा के नाथ" ।।
सुनतहि नाम कोऊ नव तरुणी, निरखन कों उठि जात ।
हंसि हंसि करत रसीली बतियां बैठि निकट वा साथ ।।
चितवन करत न भानुनन्दिनी-श्याम सांवरे गात ।
"ललितलड़ैती" ललना-लालन रूप न अङ्ग समात ।।

(२०९)

देखि देखि कौतुक मन अचरज मोहि आवै ।
बल थोड़ो, वयस थोड़ी, ताहू पै ग्रसित रोग,
शोक ताप चिन्ता सों काया कुम्हलावै ।।
जरत राग-द्वेष आंच, रसिकन से बांधि वैर,
हेरि हेरि सम्पत्ति सुख औरन दुख पावै ।।

कहै 'ललितलड़ैती' बिना भक्ति रस न पावै चैन,
कञ्चन के महल चाहै रतन घर बनावै ॥

(२१०)

रे मन इक मान कही नातर पछितावै ।
ज्यों ज्यों घृत पड़त आंच प्रज्ज्वलित होत अधिक,
त्योंहि विषय सेवन ते शान्ति नहिं पावै ॥
मान मोह क्रोध आदि ले निज परिवार सङ्ग,
लोभ वधिक घर घर तोहि नाच लै नचावै ॥
हितु इक "ललितलड़ती" नन्द को कुमार सांचो,
ताहि सुमिर ताहि सुमिर पार जो लगावै ॥

(२११)

हा हा आयु वृथा बिहानी ।
चिन्तामणि हाथ ते खोई मानुष तन की सार न जानी ॥
भ्रमत रह्यो मन भोग वासना लगी कान प्रिय विषय कहानी ।
'ललितलड़ैती' होत कहा अब अङ्ग शिथिल काया कुम्हलानी ॥

(२१२)

करत कपट छल आयु बिहानी ।
बाहर तिलक छाप बहु पूजा अन्तर पर-युवतिन रति मानी ॥
पर उपदेश प्रबीन कुशल अति लगी हिये प्रिय विषय कहानी ।
'ललितलड़ैती' बिनु सत्सङ्गति मन को व्यथा न काहु बुझानी ॥

(२१३)

सब मानुष जानें मरिबो सांच हांसी और खेल में परचे हैं।
माया सुख नाशवन्त समुझें बाके बन्धन में पड़ते हैं॥
मानत हैं होनहार परबल बीती की चिन्ता में मरते हैं।
जानत हैं अन्तकाल आयो धन संचि संचि कर धरते हैं॥
भयभीत नरक की आंचन सों तोउ पाप बटोरचो करते हैं।
निरखत संसार दशा चञ्चल ताहि सार ही मान विचरते हैं॥
चीन्हत हैं श्याम को भजन सार तोऊ विषयानल में जरते हैं।
पिया तें को सुन्दर 'ललितलड़ैती' ? प्रीति जगत सूं करते हैं॥

(२१४)

कहा भये धन सम्पत्ति पाये।
कृपा निवास दया-करुणा कर छबिसागर हरिचरणन ध्याये॥
रसिकन को सत्सङ्ग न कीनों विषयन आयु गई बिहाये।
'ललितलड़ैती' अवसर बीत्यो अब कहा होय वृथा पछिताये॥

(२१५)

लाभ कहा दुलभ देह पाये।
भये कामवश अन्ध मन्दमति विषयन आयु गई बिहाये॥
लोभ क्षोभ करि मांगत घर घर लोक लाज कुलकानि मिटाये।
'ललितलड़ैती' जिन तन दीनों तिन गुणगण दोनें बिसराये॥

(२१६)

अकुलायो चित्त जग नाते सों फिर काहू ढिग जाना क्या।
पड़ी कान झीनी ध्वनि नूपुर ब्रह्मानन्द ध्याना क्या॥

मनमोहन ने करचो धाम उर दूजा देव भलाना क्या।
'ललितलड़ैती' द्युति उर दरसी और रहा पुनि पाना क्या॥

(२१७)

जो हरि विमुख गंवावै स्वासन तिन सूं प्रीति न करिये।
मन ते त्याग विषय रस फीका सन्त टेक दृढ़ धरिये॥
सुन सुन बैन सहज सन्तन मुख आधि व्याधि तन हरिये।
"इन्द्र" सन्त उपदेश कमा कर जन्म योनि नहीं परिये॥

(२१८)

या जग जीवन स्वप्न मनोरथ ताको सत्य करि जाने।
बहुते पाप कमावै निशिदन मन में भीति न आने॥
यह तन क्षीण होय क्षण क्षण में मरन न नैक पहिचाने।
"इन्द्र" आएं जब यमगण पकड़न, तभी भूल निज माने॥

(२१९)

किय अनेक पाप जिन के हित दुख में काम न आये।
वृद्धा में कफ बात ने घेरचो निकसें आंख बचाये॥
कहैं परस्पर नयन सैन करि कब यह सुरपुर जाये।
पड़चो बोझ सिर वृद्ध का जीवन "इन्द्र" काहू न सुहाये॥

(२२०)

जो आयो सो चलता दीसै आदि नेत हरि धारी।
माया मोह नींद बिच सोया गोविन्द सुरति विसारी॥
एक जाए मानै थिर दूजा यह अचरज जिये भारी।
"इन्द्र" मरण चित्त में नहीं लावै महामूढ़ अविचारी॥

(२२१)

गहि हरि शरण न हरि सुख पाया धृग जीवन या प्रानी ।
विविध विषय सुख भोगे भूतल सो सब स्वप्न बखानी ॥
महल महलायत माल खजाना कह अपनी रजधानी ।
"इन्द्र" जाय परलोक अकेला तजि सम्पत्ति सुत रानी ॥

(२२२)

कृष्ण भजन में चित्त न लगाया आयु वृथा गंवाई ।
औसर गयो विषय सेवन में छाती शोक जलाई ॥
जिन के काज अनीति कमाई जिनसूं प्रीति बढ़ाई ।
अन्त समय कोऊ काम न आयो "इन्द्र" चला पछिताई ॥

(२२३)

यह मानुष्य तन न ढईसिया भया प्रापत भाग विशाल ।
तज उमर गई दा सोच तू अब बाकी रही सम्भाल ॥
इन विषयन में आसक्त चित्त नर स्वपने सुखी न भाल ।
उठ जाग "इन्द्र" सत्सङ्ग कर भज करुणासिन्धु गोपाल ॥

(२२४)

उठ जाग स्वप्न संसार ते तू मन दियां वृत्तियां मोड़ ।
इस मन दा निग्रह कठिन है तू बिच अभ्यास दे जोड़ ॥
कर विषयन ते वैराग्य दृढ़ अते जग दे नाते तोड़ ।
निशि "इन्द्र" सराय निवास यहां अन्त इत्थों चलना छोड़ ॥

(२२५)

करले काम आज का अज ही कल पै छोड़ न भाई।
क्या जाने कल कौन दशा हो रहैं प्राण कि जाई ॥
जग की प्रीति नरक में बोरे श्याम प्रीति सुखदाई।
"इन्द्र" विचार सोच सब तज कर भजले कुंवर कन्हाई

(२२६)

जे जन नित्य सत्सङ्गत करदे ते बड़भागी जानो।
माया तप्त न व्यापे तिन तन सुत तिया मोह भुलानो ॥
जिनका मन सन्तन सूं मान्या तिन्हें सन्त पहिचानो।
'इन्द्रभानु' सेवो नित सत्सङ्ग यह सत् ब्रत दृढ़ ठानो ॥

(२२७)

शील सन्तोष उदार बुद्धि नम्रता,
एक सङ्ग नष्ट होयें माया जब आवै है।
वैराग विचार दया धर्म ये सब छूट जायें,
शुभ गुण कोऊ नहिं यामें रहि जावै है ॥
कोमल स्वभाव सत्य मधुर वचन दीनता सों,
तौलौं यह बोले जोलौं कमला नहीं पावै है।
"ललितलड़ैती" यह वृत्ति को चपल करे,
अनर्थंन को मूल दुख तृष्णा ही बढ़ावै है ॥

(२२८)

या जग नहीं मीत कोऊ, बात हित बतावै।
जौबन धन धूत-धाम, मिथ्या तन रूप नाम,

मात तात भ्रात स्नेह झूंठो ही बढ़ावै ॥
जा तन हित महल रतन कञ्चन के भवन रचे,
सो तो कालहू को ग्रास तेरे सङ्ग नहीं जावै ।
रहै "ललितलड़ैती" तौलौं शोक रोग चिन्ता भय,
जोलौं अविनाशी नन्दलाल नहीं ध्यावै ॥

(२२९)

नीच चाह विषय रस नीच मति को करे,
नीच के सङ्ग ते हानि भारी ।
चञ्चला सङ्ग चञ्चल करे वृत्ति को,
बढ़े तन रोग चिन्ता चितारी ॥
वेग चलि वेग चलि गलिन गहवर विपिन,
निरख दृग ललित छबि पिया प्यारी ।
बैठि एकान्त "ललितलड़ैती" सुमिर,
ध्यान धरि श्री विहारिनि विहारी ॥

(२३०)

देह को भोग प्रारब्ध भोगे अवश्य,
लिखि नन्दनन्दन कौन मेटे ।
फिरै गिरि कन्दरा वन विपिन नगर पुर,
डोलिवो त्याग चाहे भवन बैठे ॥
कोटि तदबीर करतो फिरै द्रव्य हित,
चाहे आनन्द सों शय्या लेटै ।

मिटै न रेख "ललितालड़ैती" करम,
माण्ड ज्योतिषि भलैं घनी भेटै ॥

(२३१)

त्याग घर बार परिवार सुख संपदा बैठि बन होय एकांत वासी।
मिटि नहीं चाहना बासना विषयरस पड़ी तन को कठिन गले फांसी।
भलें जाए जहां गन्ध मानुष नहीं, सेवतो फिरै प्रयाग कासी।
सरै क्यों काज ललितालड़ैती' अगम श्याम को मिलन नहीं खेलहां

(२३२)

फटी कोपीन जीर्ण वसन सगरे तन,
ताहूपै सन्त नहीं शँक मानैं।
दाम नहीं गांठ में, याचना तजि जिन,
फिरैं मत्त नाम-दम्पत्ति बिकानैं ॥
असन को बसन को नैक नहीं सोच मन,
सोयें नहीं ख्याल तकिया सिरानैं।
देखि जन छके छबि "ललितलड़ैती",
पिया करे उन कुशल सब उर की जानैं ॥

(२३३)

लाभ अलाभ दुख सुख में सम रहैं,
शोक चिन्ता सकल जिन विसारी।
भूत चितवैं न इच्छा भविष्यत करैं,
हाल भोगैं रची जो विहारी ॥
फटी कोपीन मानें न दुख ताहू पै,

गिनें चाह विवश सुरपति भिखारी।
रहैं छके युगल छबि "ललितलड़ैती",
नित रसिक से कामना जग निवारी॥

(२३४)

चमर सिर झूलते छत्र छाया चले,
उदय ते अस्त लौं राज भारी।
झूमते झूलते करी जिन के भवन,
कनक मन्दिर महल चित्रसारी॥
कामिनी दामिनी सी दमक चपलता,
नई छबि रूप की अति उजारी।
अन्त ह्वै "ललितलड़ैती" सब काल वश,
आदि ते ईश यह नेति धारी॥

(२३५)

नीच गृह वास जिन सोऊ देखे धनी,
तेज बल अधिक परिवार भारी।
तरुण गज गामिनी कामिनी भामिनी,
दामिनी रूप तन की उजारी॥
वसैं जा भवन ऐसी नवल सुन्दरी,
पूलहूँ भले अचरज कहा री।
सङ्ग "ललितलड़ैती" रसिक दुर्लभ,
अति भजन सुमिरण विहारिणि विहारी॥

(२३६)

श्यामा-श्याम शरण मन लेहु ।
त्रिविध-ताप ग्रह-चाल कर्म-गति मेटन हारहिं निःसन्देहु ॥
सन्तति सम्पत्ति जान गोपाल की जन मन मान गुमान स्नेहु ।
'श्यामदास' वृन्दावन बसि रहु प्रिया-प्रीतम रजधानी ऐहु ॥

(२३७)

भज मन युगललाल पद पावन ।
एक आसरो जान परम धन कलि कुल कलुष नशावन ॥
छोड़ प्रीति जग आस वृथा सब मारुथल को धावन ।
'श्यामदास' हठि सेव युगल पद चलि बस श्रीवृन्दावन ॥

(२३८)

रे मन त्याग जगत की प्रीति ।
सब तज के भज कुंवर कन्हाई बिनु स्वारथ को मीत ॥
जिन के हित अपनो हित नास्यो कीनीं अमित अनीति ।
ते सुत-दार पुकारत बैरी नैकु न मानत भीति ॥
जा सम्पति हित भ्रमत विदेशन विविध अलापत गीत ।
एक छदाम न सङ्ग चलैगो यही जगत की रीति ॥
मानुष तन धरि हरि कूं भूल्यो गए तीन पन बीत ।
"श्यामदास" सबकूं तज भज हरि हारी बाजी जीत ॥

(२३९)

सोच समझले बावरे मनुआ ! यह जग अजब तमासा है ।
बड़े भाग्य यह नरतन पाया, माया ठगिनी नासा है ॥
नारी बन गई, बेटा बन गई, देकर प्रीति दिलासा है ।
निज स्वारथ हित ऐसा मारा, मछली के गल गासा है ॥
जीवन जौबन यह क्षण-भंगुर, पानी बीच बतासा है ।
बहुत गई थोड़ी अब रह गई, बाबरे तज सब आसा है ॥
आए थे हम हरि भजने कूँ, औटन लगे कपासा है ।
'श्यामदास' बाजी तब जीते, प्रभु पलटें जब पासा है ॥

(२४०)

तेरी आयु जात बिहानी ।
दिन तो जात जगत के धन्धे सोवत रात सिरानी ॥
बालकपन खेलत खावत में नेह सुत नारि जवानी ।
वृद्धा में तृष्णा ने घेरचो काया जात सुखानी ॥
जेहिं प्रभु दियो मानुषतन हीरा वाकी सुरति भुलानी ।
"श्यामदास" अब चेत सिमर ले कृष्णनाम सुखदानी ॥

(२४१)

मधुकर बावरे ! क्यों चाटै जगगन्ध ।
लोलुप भ्रमत चंचल चहुँ ओरहिं मोह मरचो मतिमन्द ॥
निशिदन विचरत विषय व्याल मुख भजत न ब्रजकुलचन्द ।
भोगत विषय मिटत नहिं तृष्णा ज्यों घृत अनल अमन्द ॥
मलयज मेलित मधुर मृदुल अति सीतल सहित सुगन्ध ।

पद पङ्कज प्रिय पिया-पीतम को पान करहु मकरन्द॥
सील-स्नेह रसपुञ्ज मञ्जु अति परसत परमानन्द।
त्रिभुवन तृष्णा-तिमिर ताप हर दोह दरन दुख द्वन्द॥
उदित निरन्तर प्रणतारति-हर करुण-सुधा रसकन्द।
"श्यामदास" भवत्रास पास नहिं भटकत मन मयन्द॥

(२४२)

दुख में एकहिं प्रभु आधार।
दुख का साथी एक बिनु कारण ब्रजपति नन्दकुमार॥
सुख सम्पत्ति को सब जग साथी बोलत बचन सुहाये।
दुख विपदा में कौन किसी का अपने होत पराये॥
सुत दारा अरु मित्र बन्धुजन सेवक जन समुदाये।
सुख में वारत प्राण, विपत्ति में निकसत आँख बचाये॥
ज्यों बन वृक्षन बन पक्षिनको सब विधि रक्षण कीन्हों।
जरन लग्यो जब उड़त बने सब पलट न दृग कोऊ चीन्हों॥
यावत जग व्यवहार निरखि,तोऊ करत जगतकी आशा।
प्रभुहिं बिसारि सेवत जगनाते ऐसो अजब तमासा॥
प्रीति रीति जग झूंठ सबन की दुखकर क्षणिक असार।
"श्यामदास" कर आस प्रभु-पद सब दुख देत निवार॥

(२४३)

कछु ऐसो वेग है माया को सब प्राणी जग भरमावत है
रस विषयन में रतपत होकर मानुषतन जनम गंवावत हैं
सेवा को घर पर दासी हैं, सुत दारा चन्द्रप्रभा सी हैं

सुखसम्पत्ति बहु धनरासी हैं, सब भान्ति भलो सुख पावत हैं ॥
तन सुन्दर बल सुर के से हैं, यश कीरति जग नृप जैसे हैं।
कृतघ्न कुटिल पर ऐसे हैं जब देखो नैन बहावत हैं ॥
नित्य मोह चिन्ता में मरते हैं, धन संचि संचि कर धरते हैं।
तृण घटे तो प्राण निकरते हैं, हर पल बेकल से धावत हैं ॥
फिरते हो अब तक श्याम' कहां, इन विषयों में विश्राम कहां।
दीखै है, पर आराम कहां मारूथल वत् दमकावत हैं ॥
विषयों से मन को मोड़ जरा, जग प्रीति प्रतीति तोड़ जरा।
भज कृष्णनाम चित्त जोड़ जरा, नन्दलाल तुम्हें अपनावत हैं ॥

(२४४)

तब मेरे नैन यह नैन हों सांचे।
छके रहैं दिन रैन निरन्तर युगल बदन छबि अनुपम रांचें ॥
भिन्न भेद जब रहै न कछु इन पियालाल मय सब जग जांचें।
"श्यामदास" नातर सच कहिए धूरि पड़े इन हाड़न ढांचें ॥

(२४५)

तुम गोपाल मोसों बहुत करी।
नरदेही दीनी सुमिरण को, मो पापी ते कछु न सरी ॥
गर्भवास अति त्रास अधोमुख तहां न मेरी सुधि बिसरी।
पावक जठर जरन नहिं दीनों कंचन सी मेरी देही करी ॥
जग में जनमि पाप बहु कीने आदि अन्तलौं सब बिगरी।
'सूर' पतित तुम पतित उधारन अपने विरद की लाज धरी ॥

(२४६)

जो तू चाहे कि हो घनश्याम की, मुझ पर नजर पहले।
तो उसके आशिकों की खाके पा में, कर गुजर पहले।
तरीका अजब है इस इश्क की, मञ्जिल में चलने का।
कदम पीछे गुजरते हैं गुजर जाता, है सर पहले।
उसी का घर बना पहिले, दिले मोहन की बस्ती में।
कि जिसका दीनों दुनियां दोनों से उजड़ा है घर पहले।
मजा तब है कि कुर्बानी में हर इक, जिद में बढ़ता हो।
यह तन पहले, यह जाँ पहले, यह दिल पहले जिगर पहले।
न रो, ऐ आंख! तेरे "बिन्दु" मोती, गर्चे लुटते हैं।
यकीं रख यह कि उल्फत में, नफा पीछे जरर पहले।

❁ चेतावनी ❁

(२४७)

जा दिन मन पंछी उड़ि जैहैं।
ता दिन तेरे तन तरुवन के सबै पात झरि जैहैं॥
घर के कहि है बेगहिं काढ़ौ भूत भये कोऊ खैहैं।
जा प्रीतम सों प्रीति घनेरी सोऊ देखि डरै हैं॥
कहां वह ताल कहां वह शोभा देखत धूरि उड़ै हैं।
भाई बन्धु और कुटुम्ब कबीला सुमरि सुमरि पछितैहैं॥
बिना गोपाल कोऊ नहीं अपनो जस कीरति रहि जैहैं।
सो तो "सूर" दुर्लभ देवन को सत् सङ्गति में पै हैं॥

(२४८)

सबै दिन गये विषय के हेत ।
तीनों पन ऐसे ही बीते केस भए सिर सेत ॥
आंखिन अंधश्रवण नहिं सुनियत थाके चरण समेत ।
गंगाजल तजि पियत कूप जल हरि तजि पूजत प्रेत॥
रामनाम बिनु क्यों छूटेगो चन्द्र गहे ज्यों केत ।
'सूरदास' कछु खर्च न लागत रामनाम मुख लेत॥

(२४९)

भगति बिनु बैल बिराने ह्वै हो ।
पांव चारि सिर सींग गूंग मुख तब गुण कैसे गैहो ।
टूटे कन्ध सुफूटी नाकनि कौलौं धौं भुस खैहो ॥
लादत जोतत लकुट बाजिहै, तब कहं मूंड दुरै हो ।
सीत घाम घन विपत्ति बहुत विधि भार तरे मरिजैहो॥
हरिदासन को कह्यो न मानत कियो आपनो पैहो ।
'सूरदास' भगवन्त भजन बिनु मिथ्या जनम गंवैहो ॥

(२५०)

भजन बिनु है चोला बेकाम ।
मल अरु मूत्र भरो नर सबतन है निष्फल यह चाम ॥
बिन हरि भजन पवित्र न ह्वै है, धोवो आठौं याम ।
काया छोड़ हंस उड़ि जै है पड़ो रहै धन धाम ॥
अपनो सुत मुख लू धर दै है सोच लेहु परिणाम ।
'रूपकुंवरि' सब छोड़ वसहु ब्रज भजिये श्यामा-श्याम ।।

(२५१)

मन पछितैहौ भजन बिनु कीने।
धन दौलत कछु काम न आवै कमलनैन गुण चित्त बिनु दीने ॥
देखत कौ यह जगत सङ्घाती, तात मात अपने सुख भीने।
'ललित किशोरी'द्वन्द मिटै ना आनन्दकन्द बिना हरि चीने ॥

(२५२)

मुसाफिर, रैन रही थोरी।
जागु जागु सुखनींद त्याग दै,होत वस्तु की चोरी ॥
मञ्जिल दूरि भूरि भवसागर मान कूर मति मोरी।
'ललित किशोरी'हाकिम सों डरु,करै जोर बरजोरी॥

(२५३)

मन पछितैहै औसर बीते।
दुर्लभ देह पाय हरि पद भज कर्म वचन मन ही ते ॥
सहसबाहु दशवदन आदि नृप बचे न काल बली ते।
हम हम कर धन धाम संवारे अन्त चले उठि रीते ॥
सुत वनितादि जानि स्वारथरत ना कर नेह इन्हीं ते।
अन्तौ तोंहि तजैंगे पामर तू न तजै अब ही ते ॥
अब नार्थांहि अनुराग जाग जड़ त्याग दुराशा जीते।
बुझै न काम अगिनि'तुलसी'जिमि बिषयभोग बहु घी ते ॥

(२५४)

ममता तू न गई मेरे मन ते ॥
पाके केस जनम के साथी लाज गई लोकन ते।

तन थाके कर कम्पन लागे ज्योति गई नैनन ते ।।
स्रवन बचन न सुनत काहू के सब बल गये इन्द्रिन ते ।
टूटे दसन बचन नहीं आवत शोभा गई मुखन ते ।।
कफ पित बात कण्ठ पर बैठे सुतहिं बुलावत कर ते ।
भाई बन्धु सब परम पियारे नारि निकारित घर ते ।।
जैसे शशि मण्डल बिच स्याही छूटे न कोटि जतन ते ।
'तुलसीदास' बलि जाऊं चरण में लोभ पराये धन ते ।।

(२५५)

जाके प्रिय न राम बैदेही ।
सो छांड़िये कोटि बैरी सम, यद्यपि परम स्नेही ।।
तज्यो पिता प्रह्लाद, विभीषण बन्धु भरत महतारी ।
बलि गुरू तज्यो कन्त ब्रजवनितन भये मुद मङ्गलकारी ।।
नाते नेह राम के मनियत सुहृद सुसेव्य जहां लौं ।
अञ्जन कहा आंखि जेहि फूटै बहुतक कहौं कहां लौं ।।
'तुलसी' सो सब भांति परमहित पूज्य प्राण ते प्यारो ।
जासों होय स्नेह रामपद एतो मतो हमारो ।।

(२५६)

लाभ कहा मानुष तन पाये ।
काय बचन मन सपनेहु कबहुँक घटत न काज पराये ।
जो सुख सुरपुर नरक गेह बन आवत बिनहिं बुलाये ।
तेहि सुख कहं बहु जतन करत मन समुझत नहिं समुझाये।।
पर दारा पर-द्रोह, मोह बस किते मूढ़ मन भाये ।

गरभबास दुखवासि जानता तीव्र विपति बिसराये ॥
भय, निद्रा, मैथुन, अहार सबके समान जग जाये।
सुर दुरलभ तनु धरि न भजे हरि पद अभिमान गंवाये ॥
गई न निज पर बुद्धि शुद्ध ह्वै रहे न रामलव लाये।
"तुलसीदास" यह अवसर बीते का पुनि के पछिताये ॥

(२५७)

काहे भजन करत सकुचात।
परधन परदारा चितवत तब कहि क्यों न लजात ॥
मिथ्यावाद–विवाद बकन को फूल्यो फिरत कुजात।
फूल्यो कर्म भरमहिये बाढ़यो तजि अमृत विष खात ॥
डहक्यो आई याई भल अवसर,भक्ति विमुख भयो गात।
सहज सिराय गई माया में बहुत गए पछतात ॥
पाछै गई यसु जान ही दै रे अब सुन लै यह बात।
हरिगुण गाई नाच निर्मम ह्वै 'व्यास' लखी यह घात ॥

(२५८)

कियो गोपाल को सब होई।
जे अपनो पुरुषारथ माने अति झूंठो है सोई ॥
साधन मन्त्र-जन्त्र उद्यम बल ये सब राखो धोई।
जो कछु लिखि राख्यो नन्दनन्दन मेटि सके नहिं कोई ॥
दुख सुख लाभ अलाभ सहज तुम कतह मरत हो रोई।
"सूरदास" स्वामी करुणामय, श्याम चरण मन पोई ॥

(२५९)

अगम अगोचर लीला लाल की ।
कर्म करायें धरायें देह पुनि डारत फांसी काल की ॥
काम क्रोध मद लोभ विविध गति दरसावत माया जाल की ।
करुणा करि पुनि ज्ञान भक्ति दै रेख मिटावत भाल की ॥
"केलि सखी" कछु रीति निराली शरणागत प्रतिपाल की ।

(२६०)

लीला अगम अपार तिहारी ।
नेंक न पायो पार काहू ने यतन करत ऋषि-मुनि मति हारी ॥
कबहुँ तो ब्रज में नन्द के आंगन खेलत खेल अमित सुखकारी ।
नाचत फिरत तनिक दधि कारण क्षीरधिपति करुणा वपुधारी ॥
भव भय भञ्जन कांपत भय सूं निरखि लकुटि भृकुटि महितारी ।
मुख मंह विश्व त्रिगुण विस्तारचो देखत यशुमति चित्र सी ठाढ़ी ॥
नेति नेति निगमागम गावैं अच्युत अजर अमर अविकारी ।
लूंठन खात लख्यो वृन्दावन प्रबल प्रेम महिमा विस्तारी ॥
जगत नचावत कठपुतलीवत सोई नाचत नचवत ब्रजनारी ।
'श्यामदास' स्वामी नटनागर सोई जानै निज खेल खिलाड़ी ॥

(२६१)

मन लागो मेरो यार फकीरी में ।
जो सुख पावों नाम भजन में, सो सुख नांहि अमीरी में ॥
भला बुरा सब को सुनि लीजे, करि गुजरान गरीबी में ।
प्रेम नगर में रहनि हमारी भलि बनि आई सबूरी में ॥

हाथ में कूंड़ी बगल में सोटा, चारों दिसा जगीरी में।
आखिर यह तन खाक मिलैगा कहा फिरत मगरूरी में।
कहत "कबीर" सुनो भाई साधो, साहिब मिलै सबूरी में।

(२६२)

रमैया की दुलहिन लूटा बाजार।
सुरपुर लूट नागपुर लूटा, तीन लोक मचा हाहाकार।
ब्रह्मा लूटे महादेव लूटे, नारद मुनि के परी पिछार॥
स्त्रिङ्गी की मिङ्गी करि डारी,पारासर के उदर बिदार।
कनफूका चिदकासी लूटे, लुटे जोगेसर करत बिचार॥
हम तो बचिगे साहब दया से,शब्द डोर गहि उतरे पार।
कहत'कबीर'सुनो भई साधो,इस ठगनी से रहो हुसियार॥

(२६३)

गैर मुमकिन है कि दुनियां, अपनी मस्ती छोड़ दे।
इसलिये दिल ! तू ही यह, बेकार बस्ती छोड़ दे॥
तू न बन्दा बन खुदा का, और खुदा भी तू न बन।
हस्तिये उल्फत में मिल जा, अपनी हस्ती छोड़ दे॥
खूब तरसाया है तेरी, ख्वाहिशों ने ही तुझे।
तू भी अब इन ख्वाहिशों को, कुछ तरसती छोड़ दे॥
तुझको भी मन्सूर सा, मशहूर होना है अगर।
जानो दिल देने में अपनी, तङ्गदस्ती छोड़ दे॥
"बिन्दु" आँखों के तेरे, दिखलायेंगे फस्ले बहार।
भर के आहों की घटाओं को, बरसती छोड़ दे॥

❀ लीला--माधुरी ❀

जन्माष्टमी

(२६४)

आज श्री गोकुल बजत बधाई ।
पूत सुपूत नाथ त्रिभुवन का जायो यशुमति माई ।।
पुत्र भयो यशुधा सुनि अंगना जुर मिलि दौड़ी आई ।
अति अनन्द ब्रजचन्द निरखि मुख निज-निज भाग मनाई।।
नव ब्रजनारि शृङ्गार साज तन मिलि बैठी अंगनाई ।
गावत मङ्गलचार गारिरस सुनि रानी हर्षाई ।।
होवत आनन्द भवन भवन में रतन भूमि निधि छाई ।
'ललितलड़ैती' पायो प्रीतम छबि-निधि कुंवर कन्हाई ।।

(२६५)

आज सकल ब्रज नवनिधि छाई ।
नन्दराय घर ढोटा जायौ पूरण परमानन्द कन्हाई ।।
छिरकत दूध दधी घृत माखन गावत मङ्गल गीत बधाई ।
मृगनैनी नव तरुण भामिनी नाचत आंगन भीर सवाई ।।
मगन महिर आनन्द जन्म सुत देत दान मणि रतन लुटाई ।
'ललितलड़ैती' ललित-ललन दोऊ अचल रहो त्रिभुवनसुखदाई।।

(२६६)

आज महिर घर बजत बधाई ।
अति उमङ्ग सूं रागरङ्ग ह्वै सुत जायो है यशुमति माई ।।

मेघवर्ण मुखचन्द्र मुकुट सिर, पीताम्बर काछे सुखदाई
वैजन्ती माला उरधारे आभूषण पहिरे छबिछाई
द्वारे भीड़ गोप गोपिन की महिमा कुछ बरणी नहिं जाई
नाचत तरुण वृद्ध और बालक दधि गोरस की कीच मचाई
वन उपवन छाई हरियाली फूले फले अधिक अधिकाई
सरिता उमड़ि चली या सुखसों पक्षिन बोली अधिक सुहाई
नगर-नगर अरु गांव-गांव घर मङ्गलचार सबन हि मनाई
विप्रन यज्ञ आरम्भ कराये दान मान बड़ियाई पाई
एक ओर उरवशी आदि सब सुरपुर अंगना नृत्य रचाई
"ललितलड़ैती" आनन्द छायो निरखन कूं वसुधा सब धाई

(२६७)

आज महरि घर देउरी बधाई ।
शुभ लक्षण सुन्दर सुत जायो, बड़ भागिनि है यसुमति माई
वृद्ध वधू सब जुर मिलि आईं, यथा योग्य कुल रीति कराई
दान मान विप्रन को दीन्हों, मणि मुक्ता पट भूषणताई
मृगनयनी कल कोकिल बयनी, करि शृङ्गार बैठी अंगनाई
लै लै नाम नन्द यशुमति को, गावत गारी परम सुहाई
ध्वज पताक तोरण मणिजाला, द्वारन बन्दनवार बन्धाई
'नारायण' ब्रज आनन्द छायो, प्रगट भये जहां कुंवर कन्हाई

(२६८)

हौं इक नई बात सुनि आई ।
महिर यशोदा ढोटा जायो, घर घर बजत बधाई ॥

द्वारे भीर गोप गोपिन की, महिमा वरणि न जाई ।
अति आनन्द होत गोकुल में रत्न भूमि निधि छाई ॥
नाचत तरुण वृद्ध अरु बालक, गोरस कीच मचाई ।
"सूरदास" स्वामी सुखसागर, सुन्दर श्याम कन्हाई ॥

(१६९)

शोर घनेरो री नन्द द्वारे ।
गोकुल सिगरो गूंजि उठ्यो है बाजत बीन नगारे ॥
मात यशोदा के लाला भये हैं तीन लोक सूं न्यारे ।
गोपिन भीड़ जुड़ी नन्दजू के कहत वधाई बाबा रे ॥
नाचत गावत गोप ग्वाल मिलि सुर मुनि आये सारे ।
नन्द के आंगन कीच दधी की छूटत क्षीर फुंवारे ॥
नन्द आनन्द सूं डोलत इत उत भूषन वसन सम्भारे ।
मागध सूत बन्दीजन ब्राह्मण दान लेत सब हारे ॥
धन्य यशोदा कूख जा प्रगटे जग उपजावन वारे ।
"श्यामदास" स्वामी करुणाकर भक्तन के रखवारे ॥

पलना

(१७०)

झूलत पालने ब्रजचन्द ।
मुखकमल निरखत सखीजन हीय परम आनन्द ॥
दधि विलोवत काढ़ माखन स्वाद मिश्री कन्द ।
अधिक रुचि अंगुरिन चटावे महिर आनन्द कन्द ॥

कण्ठ "ललितलड़ैती" कठला मुक्तमाल गोविन्द ।
छबि बिलोक अलौक जननी भूली सब दुख द्वन्द ॥

(२७१)

झूलत आनन्दकन्द नन्दनन्द पलना ।
गावत लीला अनूप ब्रज की नव ललना ॥
भूलीं सुधि सबरी तन कित घर कित चलना ।
देखि छबि "ललितलड़ैती" मिटि जगत कलना ॥

(२७२)

नन्दनन्दन शोभासदन झूलत हैं पलना ।
रूपसुधा पान करत तरुण नई ललना ॥
हमहूँ सुख लूटन हित नन्द भवन चलना ।
मेंड तजि "ललितलड़ैती" छबि गोविन्द मिलना ॥

राधाष्टमी

(२७३)

बरसाने आनन्दनिधि आई ।
पुण्य पुञ्ज कीरतिरानी के शुभ लक्षण यह कन्या जाई ॥
भुवन भुवन ते सज सज सजनी ललित वचन निरखनकूं धाई ।
बाजत विविध भांति मृदु बाजे नाचत गावत तरुण लुगाई ॥
अति उमङ्ग सूं राग-रङ्ग ह्वै जहां-तहां पुर बजत बधाई ।
"ललितलड़ैती" अति जिय भावत यह जोड़ी ब्रजजन सुखदाई ॥

(२७४)

भानु भवन चल देउरी बधाई ।
जन्म लियो कीरतिरानी के श्रीराधा छबि कहि न जाई ॥
देवलोक भूलोक रसातल ऐसी सुन्दरि सुनी न गाई ।
'ललितलड़ैती' ललना लालन यह जोरी त्रिभुवन सुखदाई ॥

(१७५)

बड़भागिनि है कीरति माई ।
प्रगटी जासु कूख श्रीराधा दरस किए बाधा मिट जाई ॥
फूली फिरत यशोदा रानी कियो चहत नन्दलाल सगाई ।
"ललितलड़ैती" ललना लालन जोरी विधना भली बनाई ॥

(१७६)

आज भानुपुर बजत बधाई ।
घर-घर मङ्गल राग-रङ्ग ह्वै भानु भुवन आनन्दनिधि आई ।
धन्य कूख रानी कीरति की रूप अनूप सुता यह जाई ।
'ललितलड़ैती' ललना लालन सुन्दर जोरी अति मन भाई ॥

(१७७)

आजु बधाई है बरसानैं ।
कुंवरि किशोरी जन्म लियो है सब लोक बजे सहदानैं ॥
कहत नन्द वृषभानुराय सों और बात को जानैं ।
आजु भैया हम सब ब्रजवासी तेरेई हाथ बिकानैं ।
या कन्या के आगे कोटिक बेटन को अब मानैं ॥
तेरे भलैं, भलौ सबही को आनन्द कौन बखानैं ॥

छैल छबीले ग्वाल रङ्गीले हरद रहै लपटानें।
भूषण बसन विविध पहिरे तन गनत न राजा रानें ॥
नांचत गावत प्रमुदित ह्वै नर नारिनु को पहिचानें।
'व्यास'रसिक सब तन मन फूलै नीरस सब खिसियानें ॥

पलना

(२७८)

कीरति कुंवरि पालने झूले ।
मृदु मुस्कान मनोहर चितवन निरखि-निरखि मुख रानी फूले ॥
ऐसो कौन दिवस ह्वै हेली प्राणनाथ ब्रज जीवन मूले ।
'ललित लड़ैती' नयनन निरखौं करत विहार कलिन्दी कूले ॥

(२७९)

आज लाड़िली पलना झूले ।
रङ्ग महल रचना विधि अद्भुत,
निरखि निरखि मन ही मन फूले ॥
अष्ट सिद्धि नव निद्धि की स्वामिनि,
कीरति-बेलि मान ताहि भूले ।
"ललित लड़ैती" दुलहिन गोरी,
रसिया लाल सांवरे दुलहे ॥

दान-लीला

(२८०)

मोहन तुम कबके भये दानी ।
हम या गैल जात दधि बेचन, रोकत नारि बिरानी ॥
ठड़े रहौ न धरौ पग आगे, बात जिये की जानी ।
"ललित लड़ैती" दान लेन मिस प्रेम प्रीति उर ठानी ॥

(२८१)

बिना बात यों रारि बढ़ाई ।
हम निज कर मांगत रिसात तूं जाने का तेरे जिय आई ॥
घने दिनां चोरी दधि बेच्यो, आज अचानक भेटन पाई ।
"ललित लड़ैती" दान न छूटै चाहे करे केती सुघराई ॥

(२८२)

मैं आज जल को गई कालिन्दी,
सखी सहेली बुला बुला कर ।
मिल्यो डगर में वह छैल रसिया,
सखा सों बोला बुझा बुझा कर ॥
"हो चेत तुरतहि रोको मारग,
न जान पावै वह यूथ सखियन ।
हमारो लागत है कर वे मेटत,
थका उन्हें मैं जता जता कर ॥
चुकाऊं सब दिन को कर जभी अब,
तभी कहलाऊं मैं दधि का दानी ।

सखा ! सखिन कूं यह आज्ञा मेरी,
　　　　सुनाओ हिल सूं दृढ़ा दृढ़ा कर ।।"
सुनाई आज्ञा सखा ने सखियन,
　　　　वे श्याम सुन्दर समीप धाईं ।
भलो हि गांव जहं भोरी युवतिन सूं,
　　　　मांगत हो कर चुका चुका कर ।।
"यह नन्द बाबा को गांव बाजत,
　　　　बिना दिये कर न जान पावो ।
तुम आवत हो सबरी नित या मारग,
　　　　चलत हो दृष्टि बचा बचा कर ।।
तुम पुर की बनितन सों बूझ देखो,
　　　　न सांच आवै कही हमारी ।"
यह सुन हंसी, देत कर मुदित ह्वै,
　　　　नवत चरण शिर झुका झुका कर ।।
निहारि मोहन की मोहनी छबि,
　　　　रही न सुधि तन असन बसन की ।
न जात घर को खड़ी चित्रवत,
　　　　स्नेह पति सुत भुला भुला कर ।।
धरत न धीरज बहावै आंसू,
　　　　पड़त बिकल हो अचेत धरणी ।
वा नन्द-छोना ने हर लियो मन,
　　　　बचन अमीरस पिला पिला कर ।।

अपार महिमा न पार पावैं,
विरंच शिव आदि तत्व ज्ञानी ।
इक दृष्टि में ही वह मोहै त्रिभुवन,
अनोखी वंशी बजा बजा कर ॥
वह क्षीर सागरपति चाहत कर,
चरित्र लखि मोंहि आवै अचरज ।
"ललित लड़ैती" वह दान मांगत,
प्रभाव भक्ति दिखा दिखा कर ॥

माखन-चोरी

(२८३)

वाकी चौकसी कैसे करूं मैं ना जानूं कितसों वह आवै ।
अचक अचक पग धरत द्वार पै नूपुर की धुनि होन न पावै ॥
उझकि उझकि इत उतमें झांकिके, फिर सैनन निज सखा बुलावै ।
छींके धरी कमोरी माखन, अंगुरी सों पुनि तिन्हें बतावै ॥
वस्तु चोर हो ताकूं पकड़े, चाहै जितौ बलवान कहावै ।
'नारायण' वा चित्त के चोर सों, काहू की न कछू वशियावै ॥

(२८४)

मोकहं झूठेहु दोष लगावहिं ।
मैया, इन्हहिं बानि पड़ी पर गृह की नाना युगुति बनावहिं ॥
इन्हके लिए खेलिबौ छांड्यौ तऊ न उबरन पावहिं ।
भाजन फोरि, चोरि कर गोरस देन उरहनो आवहिं ॥
कबहुँक बाल रोवाइ पानि गहि मिस कर उठि-उठि धावहिं ।

करहिं आपु सिर धरहिं आनके वचन विरंचि हरावहिं ॥
मेरी टेव बूझि हलधर सों सन्तत सङ्ग खेलावहिं।
जे अन्याउ करहिं काहू को ते सिसू मोंहि न भावहिं॥
सुनि सुनि वचन चातुरी ग्वालिनि हंसि हंसि वदन दुरावहिं।
बाल गोपाल केलि कल कीरति 'तुलसीदास' मुनि गावहिं ॥

विजय-दशमी

(२८५)

शीश महल राजत ब्रजनाथ ।
शुभदिन मान विजय-दशमी को,धनुष बाण लीने दोऊ हाथ ॥
सोहत तन जरतारी बागो, फूल माल उर पगिया माथ।
"ललितलड़ैती"फूली अंगन,देखि नई छबि पिया इकसाथ ॥

रास-लीला

(२८६)

आज रचो रस रास विहारी ।
जैसोई वृन्दाविपिन सुहावन, तैसेहि शरद रैन उज्यारी ॥
यमुना तीर पुलिन की शोभा,फूलि रही चहुँ दिशि फुलवारी ।
चलत पवन मनमोद बढ़ावन,शीतल मन्द सुगन्धित प्यारी ॥
निरतत लाल सहित ब्रजवाला,चपल-चतुर लै-लै संग न्यारी ।
बजत अनेक भांति मृदु बाजे, परम प्रवीन बजावन वारी ॥
कोऊ सखी सुर द्रुगन अलापत,करत बड़ाई लाल गिरधारी ।
नाचत सुमुन झरत हैं शीस ते, मुख श्रम बिन्दु देत छवि न्यारी ॥

कबहुँ श्याम विलग ह्वै नाचत,ताल देत मिलि गोपकुमारी ।
'नारायण'नभते सुर निरखत,बरषत फूल सहित निज नारी ।।

(२८७)

आज गोपाल रास रस खेलत,पुलिन कल्पतरु तीर री सजनी ।
सरद विमल नभ चन्द्र विराजत,रोचक त्रिविध समीर रीसजनी।।
चम्पक बकुल मालती मुकलित,मत्त मुदित पिक कीर री सजनी ।
देसी सुधंग राग रंग नीको, ब्रज युवतिन की भीर री सजनी ।।
मघवा मुदित निसान बजावत,व्रत छांड्यो मुनि धीररी सजनी ।
'हितहरिवंश'मगन मन श्यामा,हरत मदन मन पीर री सजनी ।।

(२८८)

जादुगर श्याम नट नागर सुनाम ने,
जादु हूसूं काम लीन्हों बांसुरी बजान में ।
अचल-सचल धुनि सुनी तो सकल ने,
गुनी नहिं सार रही कानहि की कान में ।।
बांसुरी सुनी पै जब भोरी वनितान ब्रज,
मचि गो कुहराम इक आनहि की आन में ।
'ललित बिहारिणि'वह चली मतवारिन सी,
कान दिये तान पै जान नहिं जान में ।।

(२८९)

बांसुरी की भनक के कानन में पड़तहि,
जोई जस रही सोई धाई तस रीति में ।
तन को सम्भार भूल्यो, कुल को खम्भार भूल्यो,

काल को विचार भूल्यो यामिनि भयभीत में ॥
चली वरवश होके, रुकीं न काहू के रोके,
विवश कुरङ्ग जिमि सारङ्गि के गीत में ।
"ललित विहारिणि" वह पीवन पियूष पहुँची,
प्राणन ते प्यारे पिया प्रीतम की प्रीत में ॥

(२६०)

सवेत पति को एक भोजन करत एक,
एक धाई बालक पिवाम्तो विहाये के ।
अञ्जतहि अञ्जन एक ठाढ़ी दृग कञ्जन में,
कुञ्जन में धाई ले सलाई हूँ उठाये के ॥
असन वसन तन धारे विपरीत सुद्धि,
भूली हर एक चली एक सूं दुराये के ।
"ललित विहारिणि" हर एक मन चाहे यों,
सब से प्रथम मिलूं मोहन सों धाये के ॥

(२६१)

बावरी सी धाई जात, गिरत पड़त जात,
विद्युत सी द्युति वारी सारी व्रज नारी हैं ।
कारे कारे केश खुले, कुसुम झरत जात,
वसन उड़त जात नैक न सम्भारी हैं ॥
इन्दु से बदन पर सेद बिन्दु शोभ रहीं,
एक एक पग कोटि योजन विचारी हैं ।

"ललित बिहारिणि" हुलास हिये भारे सों,
आई जित ठाढ़े व्रजवारे बनवारी हैं ॥

(२९२)

ललित कूल यमुना को, ललित फूल फूल रहै,
ललित बहु लतान कुञ्ज ललित हो सुहाम्तो ।
ललित-शरद रैन, चन्द ललित द्युति अमन्द छाई,
ललित हो समीर बहत मदन मन ढाम्तो ॥
ललित-नन्द नन्द को, ललित छवि अमन्द सूं,
ललित बदनारबिन्द, ललित मुस्काम्तो ।
"ललित बिहारिणि" वह ललित बिहारी ठाढ़ो,
ललित त्रिभङ्ग वंसी ललित हो बजाम्तो ॥

(२९३)

[लालजी वचन]

हे व्रज नागरि रूप उजागरि हे तरुणी नवगात कुमारी ।
कहा भयो सब इत मिलि धाईं,परम एकांत या रात उजारी॥
दीखपड़ो सबबावरी सी और राबरी सुद्धि नहिं जात संभारी ।
'ललित बिहारिणि'सत्य कहौ,व्रजमें उत्पात भयो कहा भारी॥

(२९४)

सास ननन्दया सूं रार भई,धौं भई पतिसों तकरार तुम्हारी।
धौं वन कुञ्जन बेचत गोरस,वस्तु प्रिये कोऊ भूलि विसारी॥
आतुर मन घर झंझट सों धौं,टहलहु इत लखि रैन उजारी।
'ललित बिहारिणि'सत्य कहौ,तुम आई इतै मन काह विचारी॥

[गोपी-वचन]

(२९५)

हे नन्दकुमार हे प्राण-अधार, गोपीजन बल्लभ सत्य सदाहिं।
सबके मन की तुम जानत हो, हे नन्द दुलारे विभु जग माहिं॥
कान्ह! अजान बने न कहो जू, कौन हितै तुम इतै मिल धाहिं।
'ललित विहारिणि' सत्य कहौ चित चोर कहा तुम जानत नाहिं॥

(२९६)

आप तो कान्ह अजान बनों, अरु जानत है तोरी बांस की बंसी।
बंसी बजी है कि घनसी गजी है, नैक तो पूछो या प्राणनध्वंसी॥
जालिम सौत यह लई बुलाय के, लाय हिये हाय हाय अगनिसी।
'ललित विहारिणि' आपहूँ कूं अब, सूझि है प्राण विनाश की हंसी॥

(२९७)

कान्ह सुजान यह बांस की बंसी, जाने अजानेहु जाने सुनी है।
बावरोह्वै तलफाय उठ्यो, इक बार धौं योगी चाहे मुनी है॥
सर्वस और विहाय के धायो, चोट लगी जो असी सी गुनी है।
'ललित विहारिणि' भौनरहैं कस, चोर लियो चित बंसीध्वनीहै॥

[लालजी वचन]

(२९८)

हे व्रज गोरी भोरी अहो तुम, मोरी सुनो चित धीरज धारे।
केतिक बार बजी यह सुनी तुम, धाई न आज लौं सुरति बिसारे॥
धेनु चढ़ावत बेनु बजावत गावत, धावैं या यमुन किनारे।
'ललित विहारिणि' वीर अहीर हम, ऐसी पड़ी कुछ बान हमारे॥

(२९९)

बजी सो बजी औ सुनी सो सुनी,
औ भजीं सो भजीं अब भौन पधारो।
निशीथ उजारी यहां पर पुरुष सूं,
प्यारी रहब नहिं उचित तुम्हारो॥
सर्वस जान पतिन पद सेवो,
जाय भवन निज सुवन सम्भारो।
'ललित बिहारिणि' नारिन को अस,
धर्म जो वेद पुराण उचारो॥

(३००)

कुमति कुशील कुटिल कपटी धौं,
कुसङ्गी पति सोऊ ईश्वर जानो।
ध्याओ पती कहँ पूजो पती कहँ,
पती हित जप तप संयम ठानो॥
जो मम पै तुम प्रीति घनेरी तो,
मेरो स्वरूप चितै दृढ़ आनो।
'ललित विहारिणि' मेरो स्वरूपहि,
जान पती कहँ सर्वस मानो॥

(३०१)

[गोपी-वचन]

व्रजचन्द्र निरखि मुखचन्द्र कूं,चन्द्रहुँ मंद हो लागत फीको।
व अरविन्द वचन मकरन्द सो,मोहत मन मुनिवृन्द अली को॥

जो मुख को अधरामृत लहि नित, चित्त अघात न कमला सी को।
'ललित बिहारिणि' आज यह बैन, कठोर उचारत लाग न नीको ॥

(३०२)

बंसी बजाये बुलाय लईं और, बावरी भई लखि रूप तिहारो।
करि कमलाक्षिन कोर कटाक्षन, काम कृषानुसों या तन जारो॥
सींचो पियाय अबै अधरामृत, चित्त मनोरथ पूरो हमारो।
'ललित बिहारिणि' बैन कठोर-कुठार चलाये न अबलन मारो॥

(३०३)

भौनके गौनकी बात कहा हम कूँ सब जगत अंधेर सो लागे।
प्राणन तें तुम प्यारे लला कहौ, पूत पति केहिं लेखे अभागे ॥
देह अरु गेह से नेह विसारिके, लाज जगत कुल कानिहु त्यागे।
'ललित बिहारिणि' चितचुम्बकमणि आईं हैं तुवपदपद्म अनुरागे॥

(३०४)

चंचल चित्त-चोर चपल-चितवन, इक बेर अहै जाने टुक हेरी।
सबछोड़के नाथ वह तेरो भयो, सुद्धि भूलि गयो तन-मन-जग केरी
पाय प्रत्यक्ष पति पर-पुरुष, कहौ कित जायें हम चरण न-चेरी।
'ललितबिहारिणि' सो मतिमंद जो त्याग तुम्हें गहै कामकी ढेरी॥

(३०५)

दृग-दीठ अड़ी छबि अनुपम में,
अरु बंसी ध्वनि कियो भौन हूँ कानि।
मन्द हसन हठि लूटत प्राणन,
चित्त उरझो अलकें लटकानी ॥

पद एकहूँ तिल भर नाहिं टरैं,

हैं"ललित बिहारिणि"प्रेम दिवानी ।

अब वेग हे नाथ ! सनाथ करहु,

बिनु मोल अहैं तुम हाथ बिकानी ॥

(३०६)

प्राण अधार हम अबलन को,

कहौ प्रीतम तुम बिन कौन अहैगो ।

नाशहु लागी दुसह मदनागी,

तुम नाहिं करहु, तन नाहिं रहैगो ॥

ललक-ललक या तन तजि हैं,

तुम्हरो यश लै यमुना में बहैगो ।

'ललित बिहारिणि' प्रीतिकी मूरति,

प्रीति को पथ पुनि कौन गहैगो ॥

(३०७)

[गोपी-वचन]

हे हे व्रजचन्द्र गोविन्दनाथ हे वृन्दावन रखवारे ।

गोपुर ते अधिक सनाथ कियो व्रज प्रगटे कृष्ण-मुरारे ॥

दीनन दीह दुःख दरन हेतु भू हरन सकल खम्भारो ।

शरणागत दुख हरन हेतु प्रभो भो अवतार तुम्हारो ॥

पुनि काहे गही निठुराई विकल दर्शन बिनु हम अबला ।

छबि स्वाति बिन्दु की प्यासी दासी हम चातक व्रजनवला ॥

हम व्रजवासिन के हेतु नाथ ! तुम अका बका मारचो ।

सो गेंद ब्याज अहि नाथि विषम विष जमुना ते काढ्यो।
हमरे रक्षण प्रभो ! आप तहाँ झट दावानल टारी।
अब हरन चहो क्यों प्राण हाय या बिरहानल जारी।
बङ्क विलोकिन बान बिंधे उर घालत अति भारे
सबहि अङ्गन विष पूरि कुटिल कुन्तल अहि से कारे।
हा सकल अरि हरि ! मारे भयो तुम्हरे कहा श्रम भारो
करि कै भुज भरि गल कंठ न क्यों या मदन अरी मारो।
हा कण्टक वन यह कुञ्ज करील पद कोमल सुकुमारे
दूखत ह्वैगे हाय हाय यह सोच जियहिं भारे।
जब धेनु चरावन हेतु बनैं तुम जावत गोपाला।
सोहै सुन्दर शृङ्गार मुकुट मणि मुक्ता बन माला।
कर लकुटि अधर धर वेणु बजावत मनहर कल रागा
नैनन सैन चलाय जनावत हम हित अनुरागा।
ताहिं समय पद कुञ्ज बरहैने निरखि न कल पड़ती
नैनन चलहिं बिछाय सङ्ग बन ऐसो मन करतो।
यह विचार नहिं भवन काज जिय नेक लगत प्यारे
कई बार दरस हित उझकत हैं हम बाहर के द्वारे।
जबहिं बगदत तुम भौन धरे गोरज पलकन अलकन में
तब छकी मधुर रस रूप शान्ति पड़ती जियकी ललकन में।
हा हा सुमिरत वह प्रीति चलीं ह्वै क्षार जलत छतियां।
हा आजहि के दुख हेतु हती वह प्रीति सनी बतियां।
जो ऐसो हो दिल बीच कपट तुम्हरे मन के कारे

क्यों राखै हम प्राण कोप जब सुरपति कियो भारे ॥
कहौ कौन हेतु दिन रैन सात लौं गिरिवर कर धारचो ।
होतो तब सो सुखमरण न क्यों गिरि नीचै दै मारचो ॥
करै सहाय कौन विरह सागर हम डुबतिन को ।
है प्राणन को आधार तेरे बिन को व्रज युवतिन को ॥
हे गोपीजन-नाथ प्राण पिया मोहन कृष्ण मुरारे ।
जो भई सो भई अब वेग मिलहु प्रभो करुणा चित्त धारे ॥
जग मङ्गल चरितामृत को हम जीवति रहिं गा गाय ।
अब जान चहत ये प्राण, नाथ कछु करिये आन उपाय ॥
एक बेर जिन कह्यौ प्रभो मैं हो शरणागत तेरी ।
तुम बिके नाथ उस हाथ विपत्ति करि नाश न की कछु देरी ॥
हम तजी जगत की लाज कानकुल प्रीति सकल बन्धुन की ।
सब तज्यो स्वामि तुम हेतु चेत नहिं रही नैंक तनमन की ॥
है 'ललित विहारिणि' शरणागत, प्रतिपाल चहौ सो कीजौं ।
तज्र प्राण विरहमें मिलहिं आन तब चरण शरण रख लीजौं ॥

(३०८)

[लालजी-वचन]

प्रीति धन रावरे को ऋण अति बाढ़ो सिर,
जान नाहिं पाऊं करि कैसे यह चुकीजिये ।
बार बार काहे को लजाओ हो गरीब मैं,
भावै राज त्रिभुवन तो गिरवी रख लीजिये ॥
मूलधन देवे कूं कदापि न समर्थ जान,

मोकों रख सूद में उऋण लिखि दीजिये।
"ललित विहारिणि" सेठानी व्रजधाम की,
'श्याम' तो गुलाम पद जौलौं जग जीजिये॥

(३०९)

मण्डलाकार किये मधूर सुरतान सूं,
नाचि नाचि प्रेम वश सुरति भुलात हैं।
सारी कर तारी देत नूपुर की झनकारि,
विरहा विसारि हिये अति हुलसात हैं॥
रसिक बिहारी जू अनेक रूप धारि के,
गोपिन के मध्य एक-एक हो दिखात हैं।
'ललित विहारिणि' ज्यूं कंचनकी बेलि फूलि,
बीच बीच सुन्दर तमाल से सुहात हैं॥

(३१०)

अनूप रास मण्डल की ललित छबि दृगन में,
चकाचौंध देत कछु ऐसी जिये भावै है।
श्याम-घनश्याम घन माहिं बहु बीजुरी सी,
गोपिका लसत अति लोनी छबि छावै है॥
माल पुखराजन में बीच बीच नीलमणि,
मानहु मध्य तारन राकेन्दु दमकावै है।
"ललित विहारिणि" अनेक श्रुति मध्य मानहु,
एको परब्रह्म कृष्ण अच्युत सुहावै है॥

(३११)

जै श्री रासबिहारी वृन्दावन रास रच्यौ ।

मञ्जुल सघन पुलिन यमुना तट—

लोनी लोनी लतन ललित बंसीबट ।

त्रिविधि पवन सुखकारी—वृन्दावन रास रच्यौ ।

पूरन चन्द अमन्द छबि छाजत—

शरद रैन उर सुख उपजावत,

मदन मोहन मन हारी—वृन्दावन रास रच्यौ ।

चहुँदिशि सुमन सुगन्धित शोभित—

गुञ्जित अलिगण मुनि मन लोभित,

ब्रज वनिता मिलि सारी—वृन्दावन रास रच्यौ ।

बाजत सुन्दर स्वर बहु सोरङ्ग—

पणव मृदङ्ग मुरङ्ग और मोचङ्ग,

कलरव भो तहँ भारी—वृन्दावन रास रच्यौ ।

नाचत नटवर भेष कन्हैया—

तान लेत कर तत तत थैया,

पग नूपुर झनकारी—वृन्दावन रास रच्यौ ।

इक इक माधव इक इक गोपी—

गोपी माधव माधव गोपी ।

नाचत दै कर तारी--वृन्दावन रास रच्यौ ।

केशपाश छुट कुसुम झरत हैं—

चमक दमक पट उड़त लसत हैं,

अलक ललकि लटकारी—वृन्दावन रास रच्यौ ।
इन्दुसे बदन पर स्वेदविन्दु छाजति-
मदन सदन छबि छबि छन लाजति,
मणिन माल लसकारी—वृन्दावन रास रच्यौ ।
सुमनस सुमन सुमन बहु वर्षत—
सुर ललना लखि मन मन तरसत,
धन्य भाग्य व्रजनारी—वृन्दावन रास रच्यौ ।
'ललित विहारिणि' जग नचवावत-
सुर नर मुनि जाहि पार न पावत,
नाचत सोई बनवारी—वृन्दावन रास रच्यौ ॥

दीपावली

(३१२)

आज पिया है दिवस दिवारी ।
भवन भवन में आनन्द छायो ठौर ठौर गावत व्रजनारी ॥
हमहू पट भूषण नये पहिरै सुख विलसैं हँस रस बलिहारी ।
"ललिन लड़ैती" दिन मूंदे पै दीपदान की होंय तियारी ॥

(३१३)

चौसर खेलत हैं आज, गौर श्यम रसिकराज,
ललितादिक ढिग समाज, चाल कों बतावैं ।
छक्के पंजड़ी अठारै, कबहुँ पड़त पूरे बारै,
रङ्ग रङ्ग नरद चलत, अतिहि शोभा पावैं ॥
प्यारी हिय अधिक चाव, अपनों जब पड़त दांव,

लपक झपक झटहि चोट, गोट पै चलावैं ।
प्रीतम निज देखि हार, झगड़त हैं बार बार,
'नारायण' जीति कुँवरि सन्मुख मुसिक्यावैं ॥

गोवर्धन-पूजा

(३१४)

पूजत गिरि सबरे नर नारि ।
मूंग भात को पर्वत रचि कै दूध बहावत धार ॥
गावत सुर झीनी मिल भामिनि होवत जय जयकार ।
'ललित लड़ैती' जेंवत रुचि सूं गिरिधर भुजा पसार ॥

(३१५)

करत सब गोवर्धन की पूजा ।
गिरि रचि ठौर जलेबी लाडू बीच लगावत गूंजा ॥
अचरज सिन्धु नहावत लखि सुख रती लक्ष्मी गिरिजा ।
'ललित लड़ैती' कहहिं व्रजतिय सम भाग नहीं काहू दूजा ॥

अन्नकूट

(३१६)

जेंवत गौरश्याम छबि धाम ।
रची समग्री अन्नकूट की ललितादिक व्रजवाम ॥
कढ़ी खीर फुलका अति पतरे भात केसरी नाम ।
बड़ा पकौड़ी दाल भांति बहु पावत छबि अभिराम ॥
'ललितलड़ैती' लेत ग्रास मुख हरषत पूरण काम ।
देवाङ्गना कहति देखि सुख सुरपुर कौनें काम ॥

(३१७)

हटरी बैठे श्री गोपाल ।
रतन जटित की हटरी बनी है, हीरा मुक्त रसाल ।
नाना विधि पकवान मिठाई, भर-भर राखे थाल ॥
पान फूल मेवा सौंधे धर, बांट देत नन्दलाल ।
राम बाल प्रेमाबल ललिता, व्रज मङ्गल पयबाल ॥
चलो सखी तहां पैंठ लगी है, बेचन हार गोपाल ।
सब सुन्दरि गृह गृह से निकसीं, देखन नैन विशाल ।
'गोविन्द प्रभु' प्रिया चित्त चोरत, बांध प्रेम की जाल ॥

(३१८)

बैठे श्री मोहन-बल हटरी ।
पिस्ते, द्राख, बिदाम, छुहारे, खुर्मा मोद जलेबी मठरी ॥
गृह-गृहते सब नारि मुदित मन ग्वाल बाल सब आए ठटरी ।
'सूरदास' प्रभु चिर युग जीवो, नन्द यशोमति को सुत नटरी ॥

(३१९)

दीप दान दे हटरी बैठे, नवल लाल गोवर्धन धारी ।
सुबल सुबाहु ले श्रीदामा, सङ्ग ग्वाल सब गावत गारी ॥
कंचन रतन जटत हीरा नग, विश्वकर्मा ले विविध संवारी ।
परम विचित्र बने सब सुन्दर, जगमगात को तिमिर विदारी ॥
नन्द भवन भर विविध पाक धर, अगणित मेवा गिरी छुहारी ।
बांट-बांट ले देत सबन को, शिव सनकादिक गोद पसारी ॥

आनन्द करत देत न्यौछावर, मङ्गल मिल गावत व्रजनारी।
'सूरदास' व्रजपति सुख विलसत, मोहन बदन ऊपर बलिहारी॥

गोवर्धन-लीला

(३२०)

राखि लेहु गोकुल के नायक।
भीजत ग्वाल गाय गोसुत सब विषम बूंद लागत जनु सायक॥
वर्षत मूसलधार सेनपति महामेघ मघवा के पायक।
तुम बिन ऐसो कौन नन्दसुत यह दुख दुसह मेटिबे लायक॥
अघमर्दन बकबदन बिदारन बकी विनाशन सब सुखदायक।
'सूरदास' तिनको का को डर जिनके तुम से सदा सहायक॥

(३२१)

सांवरे शरणागत तेरी। इन्द्र ने आय ब्रज घेरी॥
देखो जी यह बादर मिल आये, दामिनी दमकत भर आये।
मेघभर लोकां बरसावें, भाग अब कहो कहां जावें॥
कहो जी अब कैसे बनै परचो इन्द्र सों वैर।
कोप्यो है पृथिवी को पालक होगी किस विधि खैर॥
जुगत हम बहुतेरी हेरी॥ सांवरे शरणागत तेरी॥१॥
कही हम तुम्हारी सब मानी, भेंट गिरिवर की मन ठानी।
इन्द्र की झूंठ सभी जानी, लखी हम तुम्हरी नादानी॥
गोकुल राजा नन्द जू जा घर कुंवर कन्हाय।
वृथा वचन अब होत तिहारो जन की करो सहाय॥
यतन में नहीं लाओ देरी॥ सांवरे शरणागत तेरी॥२॥

कहत हम तुम्हरे गुण भारी, पूतना बालकपन मारी।
दुष्टनी माया विस्तारी, बनी वह सुन्दर वर नारी॥
कुच में जहर लगायकै दियो कृष्ण मुख मांहि।
एक मास को रूप तिहारो जीवति छोड़ि नांहि॥
मार कर मारग में गेरी॥ सांवरे शरणागत तेरी॥३॥
जो निर्मल जल यमुनाको कियो,तुरतहि दावानल को पियो।
अभय व्रजवासिन को कर दियो,खैंचकर मन सबको हर लियो॥
व्रज तेरी को सांवरे करै इन्द्र बेहाल।
आज सहाय करो नन्दनन्दन करुणासिन्धु गोपाल॥
शरण यह व्रजमण्डल तेरी॥ सांवरे शरणागत तेरी॥४॥
अधर हरि आपन मुसकाये, वचन यह मुख ते फरमाये।
कहो जी तुम यहां कैसे आये, सभी मिलि गिरवर पै धाये॥
नख पर गिरिवर धारिकै कियो कृष्ण ने खेल।
गोवर्द्धन के शीश पर दियो सुदर्शन मेल॥
अधर धर वंशी को टेरी॥ सांवरे शरणागत तेरी॥५॥
सोहै शिर पचरङ्गी चीरा, लगे मुख पानन को बीरा।
गले मोतिन की माल हीरा, सोहै कटि पीताम्बर पीरा॥
सात कोस के बीच में गोवर्द्धन परमान।
सात वर्ष को रूप हरि को लीन्हौं पुष्प समान॥
अशीशां दे रही व्रज तेरी॥ सांवरे शरणागत तेरी॥६॥
इन्द्र कर कोप कोप गरजे, नहीं जल गिरिवर पर बरसे।
दामिनि घन घन में चमके, कि मूसलधार पड़ी बरसे॥

बरस बरस के हारयो, तब जान्यो जगदीश।
दोनों हाथ पसारकै धरयो चरण में शीश।।
मेरी बुद्धि माया ने फेरी।। सांवरे शरणागत तेरी।।७।।
अचरभो याकौ कछु नाहिं, इन्द्र तो लाख कोटि ताईं।
बनावत पल छिन के माहिं, बिगारत देर कछु नाहिं।।
उत्पत्ति परलय जगत की गिरिधर को ही खिलौन।
'गङ्गाधर' ब्रह्मा हरि ध्यावें इन्द्र विचारो कौन।।
नाम ते काटो यम बेरी।। सांवरे शरणागत तेरी।।८।।

गोपाष्टमी

(३२२)

मैया मैं गाय चरावन जैहों।
तू कह नन्दमहर बाबा सों बड़ो भयो न डरैहों।।
श्रीदाम आदि सखा सब अपने दाऊ संग लिवैहों।
वंशीवट की शीतल छैयां खेलत अति सुख पैहों।।
'परमानन्द' प्रभु तृषा लगे जब यमुना जलहि अचैहों।।

बसन्त

(३२३)

नवल वसन्त नवल श्रीवृन्दावन नवलहिं फूले फूल।
नवलहि कान्ह नवल सब गोपी निरतत एकै तूल।।
नवलहि साखि जवादि कुमकुमा नवलहिं वसन अमूल।
नवलहि छींट बनी केसर की मेटत मनमथ शूल।।

नवल गुलाल उड़ै रङ्ग बूंका नवल पवन के झूल ।
नवलहिं बाजै बाजत 'श्रीभट्ट' कालिन्दी के कूल ॥

(३२४)

श्यामा श्याम सलोनी मूरति को शृङ्गार बसन्ती है ।
मोर मुकुटकी लटक बसन्ती, चन्द्रकलाकी चटक बसन्ती ।
मुख पर मुरली मटक बसन्ती ।
सिर पै पेंच श्रवण कुण्डल छबिदार बसन्ती है ॥श्यामा०॥
माथे चन्दन लस्यो बसन्ती, पट पीताम्बर कस्यो बसन्ती ।
मो मन मोहन बस्यो बसन्ती ।
गुञ्जमाल गले में फूलन हार बसन्ती है ॥श्यामा०॥
कनक कडूला हस्त बसन्ती, चलैं चाल अलमस्त बसन्ती ।
पहर रहे हैं वस्त्र बसन्ती,
रुनक झुनक पग नूपुरकी झनकार बसन्ती है ॥श्यामा०॥
संग ग्वालनको टोल बसन्ती, बाजै चंग ढप ढोल बसन्ती ।
बोल रहे हैं बोल बसन्ती,
सब सखियन में राधे जू सिरमोर बसन्ती है ॥श्यामा०॥
बटत प्रेम परसाद बसन्ती, लगो रसीलो स्वाद बसन्ती ।
है रही सब मरयाद बसन्ती,
'घासीराम' नाम श्री राधा सार बसन्ती है ॥श्यामा०॥

होली

(३२५)

श्यामा श्याम सूं सों होरी खेलत आज नई ॥
नन्दनन्दन को राधे कीन्हों माधव आप भई ।
सखा सखी भईं सखी सखा भये यशुमति भवन गई ॥
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ ढप नाचत थेई थेई ।
गोरे श्याम सांवरी राधे या सूरति चितई ॥
पलट्यो रूप देखि यशुमति की सुधिबुद्धि बिसर गई ।
"सूरश्याम" को वदन विलोकत उघर गई कलई ॥

(३२६)

नेक ठाड़ो रह श्याम तोपै रङ्ग डारौं ।
अबीर गुलाल मलौं मुख तेरे गालन पै गुलचा मारौं ॥
चोबा चन्दन और अरगजा घिसि घिसि के तोपै डारौं ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि तन-मन-धन तोपै वारौं ॥

(३२७)

बनि आयो रे रसिया होरी को ।
हाथ लकुटिया कांधे कमरिया माथे बेंदा रोरी को ॥
गली गिरारे ऐंडोई डोले फेंकत है चित्त चोरी को ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि रसिया राधा गोरी को ॥

(३२८)

होरी में लाज न कर गोरी ।
हम व्रज के रसिया तुम गोरी, भली बनी है यह जोरी ॥

जो हम सों सूधे नहिं खेलो, यार करेंगे बर जोरी।
'नारायण'अब निकसो द्वार पै,छूटौ नहिं बनि के भोरी॥

(३२९)

रसिया को नारि बनावौ री।
कटि लहंगा उर मांहि कंचुकी, चुंदरी सीस उढावौरी॥
गाल गुलाल दृगन बिच काजर, वेंदी भाल लगावौरी।
'नारायण' तारी बजाय के, निकट यशोमति जावौरी॥

(३३०)

होरी हो व्रजराज दुलारे।
अब क्यों जाय छिपे जननी ढिग, रे द्वै बापन वारे॥
कै तौ निकसि के होरी खेलौ, कै मुख सौं कहौ हारे,
जोड़कर आगे हमारे॥ होरी हो॥
बहुत दिनन सों तुम मनमोहन, फागहि फाग पुकारे।
आज देखियो सैल फाग की, पिचकारिन के फुहारे,
चलें जब कुमकुमा न्यारे॥ होरी हो॥
निपट अनीति उठाई तुमने, रोकत गैल गिरारे।
'नारायण' सब खबरि पड़ैगी, नेक तो आयके द्वारे,
सूरत अपनी तू दिखारे॥ होरी हो॥

(३३१)

रस नागर श्याम रची होरी।
श्यामा रूप बने मनमोहन श्याम स्वरूप बनी गोरी॥
मनमोहन सिर लसत चन्द्रिका मुकुट बिराजत सिर गोरी।

रमकि झमकि सब सब सखी सहेली,आय मिलीं निज ओरी ॥
अबीर गुलाल कुमकुमा केसर मार मची रस रङ्ग बोरी ।
ढपहिं बजावत गावत चाचरि उमड़ि चली श्रीवन खोरी ॥
'मुदरा सखी' युगल छबि निरखत बार बार लखि तृण तोरी ।

(३३२)

मदमातो महीना होरी को ।
प्रेम उमङ्ग बजाय चङ्ग को गावत रसिक किशोरी को ॥
हाट बाट रोकत व्रजबाला खोलत घूंघट गोरी को ।
गाल गुलाल लगावत मोहन काम करत बरजोरी को ॥

(३३३)

सखी सब ह्वै गये लालहिं लाल ।
ऐसो रङ्ग चल्यौ पिचकारिन, ऐसो उड़्यो गुलाल ॥
लाली लाल, लाल भये लालहुँ लाल भईं व्रजबाल ।
तरुवर लाल,लाल भये सरवर, शुक,पिक लाल मराल ॥
धेनु लाल व्रजरेनु लाल भई, लाल भये सब ग्वाल ।
बाहर लाल 'कृपालु' फाग को, भीतर लाल गोपाल ॥

(३३४)

होरी में लाज न रहे प्यारी ।
रसिया फिरत बजावत ढफली गावत लाज भरी गारी ॥
मूंठ गुलाल इतै उत फेंकत गैल रोक रह्यौ व्रज नारी ।
'ललित लड़ैती' कठिन है बचिवो छैल करत ऊधम भारी ॥

(३३५)

श्री प्रिया प्रीतम की होरी हो ।
इत मोहन रसिया नट नागर,उत श्रीवृषभानु किशोरी हो॥
नन्दलाल सङ्ग ग्वाल मण्डली, राधा सङ्ग में व्रज गोरी हो।
केसर पिचुकारी कर कुमकुम,लीन्हों गुलाल भर झोरी हो॥
उड़त गुलाल लाल भये बादल, चलत रङ्ग दोऊ ओरी हो।
बाजत ताल ग्वाल सब नाचत, कहत सुनहु व्रज भोरी हो॥
हम तो नन्दगांव के छोरा, तुम बरसाने की छोरी हो।
'श्याम'नैन नित यहि रस बरसौ,रङ्ग भरी प्रिय जोरी हो॥

(३३६)

पकड़ लेहु नन्दलाल आज सखी ।
अञ्जन आंजि माण्ड मुख मरवट कपोलन मलहु गुलाल ॥
मुकुट उतारि धरहु सिर चन्द्रिका, दै बेंदी शुभ भाल।
बेनि गूंथि साड़ी पहिरावो, उर बिच मोतिन माल ॥
द्वारे द्वारे ले चलि आली कर तिये भेष रसाल ।
मन मानी करि घर धरि राखो, पलटो लेहु निकाल ॥
पनघट पै अटकत यह प्रतिदिन हमसों करत कुचाल ।
'ललित विहारिणि'झगड़ि करत नित व्रजयुवतिन बेहाल ॥

(३३७)

सखिन स्यानीन ने स्याम के सरीर साज्यो,
सुन्दर सिंगार सुभ सोभा सुखकारी है ।
मुकुट उतारि चारु चन्द्रिका संवारी शीश,

कारी अलकान गुथी बैनी लटकारी है ॥
कुण्डल उतारि धारि करण करण-फूल,
नाक की बुलाक लै बेंसर सुधारी है।
'ललित विहारिणि' वा चन्दा से वदन पर,
चन्दन की बेंदि देत शोभा अति भारी है ॥

(३३८)

अरुण कमल जैसे लाली लिये लोचन में,
काजर की रेख दोन्हीं मुनि मन हारी है।
बीड़ी अधरान दई दाड़िम से दतुवान,
सारस समूह जनु सरसि सिधारी है ॥
झपट के पीतपट झट श्याम नट को,
नीरे तन पीरी धारी साड़ी जड़तारी है।
'ललित विहारिणि' ने छबि मनहारिणि सूं,
फाग अनुराग ऐसी भामिनि संवारी है ॥

(३३९)

तुव विरह आज भली भांति मचाई होली।
सङ्ग ले अमित दुसह दुख सखन की टोली ॥
नयन पिचुकारी किए रङ्ग केसरिया आंसू।
रङ्ग बरसाता है दिन रात मुदित मन खोली ॥
कुमकुमा हिचकियां अरु ऊर्ध्व सरद श्वास अम्बीर।
मलि कलेजे को मेरे ललित बनाली रोली ॥
तड़पना प्यारे बिना नाच सोई माना है।

धड़कना दिल का सो बजते हैं मनहु डफ ढोली ।।
अति विलापों को मेरे गान बनाया उसने ।
नित ही जलने के लिए होल की 'हरिजन' होली ।।

(३४०)

नीकी श्री हरिनाम की होरी ।

ब्रह्म सच्चिदानन्द जगतपति, जो सब माँहि रम्यो री ।
राम कृष्ण माधव मधुसूदन, नाम से प्रगट भयो री ।
ताहि निसि दिन सुमिरौ री ।।नीकी श्रीहरिनाम०।।
काम क्रोध मद लोभ मोह छल मल को ढ़ेर लग्यो री ।
हरिनाम कीर्त्तन चिनगारी, धरतहि सकल जर्यो री ।
जानत भो विमल हियोरी ।।नीको श्रीहरिनाम०।।
नारायण केशव पुरुषोत्तम, नाम की केसर घोरी ।
प्रेम रङ्ग मन मटकिन भरि भरि,प्रीतम अङ्ग भिजो री ।
रङ्ग बरसे चहुँ ओरी ।।नीको श्रीहरिनाम०।।
राधावर गिरधर मुरलीधर, श्याम नाम की रोरी ।
श्रीगोपाल गुलाल हाथ, बलवीर अम्बीर की झोरी ।
भरो अनुराग कमोरी ।।नीकी श्रीहरिनाम०।।
रघुवर सीतावर सारङ्ग धर, बारम्बार रटो री ।
नाम झांझ डफ बाजे बाजैं, लोक लाज तज दो री ।
पिया बस में कर लो री ।।नीकी श्रीहरिनाम०।।
हिरणाकुश प्रह्लाद से पूछ्यों, राम बता किस ओरी ।
तोमें मोमें खड्ग खम्ब में, कहा राम सब ठौरी ।

खम्बहि ते प्रगटो री ।।नीको श्रीहरिनाम०।।
'श्रीमथुरेश' नाम की होरी, खेलो हिल मिल गोरी।
करहिं अवश्य कृपा नन्दनन्दन, श्री वृषभानु किशोरी।
परम रस रङ्ग छकोरी ।।नीको श्रीहरिनाम०।।

राम-नवमी

(३४१)

आज अवधपुरी आनन्द छायो।
घर घर मङ्गलचार बधाई, कौशल्या रानी सुत जायो ।।
शुभ नक्षत्र पुनर्वसु नौमी, चैत्रमास सब भांति सुहायो।
भौमवार वर मध्य दिवस के, श्रीरघुवीर जनम तब पायो ।।
निगमागम जाकी महिमा को, गावत गावत पार न पायो।
सो महाराज काज भक्तन के,नृप दशरथ को कुंवर कहायो ।।
जाके दरशन को सुर तरसें, ताहि धाय लै कण्ठ लगायो।
'नारायण' अपनी भक्ती को, जग में प्रगट प्रभाव दिखायो ।।

फूल-बगला

(३४२)

फूलन के बंगले में राजैं पिया प्यारी हो।
फूलन के भूषण विचित्र सोहें अंग अंग,
फूलन के वसन बदन छबि न्यारी हो ।।
फूल से मुखारविन्द वचन फूलन सम,
फूली सखी तन मन शोभा लखि भारी हो।

जैसे ही समाज साज फूल्यो आज 'नारायण',
मनो कुञ्ज भवन में फूली फुलवारी हो ॥

(३४३)

फूलन की चन्द्रकला शीश फूले फूलन को,
फूलन के झुमका श्रवण सुकुमारी के ।
फूलन की बन्दनी विशाल नथ फूलन की,
फूलन को बेंदा भाल राजत दुलारी के ॥
फूलन की चम्पा कली हार गले फूलन के,
फूलन के गजरा ललित कर प्यारी के ।
फूलन की पग में पायल 'नारायण' फूले,
फूले फूले भाग सदा लड़िली हमारी के ॥

(२४४)

फूलन के खम्बा पाट पटरीहु फूलन की,
फूलन के फुंदने फन्दे हैं लाल डोरे में ।
कहें 'पद्माकर' वितान तने फूलन के,
फूलन की झालरें सु झूलन झकोरे में ॥
फूल रही फूलन सों फूल फुलवारी तहां,
फूल के ही फरस फबे हैं कुञ्ज कोरे में ।
फूल झारी फूल भरी फूलजरी फूलन में,
फूल ही सी राधे फूलीं फूल के हिंडोरे में ॥

रथ-यात्रा

(३४५)

रथ पर राजत दोऊ महाराज ।
मणिमय कलश पताका सोहैं, सुन्दर चारों बाज ॥
अद्भुत छत परदा पिछवाई, रतनन को सब साज ।
'नारायण' सजनी ढिग गावत, धन्य दिवस है आज ॥

झूलन

(३४६)

झूलत फूल डोल रस भीने ।
नवसत साज शृङ्गार नयो तन गौरश्याम गलबैयां दीने ॥
गौरी राग अलापत गावत तरुण भामिनी मिलि सुरझीने ।
'ललित लड़ैती' देव बधु नभ बरषत हरष सुमन गन लीने ॥

(३४७)

झूलत फूल डोल पिया प्यारी ।
उत आनन्दकन्द नन्दनन्दन, इत गोरी वृषभानु दुलारी ॥
पीताम्बर नीलाम्बर ओढ़ें अङ्ग अङ्ग छबि भूषण न्यारी ।
फूलत देख शृङ्गार मनोहर हरष झुलावत गोप कुमारी ॥
झीनीं स्वर सों राग अलापत गौर श्याम दे दे कर तारी ।
'ललितलड़ैती' मिल सुख विलसत धुनि सुनि हिये हुलसत सुरनारी ॥

(३४८)

आज युगल झूलत हुलसत मन ।
कनक वर्ण वृषभानु नन्दनी रसिकलाल पिया सजल श्यामघन ॥

छाय रहे जित तित ते बादर लसित दामिनी हरित भूमि घ
परत फुहार लगत अति प्यारी पवन झकोर करत शीतल त
दादुर मोर पपैया बोलत वचन सुहावन अति भावन म
'ललित लड़ैती' या सुख ऊपर वारें सरवस प्राण देव ध

(३४९)

झूलत पियालाल संग गोरी ।
झूला परचो कदम के नीचे हर्ष झुलावत गोप किशोरी
गरजत गगन दामिनी कौंधत पड़त बूंद भूतल पै थोड़
'ललित लड़ैती' चलत चपल दृग करत परस्पर चित्तकी चोरी

(३५०)

कदम्ब तरे झूलत पिया प्यारी ।
संग लाल गोपाल बने हैं, प्रिय संग व्रजनारी।
उगड़ि घुमिड़ नभ मघवा छाये दामिन दमकारी।
पीऊ पीऊ चातक बन बोलत कोयलि धुनि न्यारी।
चमक झमक झुकि लटपट लटकत मन्द हसन प्यारी।
'ललित बिहारिणि' बसो दृगन में या छबि बलिहारी।

(३५१)

आयो है मास सावन इक मान कह्यो प्यारी।
चल झूलिये हिंडोरे वृषभानु की दुलारी॥
यमुना के तीर बंसीबट कैसी छबि छाई।
शीतल सुगन्ध मन्द पवन चलत अति सुहाई॥
करती है शोर यमुना उठते तरंग भारी ॥चल०॥

प्रति कुञ्ज कुञ्ज छाय रह्यो है पराग री।
लागत परम सुहाई अवलोक नागरी॥
फूली लता द्रुमन की धरणी झुकी हैं डारी॥चल०॥
जापै मलिन्द घूमैं मकरन्द हेत छाये।
नाचत हैं मोर बन में लागत परम सुहाये॥
माती कोयल पुकारे बैठी कदम की डारी॥चल०॥
कालिन्दीया के तट पै झूलत हैं सब सहेली।
नवसत शृङ्गार साजै इक एकते नवेली॥
तुमहुँ पिया सिधारो कीजै न अब अबरी॥चल०॥
झूलें निकुञ्ज अपनी अबही चलो पियारे।
कीजै विहार हमसों तुम नन्द के दुलारे॥
तब संग लै पिया को सुनि कुञ्ज में सिधारी॥चल०॥
बैठो कुंवर हिंडोरे अब मैं तुम्हें झुलाऊं।
गाऊं तुम्हें रिझाऊं छबि देख दृग सिराऊं॥
बैठो सुरङ्ग पटली डोरी गहो सम्भारी॥चल०॥
बाढ़ै न रमक मोहन टुक मन्द ही झुलावो।
डरपे हियो हमारो पिया पैंग न बढ़ावो॥
यह बात सुन पिया की उरसों लई लगा री॥चल०॥
भीजैगी लाल साड़ी कारी घटा जो आई।
लीजै उढ़ाय मोकों कामर कुंवर कन्हाई॥
तब हंसि'रसिक बिहारी'कामर उढ़ाई कारी॥चल०॥

(३५२)

झूलन चलो हिंडोरने वृषभानु नन्दनी।
सावन की तीज आई, नभ घोर घटा छाई।
मेघन झरी लगाई, पड़ें बूंद मन्दनी ॥झू
सुन्दर कदम की डारी, झूला परयो है प्यारी।
देखो कुंवर अहारी, सब दुख निकन्दनी ॥झू
पहरो सुरङ्ग साड़ी, मानो विनय हमारी।
मुखचन्द्र की उजारी, मृदुहास फन्दनी ॥झू
मम मानि सीख लीजै, सुनकर न देर कीजै,
हम तो विलोकि जीजै,अहो गति गयन्दनी ॥झू
शोभा लखो बिपिन की, फूली लता द्रुमन की।
सुन अरज'रसिक'जनकी करौं चरण वन्दनी॥झू

(३५३)

झूलन युगल किशोर की दिल में मेरे बसी।
बैठे हैं रङ्ग हिंडोरना करते हैं रसमसी ॥
फहरात पीत पटुका दुपटा जो छोरदार।
शिर पै सुरङ्ग साड़ी प्यारी के क्या लसी ॥
बेसर बुलाक वेनी बेन्दी जो भाल पै।
हीरों का हार उर पर कटि काछनी कसी ॥
जौबन के जोर शोर सों रमकें बढ़ावते।
'ललितकिशोरी' श्याम की छबि देखके हँसी ॥

(३५४)

युगल छबि सावन लाजै ।

त इत घनश्याम लडिलो,उत दामिनि इतप्रियसंग राजै।।

बरषत बूंदनकी लरियां,इत गल मुतियन हार विराजै ।

दादुर इत बजत बांसुरी, उत गरजत इत नूपुर बाजै ।।

रङ्ग के बादर इत बागे, उतै धनुष बनमाला इत साजै ।

घन घुमड़ इतै दृग घूमत, 'नारायण' वर्षा सुख साजै ।।

(३५५)

दोऊ झूलैंरी मन के मोहन हार ।

जनी एक सांवरे रंग की, संग वृषभानु कुमारि ।।

ावन मास सुहावन भावन, फूल रही फुलवारि ।

शम डोर जड़ाऊ पटली, सघन कदम्ब की डारि ।।

र्जत घन चमकत है चपला, बूंदन पड़त फुहार ।

ौर ठौर मिल मोर नचत हैं,या सुख को नहिं पार ।।

ांति भांति के पक्षी बोलें, शीतल चलत बयार ।

ूले कमल सरोवर मांहिं, भ्रमर करत गुञ्जार ।।

हुँ ओर छाई हरियाली, अद्भुत विपिन विहार ।

लिपट रहीं वरबेलि द्रुमन सों,हरषत युगल निहार ।।

रन वरन के लाल सोसनी सखियन किए शृङ्गार ।

विविध प्रकार बजावत बाजे, गावत राग मलार ।।

चतुर सखी इक जान गई तब, उर सों चीर उघार ।

हंसि हंसि पकड़त लखावति औरन,यह लंगर छलवार ।।

ललिता कहै इन्हें नहिं व्यापै, तनक लाज संसार।
पल पल माहिं स्वांग धरि आवत, कभूं पुरुष कभूं नार॥
'नारायण' बोली प्रीतम सों, कीरति प्राण अधार।
बनिता भेष उतारि आपनो रूप लेउ निज धार॥

उद्धव-लीला

[गोपी-वचन] (३५६)

नन्दलाल तुम प्राणन प्यारे।
कहां बसो अब दीन दयालु वृन्दावन रखवारे॥
गुरुकुल-कानि लाज-जग नाते तृण सम तजि सब डारे।
लीजै नाथ अनाथन की सुधि निकसत प्राण हमारे॥
डूब तजहिं तन विरहा सागर सोच जिय यहि भारे।
दीनबन्धु गोपीजन-बल्लभ कहौ पुनि कौन पुकारे॥
शरणागत पालक पन तेरो काहे करौ जिय गाड़े।
'श्यामदास' भक्तन हितकारी राखहु लाज मुरारे॥

[उद्धव-वचन] (३५७)

अहो गोपिका व्रज भामिनि गजगामिनि सुकुमारि हो।
मम बैन तुम हित-ऐन हैं सुखदैन सुनि चित धारि हो॥
कत दीन ह्वै गमगीन ह्वै तन विरहानल में जारि हो।
'ललितविहारिणि' शान्त चित ह्वै शोक रोक विसारि हो॥
यह पत्रिका व्रजबाम है घनश्याम दई पढ़ लीजिये।
शुभ वचन रूपामृत सभी मिल धीर धरि भरि पीजिये॥

भ्रम जगत मिथ्या रूप है दुख कूप अस दृढ़ कीजिये ।
'ललित विहारिणि' नित्य सच्चिदानन्द सरवर भीजिये ॥

(३५८)

[श्याम-पत्रिका]

छोड़ि के वियोग, भोग दुखद यह रोग रूप,
हूजिये निरोग भ्रम भोग संसार सूँ ।
माया हूँ को जाल, विकराल नाशवान सब,
लीजै दृष्टि डाल नेक ख्याल सूँ विचार सूँ ॥
झूँठ जग झूँठी प्रीति रीति अनरीति सब,
स्वप्न की भांति भ्रांति दीसै विस्तार सूँ ।
'ललित विहारिणि' सो एकहु उपाय योग,
धारि पार हूजै जग जार जञ्जार सूँ ॥

एक है, अनेक, नाँहि अन्त जो अनन्त,
जाहि सन्त हैं भनन्त, सोई ब्रह्म तुम ध्यावो हो ।
अज-अविनाशी-सुख राशि है जो आदि सूँ,
स्वयं प्रकाशी भ्रम नाशी चित्त लावो हो ॥
अचल अरूप गूप सच्चिदानन्द कूप,
शील को स्वरूप सो अनूप पद पावो हो ।
'ललित विहारिणि' जो आप सोई मोहे जान,
खेद को विसार के अभेद ह्वै जावो हो ॥

[गोपी-वचन] (३५९)

देख्यो है री,सुन्यो है री, पीयो है री अमृत जो,
कागज में मथुरा ते ब्रज पठावायो है।
नगर में जावतहिं भोग रोग लागे सब,
योगिन की सङ्गति सूँ योग मन भायो है॥
सांचि है री सागर को अन्त भलैं जांचि है,
पै मानस के मानस को अन्त किन पायो है।
'ललित विहारिणि' विहाय विरह वारिधि में,
हेलन को चेलन सूँ योग भिजवायो है॥

(३६०)

सुन हो जू कान खोलि योग लिए फूले हो क्यों,
भूले हो वियोग देखि योगी हू तो हम हैं।
भस्म रमावैं तनु, तन हम जारि हैं,
सो भूले भोग साज, लोक-लाज हरदम हैं॥
ब्रह्म बिनु दूजो नांहि, देखहि नहिं श्याम बिनु,
अलख जगावैं ध्यावैं श्याम अनुपम हैं।
'ललित विहारिणि' वियोग सो 'विशेष योग',
सोचिये तो योगी सूँ वियोगी कहूँ कम हैं॥

[उद्धव-वचन] (३६१)

धीर धरहु व्रजबाम उर विरहा शोक विहाय।
लखहु सच्चिदानन्द रूप जो सब महँ रह्यो समाय॥

सब महँ रह्यो समाय छाये अवचल घटवासी।
छके रहैं जा मद सनकादिक शिव ब्रह्मा सुखराशी ॥
'ललित बिहारिणि'वेद शास्त्र यों भाषत वाक गंभीर।
आतम--पद सत ध्यावहो तजो शोक मति धीर ॥

(३६२)

[गोपी-वचन]

बैठो भक्त ले ब्रह्म निज हम सो मूरति हेरी।
काहू पै जानी नहिं जावे ब्रह्मा की मति फेरी ॥
ब्रह्मा की मति फेरि हेरी नहिं शिब सनकादि।
नैक न पावहिं छोर जोर जुग जुगन समाधि ॥
'ललित विहारिणि'लीला ताकी फिरैहु गर्व सूँ ऐंठो।
नेति नेति निगमागम गावैं सो हमरे हृदि बैठो ॥

(३६३)

सांचि कहि हैं एक जो अनेक, जाहे अन्त नांहि,
सन्त है अनन्त, सोई ब्रह्म तेरो जौन है
अज अविनासी, सुप्रकासी, सुखरासी है जो,
सोई व्रजवासीन के नैन कियो भौन है।
पार नहिं पावें नैक शिव सनकादि विधि,
जोर के समाधि, जहँ वेदहूँ तो मौन है
'ललित विहारिणि' हिये पट खोल देख झट,
घट घट वासी स्याम नट बिनु कौन है।

(३६४)

[गोपी-वचन] [लावनी]

दो०—उद्धव को उपदेश सुनि भयो चित्त इकतान ।
देत उरैहनो गोपिका लग्यो कृष्ण सों ध्यान ॥

हम भोरी हैं व्रजवाल, कुटिल कपटी तुम नन्ददुलारे।
तुम बसे मधुपुरी जाए हाय ! कैसे रहैं प्राण हमारे॥
व्रज लगी विरह की आग भाग मथुरा वासिन के जागे।
जो रहैं सङ्ग दिन रैन नैन छबि निरखत हैं अनुरागे॥
हम अली वृथा तें छली प्रेम की कली खिलत ही तोड़ी।
तुम तजी प्रीति की रीति करैं कैसे प्रतीत व्रजगोरी॥
तुम सकल गुनन की खान गान धर वेणु अधर कछु कीनों।
कछु पढ़्यो मोहिनी मन्त्र जन्त्र जादू करि मन हर लोनों॥
तुम भए वधिक सूं अधिक मारि बेजार करीं ये हरनी।
है रहीं मरै अब घड़ी, करी तुमने यह कृष्ण ! अकरनी॥
नेह तुम जानत नांहि विशेखी चढ़ी दुख देवै की इक शेखी।
हम बार बार यह देखि मिटै नहीं मेटे विधि की लेखी॥
हम जात ही कछु और भई कछु और कहा करें त्यारे।
हम भोरी हैं व्रजबाल कुटिल कपटी तुम नन्ददुलारे॥
तजि के व्रज को सुखवास वास मथुरा को जो मन भायो।
सो सोचत ही दिन रात बात को कारण हूँ सुन पायो॥
इक मिली रूप की खिली कूबरी कंस नृपति की दासी।
तुम चलत गैल में छैल कर लागे तासों कछु हांसी॥

इक दै चन्दन की बिन्दु तुम्हें व्रजचन्द ! सुहाग सहेटी ।
मिट कूब भई महबूब खूब तुम्हरे वह प्रेम लपेटी ॥
कर पकड़ पीतपट झटक मटक ले चली वह अपने संग में ।
करि कौल भए वश अये ! रंगे हो अब वाही के रंग में ॥
काहे न प्रीति निभाओ, सौत कुबरी के नाथ कहाओ ।
भलें राधावर नाम लजाओ हमें विरहाकी अगनि जराओ ॥
तुम औरन के सङ्ग सुखी दुखी दर्शन बिनु प्राण हमारे ।
हम भोरी हैं व्रजबाल कुटिल कपटी तुम नन्ददुलारे ॥
तुम चतुर छबीले छैल छबीली हैं मधुपुर की नारी ।
अब भलो मिल्यो है मेल खेल खेलत अनेक सुखकारी ॥
कोऊ मन भामिनि के सङ्ग समझ औसर चौसर हूँ खेले ।
है रहे गले के हार हार बैठे आप हो अलबेले ॥
कोई कामिनी संग संगीत रीत सुरताल विविध गति साजे ।
मधुरी आवाज में बजे मधुर रस गान तान सम बाजे ॥
भृकुटि कमान कछु तान मदन के बान चले सैनन में ।
बिच बिच बताये के भाव विहंसि रस वर्षत हैं नैनन में ॥
हम सब यह लीला जानी हम सौं कछु नांहि छिपानी ।
हम बैठी हैं दे कानि तुम भलें करो मन मानी ॥
तुम बसो भलें ही दूर कूर हिरदै सो टरौ न टारे ।
हम भोरी हैं व्रजबाल कुटिल कपटी तुम नन्ददुलारे ॥

कोई है वे हू दिन श्याम ! वाम व्रज की जिन में मनभा
ऋतु शरद रैन सुखदैन चन्दपूरन अमन्द छबि छा
खिल रहे फूल सुखमूल कूल यमुना के पुलिन सुहा
लै हमें सङ्ग आनन्द उमङ्ग निरतत हे दे गल बाहीं
वे वृन्दावन द्रुम लता पता चहुँ दिशि वितान से छा
अति सघन मञ्जु नाना निकुञ्ज गुञ्जत अलि पुञ्ज सुहाये
कछु अधर सुधा सी पियाय हिये लिपटाये किये मन भा
दें सुख अपार व्रज के विहारि ! अब तो सब ही बिसराये
कहें "केलि सखी" गुन आगर ! सुन लीजै आज उजागर
हम डूब रहीं दुख सागर सुधि लीजै हे व्रजनागर
अब कृपा करो कुल पाल चन्द्र गोपाल दृगन के तारे
हम भोरी हैं व्रजवाल कुटिल कपटी तुम नन्ददुलारे

[उद्धव-वचन]　(　३६५　)

अहो गोपिका धन्य धन्य तुम धन्य हो व्रज की रानी
रहौ श्याम सङ्गी रस रूप रङ्गी तुम प्रेम भक्ति रसखानी
तुम करी तपस्या कौन सकूँ नहिं तुच्छ मती मैं जानी
तुम प्रेम ध्वजा गल डाल भुजा सङ्ग कृष्ण करहु मनमानी
जेहिं पद रज हित रहत बावरे शिव ब्रह्मादिक ज्ञानी
वह परम ब्रह्म वसुदेव कुँवर नित भजत तुम्हहि सुखदानी
तजि मात भ्रात सुत बन्धु प्रियवर स्वामी निज कुलकानी
रहौ कृष्ण प्रीति रस सानी धन्य श्री वृन्दावन महारानी

कृष्णहि तन मन, कृष्णहि जीवन, कृष्ण श्रवण अरु बानी ।
कृष्ण बिना नहिं काम याम इक कृष्ण नाम दीवानी ॥
कमला सी पद मीण्डत जाकी तीन लोक रजधानी ।
सो क्षीरद्धि पति अटकत मग में नाम धरैहि दधिदानी ॥
नेति नेति निगमागम गावैं जोगी फिरें तप ठानी ।
नैक न पावै पार जाहे वाहे छाछ पै नाच नचानी ॥
मैं मन्द मति महिमा नहिं जानी फिरचो ब्रह्म अभिमानी ।
अब 'ललित विहारिणि' क्षमहु लाड़ली चरणदास निजजानी ॥

(३६६)

[गोपी-वचन]

सुन कान दे श्याम ! अब शाम भई,
जीवन की चेहरे जर्द हुए ।
कई मास की आसहु नास भई,
गत रास के फेरे गर्द हुए ॥
ले जान सुजान यह प्रान अभी,
इक आन की आन में सर्द हुए ।
छुट चलीं "श्याम" व्रजवाम तेरी,
बदनाम रहहु बेदर्द हुए ॥

(३६७)

श्याम तन श्याम मन श्याम ही हमारो धन,
आठों याम ऊधो हमें श्याम ही सों काम है ।

श्याम हिये श्याम जिये श्याम बिनु नांहि तिये,
आंधे की सी लाकड़ी अधार श्याम नाम है॥
श्याम ही हैं प्राणपति श्याम ही हमारी गति,
श्याम सुखदाई सों भलाई शोभाधाम है।
ऊधो तुम भये बौरे पाती लेकर आए दौड़े,
योग कहां राखें यहां तो रोम रोम श्याम है॥

(३६८)

ऊधो ! जो कोई या तनहि फेर बनावै ।
तोऊ न नन्दनन्दन तज मधुकर और कछु मन भावै ॥
या तन की कोई त्वचा काढ़ के सुन्दर दुन्दभि साजै।
विविध उतङ्ग तान रङ्ग सो श्याम श्याम कहि बाजै ॥
या तन की कोई करे कीङ्गरी और नसन के तार।
आठौं याम मधुर ध्वनि निकसै सुन्दर श्याम मुरारि ॥
निकस प्राण होय तन मिट्टी द्रुम लागें तेहि ठाम।
"सूरदास" शाखा फल पत्री उठैं लेत हरिनाम ॥

(३६९)

[उद्धव-वचन]

कहिये कहा आनन सों हाल व्रज कानन को,
जानन में आयो हाल तेरो लाल भाम्ते।
रहै हम तेरे धोके, योगिन के चेरे होके,
आज हम जाने फोके योग हे रसाम्ते॥

वारिधि बियोग जाय, डूबे डूबे बचि आये,
नैक हूँ न पायो थल योग जहां टिकाम्ते ।
"ललित विहारिणि" हित योग देन कहा चली,
लायो हो अमोघ वह वियोग व्रजधाम ते ॥

(३७०)

श्याम व्रजवाम रहत दुखी अष्टयाम,
इक जानें तेरो नाम कछुकाम नहिं सुहाई है ।
नैन जल पोंच, निज शीश पट नोंच,
निज आंगन की ओंच सूँ तलाईसी बहाईहै॥
तिन जल बाढ़ं, सो तो होय के पनारे,
व्रज गलिन किनारे एक नदीसी चलाई है।
नदी सागर बनायो व्रज ओर चहुँ आयो॥
ज्यों-त्यों बचि आयो'श्याम'व्रजको डुबाईहैं॥

(३७१)

[लालजी-वचन]

तजि नभ मण्डल चलहिं भू रवि शशि द्वै द्युति छोड़ ।
सब सरिता उलटी चलै बहहिं न सागर ओर ॥
बहहिं न सागर ओर छोड़ि दावानल तापू ।
हिम सूँ जग जरि जाय झरै अमृत मुख सापू ॥
पलटै सब मर्याद नहिं उद्धव यह अचरज ।
'ललित विहारिणि'लव निमेषसैं विचरुं नहिं व्रज तजि॥

❀ उपासना-माधुरी ❀

मङ्गला

(३७२)

जागो व्रजराज कुँवर भोर भयो प्यारे ।
रजनीको तिमिर गयो नभ विलाय तारे ॥
द्रुम द्रुम पंछी अनेक करत शब्द न्यारे ।
उठै तब 'ललित लड़ैती' गैयन रखवारे ॥

(३७३)

माखन प्रभु देर भई अजहूँ निशि माने ।
जागन की बिरियां कत सोवत पट ताने ॥
उठौ लाल जैंबो दधि भोजन घृत साने ।
करि कलेऊ जाओ विपिन धेनु वच्छ चराने ॥
जगे श्याम ताही समैं कछु इक अलसाने ।
देख छबि 'ललित लड़ैती' व्रजजन हरषाने ॥

(३७४)

जागो वंशीवारे ललना जागो मेरे प्यारे ।
रजनी बीती भोर भयोहै घर घर खुले किवारे॥
गोपी दही मथत सुनियत हैं कंगनाके झनकारे ।
उठो लालजी भोर भयो है सुरनर ठाढ़े द्वारे ॥
ग्वालवाल सब करत कोलाहल जय २ शब्दउचारे।

माखन रोटी हाथ में लीन्ही गौअन के रखवारे।।
'मीरा'केप्रभु गिरधरनागर शरणआइयांकूं तारे।।

(३७५)

दधि के मतवारे कान्ह खोलो प्यारे पलकैं।
शीश मुकुट लटैं छुटीं और छूटी अलकैं।।
सुरनर मुनि द्वारे ठाढ़े दरश कारण किलकैं।
नासिका को मोती सोहै बीच लाल ललकैं।।
कटि पीताम्बर मुरलीकर श्रवणकुण्डल झलकैं।
"सूरदास मदन मोहन" दरश देहु भलकैं।।

(३७६)

मैं बलि जाऊँ छबीले लालके।
भोरें जगन झुकन अलसावन लटपट चाल मराल के।।
आंगन चलन रेणु तन मण्डन मीड़न दृगन विशाल के।
पलकन झूमन वदन सुहावन भाखन वचन रसाल के।।
हसन दसन दुति दामिनि दमकन छिटकन अलकनजाल के।
लसकन मुकुट हलन नक वेंसर कण्ठ कमलदल माल के।।
वंशी वजन चरण नूपुर धुनि श्रवणन कुण्डल झाल के।
'ललित लड़ैती' श्याम भक्तवस रहै अधीन व्रजबाल के।।

मङ्गला-भोग

(३७७)

लाडिली लाल सेज उठि बैठे सखिजन मङ्गल भोग धरावैं।
मणियन जटित थाल में मोदक लेकर ललितादिक अरुगावैं॥
देत परस्पर कमल बदन में नैन उनींदें अति अलसावैं।
मृदु मुस्कावत मोद बढ़ावत निरखि निरखि केवल बलिजावैं॥

मङ्गला-आरती

(३७८)

करत आरती गोप कुमारी।
मङ्गल श्री वृषभानु नन्दनी मङ्गल नागर नवल विहारी॥
मङ्गल नैन बैन मुख मधुरे मङ्गल हसन दसन द्युति न्यारी।
मङ्गल अङ्ग अङ्ग अलसाने लेत जम्हाई रैन खुमारी॥
मङ्गल पलक झुकन अलकनकी विथुर कपोल देत छबि भारी।
'ललित लड़ैती' मंगल पल यह अद्भुत शोभा दृगन निहारी॥

शृङ्गार

(३७९)

प्यारे तोहि आज शृंगार कराऊँ।
तेल फुलेल करूँ रुचि मर्दन उष्णोदक नहवाऊँ॥
वदन पौंछ संवारूँ अलकैं कांधी काढ़ बनाऊँ।
माथे तिलक करूँ गोरोचन केशर खौर लगाऊँ॥

पचरङ्गी चीरा कलगी सिर पेच रतन को धराऊं ।
वागो लाल जड़ाऊ भूषण ले अंग अंग सजाऊं ॥
गल में मुक्तमाल बनमाला फूलहार पहिराऊं ।
'ललित लड़ैती' लखि अद्भुत छबि अपने भाग सिराऊं ॥

(३८०)

मोहन सुभग सिंगारत प्यारी ।
बूंटीदार लाल लहिंगा कटि गले कंचुकी हरित सुधारी ॥
मणिमय शीश चन्द्रिका दीन्हीं नीलवर्ण साड़ी जरतारी ।
माथे मृगमद बिन्दु इन्दु सम दें सैंदूर शुभ मांग संवारी ॥
खञ्जन नैन रेख काजर की श्रवणन कर्णफूल सुखकारी ।
नव बेंसर, मुख पान लालिमा पत्रावली कपोलन न्यारी ॥
मुक्तन माल जाल गल दीन्हें कर कङ्कण कटि किंकिनी भारी ।
नूपुर देत भुजन भरि लीन्हें 'ललित विहारिणि' ललित विहारी ॥

शृङ्गार-आरती

(३८१)

जय जय रासविलास स्वामिनी ।
करनशृंगार विलोकत पियामन वारित आरतीसुघर भामिनी ॥
मन्द हास मुख झरत सुमनगन अधिक चारु गति हंसगामिनी ।
बोलिन मधुर विलोकन बांकी वारत छबि त्रैलोक कामिनी ॥
कुण्डल झलक देत शोभा नई तारागण ज्यों दिपत जामिनी ।
नील मणिन अनुहार सांवरो 'ललित लड़ैती' लसत दामिनी ॥

राज-भोग

(३८२)

बैठे निकुञ्ज करत दोऊ भोजन ।
ले ले ग्रास रूपरस घूंटत भीज रहै नव रंग मनोजन ॥
जोवन भार ढरक गई अंगिया प्रिया दुरावत हस्त सरोजन।
'ललित लड़ैती' घनो ही बरजत प्रीतम डारत दृष्टि उरोजन॥

(३८३)

जेंवत दोऊ मिलि रूपनिधान ।
षटरस भोजन रुचिर बनाय, ललिता परम सुजान ॥
हंसि हंसि बूझत प्रिया सों प्रीतम, सुनो भानुकुल भानु ।
या व्यञ्जन को नाम कहा है, कीजै आप बखान ॥
कबहुँ ग्रास मुख देत परस्पर, करत मधुर मुसिक्यान ।
'नारायण' छबि निरखति सजनी, भाग्य बड़े निजमान ॥

(३८४)

अचवन करि बैठे दोऊ चन्द ।
पान चबावत मृदु मुसिक्यावत, गौरश्याम सुखकन्द ॥
ललिता ललितहि सेज बिछाई,हिय में परम आनन्द ।
'नारायण' मन भ्रमर लुभानो,चरण कमल मकरन्द ॥

राजभोग-आरती

(३८५)

राजभोग आरती उतारी ।
भोजन पाय सिंहासन बैठे प्रमुदित प्रीतम प्यारी ।।
आलस भरे निरखि आलीगण रंगमहल में सेज संवारी ।
पौढ़े जाय दोऊ 'बांके पिया' दीन्हीं कुञ्ज किवारी ।।

महल-सेवा

(३८६)

चांपत पांय मुदित मन सखियां ।
धीरे धीरे चरण पलोटत करत युगल रस बतियां ।
शीतल मन्द पवन लागत ही लागन लागी अखियां ।
मृदु मुसकनयुतसोवनछबि लखि'बांकेपिया'जुड़ावत छतियां।।

उत्थापन

(३८७)

जानि समय उत्थापनको पुनि पिय प्यारीको आईं जगावन।
कुञ्ज द्वार ठाढ़ी ललितादिक लागीं युगल सुयश गुण गावन।।
धीमे ताल अलापत मालव धनाश्री स्वर मधुर सुहावन ।
प्रिया प्रीतम जागे'बांके पिया'आये दिखाये युगलपद पावन।।

उत्थापन-भोग

(३८८)

भोग उत्थापन दोऊ मिलि पावत ।
मोदक मठरी तप्त जलेबी चाखत हर्ष बढ़ावत ॥
सरस इमरती खस्ता टिकिया नवफल वृन्दा लावत ।
'ललित लड़ैती' जेंवत रुचिसों चंचल नयन चलावत॥

धूप-आरती

(३८९)

फूले फूल विविध फुलवारी ।
बीन दुकूल निहारत शोभा हर्ष बढ़ावत प्रीतम प्यारी॥
चुनि चुनि सुमन अंजुली लीन्हे वारत आरती गोप कुमारी।
विहरत विपिन दिये गलबाहीं'ललित लड़ैती'लाल विहारी॥

सन्ध्या-आरती

(३९०)

करत आरती गोप किशोरी ।
नवल निकुञ्ज रूपरस घूंटत गौर श्याम सुन्दरवर जोरी।
अड़ै नैन सौं नैन परस्पर चितवन बान चलत दोऊ ओरी
नागरि-नागर छबिसागर मधि मदनसहित रतिलेत हिलोरी॥
परख निरखिनई शोभा अलीगण वारत जल डारत तृण तोरी
'ललित लड़ैती'सुनी न त्रिभुवन अनुपम जोरी सांवरी गोरी॥

ब्यारू-भोग

(३९१)

ब्यारू लेत दोऊ सुकुमार ।
पूरी मैदा रुचिर कचौड़ी सेब सम्बोसे दार ॥
मोतीचूर मगद के लड्डू जामें स्वाद अपार ।
खोआ खुरचन रवड़ी वरफी पेड़ा मोहन थार ॥
तप्त जलेबी सरस इमरती खुरमा पुआ सुहार ।
पापर भाजी दाल तली घृत चटनी बिबिध अचार॥
रचौ रायतौ बथुआबून्दी किसमिस अति रुचिकार ।
'ललित लड़ैतो'पावत दम्पति रस घूंटत बलिहार ॥

दूध-भोग

(३९२)

पीवत दूध युगल किशोर ।
अधिक औंटि सिराय लाईं कन्द मिश्री छोड़ ॥
भरि कटोरा कनक दीन्हो इला केसर घोरि ।
प्रथम प्रियहि पिवाय ललिता दियो श्याम बहोरि॥
दियो प्यारी अधर अमृत स्वाद ता में बोरि ।
'बांके पिया' प्रभु तृप्त होत न रसिकजन सिर मोरि ॥

बीड़ी-सेवा

(३९३)

सखी विसाखा बीरी लाई ।
लौंग सुपारी कत्था चूनों गिरी इलाची पाई ॥
हरे पान नये कोमल पत्ता बीरी रुचिर बनाई ।
'ललित लड़ैती' लई दोऊन मुख लाली अधर सुहाई॥

शयन-आरती

(३९४)

झूमत अलसाने मृग नैनां, निकसत मुख मधुरे पिकबैनां,
आज युगल छबि कहत बनैना, सखी आरती वारत ।
तानि तानि पग लेत जम्हाई, आलसवस निद्रा झुक आई,
सखी सहचरी निरखन धाई, राई नोन उतारत ॥
फूले अङ्ग दियें गलबाहीं, लालन करत मुकुट परछाहीं,
परत कपोलन कुण्डल माहीं, मुख ते अलक निवारत ।
"ललित लड़ैती" जोवन माते, रूप ठसक फूले न समाते,
सुमन सेज रस रङ्ग बढ़ाते, लता भवन चिक डारत ॥

(३९५)

आज विराज रहै मणिमन्दिर नन्दनन्दन वृषभानु किशोरी ।
केलि करत युग याम गई निशि,लेत जम्हाई सांवरो गोरी ॥
अति आलसवश झूमत दोऊ, बात करत मुख अटपटी भोरी ।
'नारायण' सोई बड़ भागी, जो नित निरखत है यह जोरी ॥

(३६६)

आरती कीजै नव नागर की ।

खञ्जन नैन बैन रसमाते रूपसुधा सागर की ॥

पान खात मुस्कात मनोहर,मुख सुखमा आगर की ।

'रसिक सखी'दंपति आरतिसों नैन सैन जागर की ॥

(३६७)

कुञ्जन पधारो राधे रङ्ग भरी रैन ।

रंग भरी दुलहिन रंग भरे प्रीतम श्यामसुन्दर सुखदैन ॥

रंग भरी सेज रची सुख सहचरी रंग भरे उलहत सैन ।

'रसिकविहारी'पियाप्यारी मिल दोऊ करहु सेज सुखसैन ॥

(३६८)

आनन्द रहौ दृगचन्द दोऊ शुभ सगुन सदा तुमको आवैं ।

नितही रसकेलि करो मिलिके हम निरखि २ अति सुखपावैं॥

यह धन हमसे रंकनको मिल्यो,हम कहांलौं विधिके गुणगावैं।

"नारायण" अब आशीश करें, तुम हूँ पौढो हमहूँ जावैं ॥

आरती—श्री राधा जी

(३६९)

आरती भानु दुलारी की, कि श्री बरसाने वारी की ।

विराजैं सिंहासन श्यामा—दिव्य श्री वृन्दावन धामा,

ढुरावैं चंवर सुघर वामा—पलोटैं पग पूरन कामा ।

ललो पग अङ्क, चापि निश्शङ्क, श्याम जनु रङ्क,
पाई निधि पारस प्यारी की ॥ आरती ॥

गौर सिर कनक मुकुट राजैं—चन्द्रिका चारु सुछबि छाजैं,
कुटिल कुन्तल अलि|भल भ्राजैं—लखत जेहि शिखि कलाप लाजैं,
मांग सिन्दूर, मोतियन पूर, सजीवनि मूर,
ब्रह्म गोवर्धन धारी की ॥ आरती ॥

श्रवण बिच करण फूल झलकैं—नासिका बिच बेसर हलकैं,
नयन बिच प्रेमसुधा छलकैं—ललन जू लखि ललि के ललकैं।
चपलनथ चमक,दसनदुति दमक,सुमुखिमुख रमक,
मधुर मुसकिन सुकुमारी की ॥ आरती ॥

मोतियनलर उरमणिमाला—चिबुक झलकत इत तिलकाला,
शम्भु शुक दैं सङ्ग करताला—लली गुण गावति व्रजवाला।
कबहु मुख मुरनि,कबहु दृग दुरनि,कबहु दृग जुरनि,
कबहु सुधि भुरनि बिहारी की ॥ आरती ॥

किनारिन जरिन नील साड़ी—कंचुकी कुमकुम रङ्ग वारी,
चुरी कर कङ्कन मनहारी—छीन कटि किङ्किनीछबि न्यारी।
पायलनि पगनि, महावरि लगनि, बीछुवनि नगनि,
"कृपालु" सुकीर्ति-कुमारी की ॥ आरती ॥

आरती—श्री कुञ्ज विहारी

(४००)

आरती कुञ्जबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥
गले में वैजन्ती माला, बजावै मुरली मधुर बाला,
श्रवण में कुण्डल झलकाला,
नन्द के नन्द हि नन्दलाला, श्रीगिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥
गगन सम अङ्ग कान्ति काली, श्री राधा चमक रही आली।
भ्रमर सम अलक, कस्तूरी तिलक, चन्द्र सी झलक,
अमित छबि श्यामा प्यारी की, श्रीगिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥
कनकमय मोर मुकुट बिलसैं, देवता दर्शन को तरसैं।
गगन सूं सुमन बहुत बरसैं।
बजैं मुहुचंग, और मृदंग, ग्वालिनि सङ्ग,
लाज रख गोपकुमारी की, श्रीगिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥
जहां सूं निकली भव गंगा, या कलि मल हरनी श्रीगंगा।
सोई युग चरन, कमल के वरन, लही हम शरन,
राधिका गौर श्याम पद की, कि छबि निरखूं वनवारी की ॥
आरती कुञ्ज बिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

आरती—श्री युगल किशोर

(४०१)

आरती युगलकिशोर की कीजै, तन-मन-धन न्यौछावर कीजै।
रवि शशि कोटि बदनकी शोभा, ताहे निरखि मेरो मन लोभा।

गौर श्याम मुख निरखन कीजै,हरि स्वरूप नैन भरि पीजै।
कंचनथार कपूर की बाती, जगमग ज्योति जले दिन राती।
फूलनकी सेज फूलन गल माला,रतन सिंहासन बैठे नन्दलाला।
मोर मुकुट कर मुरली सोहै, नटवर भेष देखि मन मोहै।
ओढ़े नील पीत पट साड़ी। कुञ्जबिहारिणि कुञ्ज बिहारी।
गोपीजनों को प्रेम स्वरूपा, ध्यान धरहिं जो शुद्ध स्वरूपा।
श्रीपुरुषोत्तम गिरिवर धारी, आरती करत सकल व्रजनारी।
नन्दनन्दन वृषभानु किशोरी, परमानन्द प्रभु अविचल जोड़ी।

❁ रसिया ❁

(४०२)

आये कलिपावन हरि गौर सुनायो नाम हरि हरि बोल॥
नदिया में अवतार लियो है, हरि कीर्त्तन प्रचार कियो है।
कलियुग में आधार दियो है, नाम हरि हरि बोल ।।आयो०
आप नचे और सबन नचायो, नाम सङ्कीर्त्तन रास रचायो।
कलि जीवन को मन्त्र सुनायो,नाम हरि हरि बोल ।।आयो०
भक्तनको गिन-गिनके नचायो,पापिन को चुन-चुन अपनायो।
नीचन को नव-नवके उठायो, नाम हरि हरि बोल ।।आयो०
घर भीतर के लोग नचाए, वन वीथिन के वाघ नचाए।
नीच ऊँच पशु पक्षी नचाए, नाम हरि हरि बोल ।।आयो०

दिग्विजयी को दीन बनायो, न्यायाचारज गाय नचायो।
संन्यासीपति दास बनायो, नाम हरि हरि बोल ।।आयो०
यवन पति की आज्ञा मिटाई,हरि सङ्कीर्त्तन ध्वजा फहराई।
भुक्ति मुक्ति की खोल कलाई, नाम हरि हरि बोल ।।आयो०
श्री राधा महिमा प्रगटाई, व्रजरस सीमा प्रेम लखाई।
'प्रेम' की युक्ति गाय सुनाई, नाम हरि हरि बोल ।।आयो०

(४०३)

केशव गोविन्द गोपाल कन्हैया नाम हरि हरि बोल ।।

जो फल सत युग ध्यान में गायो,
त्रेता में यज्ञ याज्ञ बतायो,
द्वापर हरि पूजन ते पायो,
कृष्णनाम कलिकाल सोई फल नाम हरि हरि बोल ।।केशव०
कलि में और सब साधन कूरे,
नाम बिना सब यतन अधूरे।
बावरे सोच समझ मन तू रे,
साधन सार विशाल सबहि तें,नाम हरि हरि बोल ।।केशव०
भलो बुरो चाहे जाने अजाने,
ऊठत बैठत जगत जुड़ाने,
शुद्ध अशुद्ध मुख नाम बखाने,
काटत पापन जाल सबन के, नाम हरि हरि बोल ।।केशव०

नन्दनन्दन वृषभानु दुलारी,
राम लला श्री जनक कुमारी,
इन के नाम सब कलिमल हारी,
सुखप्रद परम रसाल मनोहर नाम हरि हरि बोल ।।केशव०
नाम की महिमा तुलसी सुनाई ।
राम न सकहिं नाम गुण गाई ।
सूर कबीर और मीरा बाई ।
श्याम श्रीगिरिधरलाल रट्यौ सबनाम हरिहरि बोल।।केशव०
और भरोसो जौन के जोई ।
भलें करे मनमानी सोई ।
हमरो भलो नाम ते होई ।
रटत-रटत गोपाल'श्याम'नित्य नाम हरि हरि बोल ।।केशव०

(४०४)

प्राणी भजले राधे-श्याम काम तेरे कोऊ न आवैगो ।
देख यह स्वारथ को संसार,
पिता मात भ्रात सुत नारि,
भजन कर हरि को बारम्बार,
तन ते सुआ उड़ जाय सङ्ग तेरे कोई न जावैगो ।।प्राणी०।।
निशिदन डसत विषय को व्याल,
कि लिपट्यो ऊपर मायाजाल,
भजन कर छोड़ दे सब जञ्जाल,
रे सोच विचार नहीं सिर धुन पछितावैगो ।।प्राणी०।।

छोड़ ...

देख तू काम क्रोध को मार,
दया तू लै हिरदय में धार,
मिलेंगे निश्चय कृष्ण मुरार,
नहीं भवसागर मांहि पड़ो नर गोते खावैगो ।। प्राणी० ।।
कम कुछ पहले कर आयो,
जनम तैंने मानुष को पायो,
गीत गोविन्द नहीं गायो,
लख चौरासी भोग जनम को वृथा गंवावैगो ।। प्राणी० ।।

(४०५)

प्रीतम प्रेम बिना नहीं मिलता, चाहे कोई करलेहु कोटि उपाय।
पच पच रहे सिद्ध और साधक, मुनिजन ध्यान लगाय ।।
योगी जती तपी संन्यासी तिन पै लख्यौ न जाय ।।प्रीतम०
ज्ञानी विज्ञानी सब हारे ईश्वर-जीव मिलाय ।
निरअक्षर गोपी सब व्रज की श्याम लियो अपनाय ।।प्रीतम०
वेद पुराण सभी पचि हारे महिमा लखी न जाय ।
विदुरानी मीरा बाई ने श्याम लिये उर लाय ।।प्रीतम०
जाकी लीला अगम अगोचर ब्रह्मादिक शिर नाय ।
ताकूँ पकड़ि नन्द की रानी ऊखल सङ्ग बँधाय ।।प्रीतम०
धनि धनि व्रजवासी नर नारी धनि धनि यशुदा माय ।
तनक-तनक दधि माखन ऊपर प्रीतम लियो नचाय ।।प्रीतम०

"पगली सखी" प्रेम मदमाती चरण कमल चित्त लाये।
राधाकृष्ण युगल जोड़ी पर जन्म जन्म बलि जाये ।।प्रीतम०

(४०६)

पीतपट वारौ री पुतरीन में गयो है समाय।
श्रवनन श्याम बंसुरियो वारो, बीच नासिका नन्ददुलारो।
जिह्वा जसुमति जू को प्यारो।
शीश सांवरो केश बिच, केशव छबि दरसाय।
वेणी बंसीधर बस्यौ, कैसे काढ्यो जाय ।। पीत० ।।
गोप कपोलन कृष्ण कन्हैया, हौंठन हरि हलधरजू को भैया।
कुण्डल कालिय को नथवैया।
श्याम पुतरियन श्याम छबि, छिन छिन पड़त लखाय।
बेसरि बङ्क बिहारजू, झुकि झुकि झोका खाय ।।पीत०।।
पले पड्यो ग्वालनको सङ्गी, छतियां छिप रह्यो छैल त्रिभङ्गी।
चोली चोर चतुर नव रङ्गी।
पसुरिन पग प्रतिपाल के, नाभि नरोतम राय।
कटि कमलापति जांघजुग, जगन्नाथ सुखदाय ।।पीत०।।
भुजा बीच भक्तन हितकारी, नरम कलैयन कृष्ण मुरारी।
पहुँचे परमानन्द गिरधारी।
मुन्दरी में मोहन छबि, छिन छिन परत लखाय ।।
रोम रोम में रमापति, "श्याम" निरखि बलि जाय ।।
पीत पट वारो री पुतरिन में गयो है समाय ।।

(४०७)

तीरथ राज तिलक त्रिभुवन को,धनि धनि वृन्दावन सुखदाई ।
तृण तरु लता बेलि अति प्यारी,मणिमय भूमि विश्वते न्यारी,
दर्शन करत कटत अघ भारी ।
तरल तरङ्ग देखि यमुना की, सुरमुनि रहे लुभाई ॥तीरथ०
सद नवनीत प्रात दै मैया ।
सांझ समय मथि प्यावै धैया,बन फल तोड़ि देत बल भैया ।
कहा करूँ वैकुण्ठ जाय के,यह सुख तज्यौ न जाई । तीरथ०
गिरि गोवर्धन देव हमारो ।
जाने मान इन्द्र को मारयौ, सोई या व्रज को रखवारौ ।
निर्भय गाय चरै मोहन की, राधा की ठकुराई ॥तीरथ०
शुद्ध प्रेम गोपी गोपन को ।
निरखत अङ्ग ताप जाय तनको,अटपटै बोल चुरावै मनको।
धनि धनि या व्रजकी छबि,जाने ब्रह्म लियौ भरमाई। तीरथ०

(४०८)

जो रस बरस रह्यौ वृन्दावन,वाको दरस हूँ त्रिभुवन नाँहि ।
शकूर ह्वै कब बंसी बजाई,
नृसिंह ह्वै कब गाय चराई, कछुवा ह्वै कब गोपी नचाई ।
मीन ह्वै कब चीर चोरि कै, चढ्यो कदम्ब पै जाई ॥जो रस०
नृसिंह ह्वै जो गाय घेरतो,
दहाउत धूसरि धौरी टेरतो, एकहूँ को कहुँ लाग न पांवतो ।

रहि जाते नृसिंहजी इकले, गोपी ग्वाल न गाइ ॥जो रस०

वामन ते भये लम्बे नाथा,
जो कहुँ देखति जसुमति माता, बांधि जू लेति कैसे हाथा।
लम्बे देव की वह झांकी कहां,यह झांकी व्रज मांहि ॥जो रस०

राम लला कब घर घर धाये,
पकड़ि पकड़ि किन हिये लगाये, दै दै माखन कौन नचाये।
घर बैठे यहां राव रङ्ककों, गङ्गा देहूँ नहवाई ॥जो रस०

राज पाट हों नांहि करैया,
ओढ़ि कमरिया धेनु चरैया, गोपी ग्वाल सङ्ग गाम बसैया।
मालिक होन चहौं नहिं व्रजमें,यहां तो चाकर भाई ॥जो रस०

कब वैकुण्ठ में जूँठन खाऊँ,
गिल्ली डण्डा खेल न पाऊँ, हारि कौन कूँ पीठ चढ़ाऊँ।
वीस बिसै मो जैसो छोरा पैहौं नहिं जग मांहिं ॥जो रस०

रथ विमान को नांहि चढ़ैया,
गरुड़ पीठ पै नांहि उड़ैया, पहरूँ न कबहुँ पांव पनैहां।
पांवन पांवन नंगो डोलूँ, व्रज रज सम जग नांहि ॥जो रस०

घनघन नाहीं चक्र फिरैया,
सनसन नांही बान छुड़ैया, चमचम नहिं तलवार चलैया।
छमछम नूपुर कल-कल मुरली,यह धुनि कहां जग मांहि॥जोरस

—*—

(४०९)

ऐसी कृपा करो महरानी सदा मैं व्रज में वसा करूँ ।
चुन चुन के शृङ्गार बनाऊँ, तुलसी पत्र की माल बनाऊँ
चलि यमुना जल पखार पियौं कुञ्जन में बसा करूँ ॥
सब भक्तन को शीश नवाऊँ, व्रज वासिन के टुकड़े खाऊँ
प्रिया प्रीतम के यश को गाऊँ, यहि मन चहा करूँ ।
नन्दगांव वरसाने जाऊँ, भानु खर में मल मल न्हाऊँ
गहवर वन और खारे सांकरी, रज तन लसा करूँ ॥
गोवर्धन की परिक्रमा जाऊँ, मानसी गङ्गा गोता लगाऊँ
स्वर्ग लोक वैकुण्ठ न पाऊँ, चरणों में वसा करूँ ।
नन्द बबा के चरण मनाऊँ, दाऊजी को शीश नवाऊँ
कृष्णानन्द भक्ति वर पाऊँ, युगल छबि लखा करूँ

(४१०)

तेरो नटवर नन्दकिशोर यशोदा हम पै अटकै री ॥
यमुना जल हम भरिवे जावैं, रोज राह में ठाढ़ो पावैं ।
गैल रोक के ठाढ़ो ह्वै जाय, साड़ी झटकै री ॥
नरम कलाई पकड़ मरोड़े, बरजोरी चोरी झकझोरे ।
घेर के झट किचकिची बांधे, गले सों लटकै री ॥
हुवो अनोखो तेरो दानी, व्रजयुवतिन सों करे मनमानी ।
नैक करे न लाज शरम हमें डगरे में पटकै री ॥

हमते दान मांगे जोवन को,राह नित्य रोके पनघट को।
नेग दिखावै नैन चलावै, नाचै मटकै री॥
करत कुचाल फिरत मनभाई,नन्दपिता जाके यशुमतिमाई।
ऐसो कोई रह्यो न व्रज में याकूं हटकै री॥

(४११)

अपनो गांव राखलेहु नन्दरानी हम कहूं अनत बसैंगी जाय
बड़े घरन की तुम जो माई,
छोटन की कहो कहा बसाई,
करो अनीति भलैं मन भाई,
एक दिनां की नाहीं तीस दिन हमपै सही न जाय ।।अपनो०
अपने सुत को नैक न बरजो,
करत कुचाल फिरत दिन भर जो,
लाडिलो करि राख्यो है निठुर सो,
हटकनहार न सिर पर कोई करत फिरत मनभाय ।।अपनो०
आप जो खाय तो खाय सो खाय,
मोर बन्दरन काहिं लुटाय,
इतने पर रहहिं होंठ चबाय,
रह्यो सो दै ढुरकाय हाय सब बासन फोर गिराय ।।अपनो०
राजा राखहिं सब परजन कूं,
मेटि कुचाल दण्ड चोरन कूं
सुत सम पालैं निज पुर जन कूं,
सोई नीति अब रही न या पुर कैसे कोई निभाय ।।अपनो०

(४१२)

अरी मेरो मारग रोक्यो कृष्ण कन्हैया ने ।
अरी मोहे अति दुख दीनों दाऊ के भैया ने ॥
मारग में मिल गए नन्दलाल, सङ्ग में लिए बहुत से ग्वाल ।
अरी मेरो घूँघट खोल्यो बंसी बजैया ने ।
माखनकी जो पटक दई मटकी—मेरी बांह पकड़कर झटकी ।
अरी चुरियां चटकाईं रास रचैया ने ॥
फेंट गुलाल हाथ पिचकारी—मोसों कहे सुन सांवरी प्यारी ।
अरी नख शिखलौं भिगोई गिरिके उठैया ने ॥
पकड़ूं तो मेरे हाथ न आवै, अंगूठा दिखाय रज गारी चखावै ।
अरी मैं तो नाच नचाई धेनु चरैया ने ॥
बड़े बड़े ऊधम सोई मचावै—मेरी नैक पेश नहीं जावै ।
अरी मैं बहुत सताई नाग नथैया ने ॥

(४१३)

माखन की चोरी छोड़ सांवरे मैं समझाऊँ तोय ।
नौ लख धेनु नन्दबाबा घर नित नयो माखन होय ॥
बड़ौ नाम है नन्दबाबा को हंसी हमारी होय ।
हमको तो गौवन पै पठयो आप खिरक में सोय ॥
ग्वालिन सङ्ग बतराए जाने दई कमरिया खोय ।
बरसाने तेरी होय सगाई नित नई चरचा होय ॥

बड़े घरन की राज दुलारी नाम धरैगी तोय।
माखन की चोरी छोड़ याहिं ते भलो तुम्हारो होय॥
माखन की चोरी नाहिं छूटै री होनी होय सो होय।
ऐसे कहि ग्वालिन के आगे दिये नैन भरि रोय॥

(४१४)

ग्वालिन मति पकड़ै मेरी बैयां, दूख रही मेरी नरम कलैया॥
मैं नहिं तेरो माखन खायो।
अपने घर के धोके आयो।
मटुकी तें नहिं हाथ लगायो।
आज छोड़ दे हा हा खाऊँ, लेऊँ तेरी बलैया॥
खोल किवड़िया तू गई पानी।
भूल गई फिर क्यों पछतानी।
मोते कर रही ऐंचातानी।
झूंठो नाम लगावै मेरो, तेरे घर में घुसी बिलैया॥
आज छोड़ दे सौगन्ध खाऊँ।
पुनि नहिं तेरे घर में आऊँ।
नित तेरी गागर उठवाऊँ।
वेग छोड़ दे देर हो रही, बोल रह्यो बल भैया॥

(४१५)

मैया जब मैं घरते चलूं बुलावै, घर में ग्वालिन मोहिं।
अचक हाथ को झालो देके।

मीठी बोलें देवर कह के।
निधरक है जायें सांकर दैके।
छपट उतारें काछनी, मुरली लैंहि छुड़ाय।
मैं बालक यह धींगरी, इनते कहा बसाय।
आपहुँ नाचैं मोहे नचावैं कहा सुनाऊँ तोहिं ॥ मैया० ॥
मैं भोरो यह चतुर गुजरिया।
इक दिन लै गई पकड़ अँगुरिया।
टूटी सी याकी राम कुठरिया।
धरी मटुकिया मो निकट, गोरस की तत्काल।
माखन दूंगी घनो सो, चींटी बीनो लाल।
मैंने याकी चींटी बीनी यह निधरक रही सोय ॥ मैया० ॥
एक दिनां पनघट पै मैया।
मैं लैठ्यो इक द्रुम की छैंया।
सङ्ग बैठो बलदाउ भैया।
यह पहुँची लै गगरिया, रिपट्यो याको पांव।
मेरे गोहन पड़ गई, धक्का दीन्हों श्याम।
गुलचा दै दै गाल लाल कियो मैं ठाढ़ो रह्यो रोय ॥ मैया० ॥
तेरे मुँह पर करैं बड़ाई।
बाहर निकसैं करैं बुराई।
ऐसी व्रज की ढीठ लुगाई।

इनको पतियारो करैं, मैं तस्कर यह शाह ।
चोर नाम मेरो धरचो, होंन न दैंगी ब्याह ।
इन ने ऐसी कीन्हीं मोते जैसी करे न कोय ।। मैया० ।।

(४१६)

इकली घेरी बन में आय श्याम तै ने कैसी ठानी रे ।
श्याम मोहि वृन्दावन जानो, लौट कर बरसाने आनो,
मेरी कर जोरे की मानो,
जो कहूँ होय अबेर लड़ैं घर ननद जिठानी रे ।।इकली०।।
दान दधी को दै जो मोय, ग्वालिन तभी जान दऊं तोय,
नहीं तकरार बहुत सी होय,
जो करि है इनकार होय तेरी खैंचातानी रे ।।इकली०।।
दान हम कबहुँ न दियो, रोक मेरो मारग क्यों लियो,
बहुत सो ऊधम है कियो,
आज तलक या व्रज में कोई भयो न दानी रे ।।इकली०।।
ग्वालिन बातें रहीं बनाय, ग्वाल बालन कूं लऊं बुलाय,
तेरो लऊं दधि माखन लुटवाय,
इठलावै हर बार नार तोय छाय रही ज्वानी रे ।।इकली०।।
कंस राजा पर करूं पुकार, मुशक बन्धवाय दिवाऊं मार,
तेरी ठुकराई देहों निकार,
जुलम करै नहि डरै नेक तू नार बिरानी रे ।।इकली०।।

कंस कहा खसम लगै तेरो, वह भातई कहा करै मेरो,
काऊ दिन मार करूं ढेरों,
करूं कंस निरवंश मेट दऊं नाम निशानी रे ॥इकली०॥
आय गये इतमें सबरे ग्वाल, पड़े आंखन में डोरा लाल,
घूम कै चलैं अदा की चाल,
लुट गई ग्वालिन मारग में घर गई खिसियानी रे ॥इकली०॥
करी लीला जो श्यामा श्याम,कौन वरणन कर सकै तमाम,
करूं बलिहार सबै व्रज धाम,
कहते "घसीराम" नन्द को है सैलानी रे ॥इकली०॥

(४१७)

या कारी कामर वारे ने जुलम कर डारे री।
मथुरा में याने जनम लियो हैं, गोकुल में बजे नगारे री॥
सब सोय गये याके पहरे वारे, आप ही खुल गये तारे री।
लै वसुदेव चले गोकुल को, यमुना ने चरण पखारे री॥
कर श्रृङ्गार पूतना आई, छिन में प्राण निकारे री।
'चन्द्र सखी' भज बाल कृष्ण छबि, भक्तन प्राणाधारे री॥

(४१८)

खातिर करलै नई गुजरिया रसिया आयो तेरे द्वार।
यह रसिया गोरी नित्य न आवै,प्रेम होय जब दरशन पावै,
अधरामृत को भोग लगावै,
कर महमानी लै चल भीतर समय न बारम्बार॥

हृदय की चौकी करले हेली, नेह को चन्दन चरच नवेली,
दीक्षा लै वन जइयो चेली,
पुतरिन पलङ्ग बिछाय पलक को करलै बन्द किवार ॥
सबते तोड़ नेह की डोरी, यमुना पार उतर चल गोरी,
निधरक खेलो करियो होरी, नहीं तो यार करै बरजोरी,
"श्याम" रङ्ग चढ़ जायगो जा दिन ह्वै जाए बेड़ा पार ॥

❀ कवित्त ❀

(४१९)

राधिका किशोर देखि नैनन ना चल्यो नीर,
ऐरी धिक्कार भांति भांति भेष कीवै पै।
चरणामृत तुलसीदल लैकै न डारयो मुख,
आली अङ्गार पड़ै दूध दही पीवै पै ॥
नैनन न दृष्टि पड़ै लता पता सेवाकुञ्ज,
गाज गिरै शीश और नाना सुख लीवै पै।
गौर श्याम अङ्ग रङ्ग नैकहुँ ना रंग्यो हियो,
तौ "ललित लड़ैती" डार छार ऐसे जीवै पै ॥
पहले ही जाधे मिले गुन में श्रवन फेरि,
रूपसुधा मधि कीनौं नैनहुँ पयान है।
हंसन, नटनि, चितवनि मुस्कानि सुघ-
राई रसिकाई मिलि मति पयपान है ॥

मोहि मोहि मोहनमयी री मन मेरो भयो,
"हरिचन्द" भेद न पड़त पहिचान है।
कान्ह भये प्रानमय प्रान भये कान्हमय,
हिये में न जान पड़े कान्ह है कि प्रान है॥

(४२०)

बाटन में घाटन में बीथिन में बागन में,
वृच्छन में बेलिन में बाटिका में बन में।
दर में दीवारन में देहरी दरीचन में,
हीरन में हारन में भूषन में तन में॥
कानन में कुञ्जन में गोपिन में गायन में,
गोकुल में गोधन में दामिनि में घन में।
जहां जहां देखों तहां श्याम ही दिखाई देत,
"सालिग्राम" छाय रह्यौ नैनन में मन में॥

(४२१)

रुचिसों संवारे नांहि अङ्ग अङ्ग श्यामा श्याम,
ऐरी धिक्कार और नाना कर्म कीवै पै।
चरणन को धोय निज करन नहीं पान कीयो,
आली अङ्गार पड़ै शीतल जल पीवै पै॥
विचरै नहिं वृन्दावन कुञ्जन लतान तरे,
गाज गिरै अन्य फुलवारी सुख लीवै पै।

"ललित किशोरी" बीते बरस अनेक दृग,
देखे नांहि प्राण प्यारे छार ऐसे जीवै पै ॥

(४२२)

बांसुरी बजे तो व्रज हम न बसैंगी बीर,
बांसुरी बसाओ लाल हमें विदा दीजिए।
जेते राग तेते दाग, जेते छेद तेते भेद,
जेतो शोर तेतो घोर रोम रोम छीजिए ॥
तानके तिरीछे बाण लागत हैं हमेंहि आन,
श्रवण न सुने जायें बन में बसीजिए।
वंशी को छोड़ो श्याम, विनय करत व्रजबाम,
ऐसी कीन्हीं "सूर" प्रभु ऐसी हूँ न कीजिए ॥

(४२३)

वारि डारों शरद इन्दु मुख छबि गोविन्द पै,
दिनेशहूँ को वारि डारों नखन की छटान पर।
कोटि काम वारि डारों अङ्ग अङ्ग श्याम लखि,
वारि डारों अलि आलि कुञ्चित लटान पर ॥
नैनन की कोरन पैं कञ्जहू को वारि डारों,
वारि डारों हंसहू को चाल लटकान पर।
देखि सखि ! आज व्रजराज छबि कहा कहूँ,
कामधेनु वारि डारों भ्रुकुटि मटकान पर ॥

(४२४)

नैनन चकोर मुख चन्द्रहूँ को वारि डारों,
वारि डारों चित्त मनमोहन चित्तचोर पै।
प्राणहूँ को वारि डारों हंसन दशन लाल,
हेरन कुटिल बांके लोचन की कोर पै॥
वारि डारों मैन रङ्ग अङ्ग अङ्ग श्यामा श्याम,
हिलन मिलन रस रास की झकोर पै।
अति ही सुघर वर सोहत त्रिभङ्गी लाल,
सर्वस ही वारि डारों ग्रीवा की मरोर पै॥

(४२५)

मुकुट के रङ्गन पै इन्द्र को धनुष वारों,
अमल कमल वारों लोचन विशाल पर।
कुण्डल प्रभा पै कोटि प्रभाकर वारि डारों,
कोटिक मदन वारों बदन रसाल पर॥
तनु की तरुणाई पै नीरद सजल वारों,
चपला चमक उर मोतिन की माल पर।
चाल पै मराल वारों मनहूँ को वारि डारों,
और कहा कहा वारों छबि नन्दलाल पर॥

(४२६)

लजीले, सकुचीले, सरसीले, सरमीले से,
कटीले औ कुटीले चटकीले मटकीले हैं।

रूप के लुभीले, कजरीले, उनमीले बर-
छीले तिरछीले, फंसीले औ गंसीले हैं॥
"ललित किशोरी" झमकीले गरबीले मानों,
अतिहि रसीले, चमकीले औ रङ्गीले हैं।
छबीले, छकीले, अरु नीले से नसीले आली,
नैना नन्दलाल के नचीले औ नुकीले हैं॥

(४२७)

कहा री कहूँ आली छबि कारी कान्ह कारे की,
कारे तन कारो सब साज सुखकारी है।
कारो पङ्ख मोर सिर कारी जड़तारी पाग,
कारी अलकारी घुंघरारी सटकारी है॥
कारी छबि बागे की देत लसकारी पग-
पायल झनकारी चित्त चोट देत कारी है।
"श्याम" इन कारी पुतरीन छबि कारी छई,
जल थल सारी भई सृष्टि जग कारी है॥

(४२८)

गुणन की खानि कान्ह भक्तन के प्राण कान्ह,
कौन गुण है जो नांहि सांवरे सलोने में।
यमुना के जल में तुलसी के दल में,
कौन रस है जो नांहि सन्तन के दोने में॥

जग दुख मेटन को श्याम मुख देखन को,
सिद्ध न मनोरथ को बास व्रज होने में।
ऐहो दृढ़ आस चित्त "श्याम" पद-दास हित,
दीजै सुखवास नित्य कुञ्जन के कोने में॥

(४२९)

छैल जो छबीला, सब रङ्ग में रंगीला बड़ा,
चित्त का अड़ीला कहूँ देवताओं से न्यारा है॥
माल गले सोहै, नाक मोती सेत जो है,
कान कुण्डल मन मोहै, लाल मुकुट सिर धारा है॥
दुष्ट जन मारे, सब सन्त जो उबारे, "ताज"–
चित में निहारे प्रन प्रीति करन वारा है।
नन्द जू को प्यारा, जिन कंस पछारा,
वह वृन्दावन वारा, कृष्ण साहब हमारा है॥

(४३०)

सुनो दिलजानी मेरे दिल की कहानी,
तुम हाथ हूँ बिकानी बदनामी भी सहूँगी मैं।
देव पूजा ठानी मैं निमाज हूँ भुलानी,
तजे कलमा कुरानी सारे गुनन गहूँगी मैं॥
सांवरा सलोना सिरताज सिर कुल्ला दिये,
तेरे नेह दाग में निदाग ह्वै रहूँगी मैं।

नन्द के कुमार कुरबान तेरी सूरत पैं,
हौं तो मुगलानी हिन्दुवानी ह्वै रहूँगी मैं ॥

(४३१)

परमदयाल दूजी आपसी न दीसै और,
एहो सिरमौर पाद--पद्म सिर नाऊँ मैं ।
लाड़िली लाल की मनभावनी रिझावनी हौ,
गुनन अथाह सिन्धु थाह किम पाऊँ मैं ॥
अति मतिहीन दीन बावरी हौं स्वामिनि जू,
ऐहो कृष्ण अलो चेरी रावरी कहाऊँ मैं ।
श्रीबन निकुञ्ज में दीजिये निवास सदा,
"लाल बलवीर" राधा राधा गुन गाऊँ मैं ॥

(४३२)

इन्दु से बदन पर, मीन से दृगन पर,
विज्जु से दसन पर छबि दृगन खगी रहै ।
मन्द मुस्कान पर, बांसुरी की तान पर,
पट फहरान पर मो मती ठगी रहै ॥
अधरन लाल पर, कण्ठ बनमाल पर,
"लाल बलवीर" उर जोति सी जगी रहै ।
मुक्त से नखन पर, कञ्ज से चरन पर,
सांवरे ललन ! मोरी लगन ही लगी रहै ॥

(४३३)

प्रेम भरे प्रीति भरे नीति भरे रीति भरे,
जीत भरे औरन तें देखियत कारे हैं।
रस भरे, जस भरे, नेह भरे, तेह भरे,
नोंक भरे झोंक भरे काम सर वारे हैं॥
मैन भरे, सैन भरे, चैन विन वैन भरे,
"लाल बलवीर" मधु भरे मतवारे हैं।
सान भरे, ज्ञान भरे, आन बान मान भरे,
लोभ भरे लाग भरे, लोचन तिहारे हैं॥

(४३४)

सब सुखरासी वृन्दाविपिन बिलासी छैल,
घट घट वासी तुम जानों पास दूर की।
करुनानिधान गुनखान सांवरे सुजान,
चतुर अगारी सुधि लेते रहे कूर की॥
"लाल बलवीर" दास जानिकै खवासी मोहि,
राखौ निज पासी आंख प्यासी वर नूर की।
गरजी विचारे को तो अरजी किए ही बेने,
माननी न माननी यह मरजी हुजूर की॥

(४३५)

जानूं नहिं पूजा पाठ सेवा भाव विधि निषेध,
प्रेम भक्ति हृदय नांहि शास्त्र को विचार है।

सन्त पद सेव्यो नांहि अटचो नांहि तीर्थ मांहि,
यज्ञ दान तप नांहि कर्म सुख सार है ॥
पापी हूँ कुचाली कुटिल अधम हुं निकारो नीच,
एकहु नहीं है गुण अवगुण हजार हैं ।
"श्याम" भव तरण हित और न उपाय कोऊ,
दीनबन्धु एक तेरे नाम को अधार है ॥

(४३६)

दीनबन्धु दीनानाथ दास दुख दरन द्रुत,
द्रौपदी को दुख दल्यो द्वारका ते धाये के ।
पाण्डुसुत अम्बरीष कोप ते मुनीश के,
ग्रहते गजेश राख्यो नंगे पांव आये के ॥
ऐते बस दीन जाने, करुणा धौं साथ बेची,
विप्र हाथ चार मूठी तन्दुलान खाये के ।
व्रजराज जन निवाज आज लाज मेरी राखो,
"श्यामदास" दै अवाज दीन अकुलाये के ॥

(४३७)

मैं तो हूँ पतित आप पावन पतित नाथ,
पावन पतित हो तो पातक हरो ही गे ।
मैं तो महादीन आप दीनबन्धु दीनानाथ,
दीनबन्धु हो तो दया जीय में धरो ही गे ॥

मैं तो हूं गरीब आप तारक गरीबन के,
तारक गरीब हो तो विरद वरो ही गे।
मेरी करनी पै कुछ मुकर न आज कान्ह,
करुणानिधान हो तो करुणा करो ही गे॥

(४३८)

कैसे तुम गणिका के औगण न गिने नाथ,
कैसे तुम भीलनी के झूठे बेर खाये हो।
कैसे तुम द्वारका में द्रौपदी की टेर सुनी,
कैसे तुम गज काज नंगे पग धाये हो॥
कैसे तुम सुदामा के छिन में दरिद्र हरे,
कैसे तुम उग्रसैन बन्दी ते छुड़ाये हो।
मेरी बेर एती देर कान मून्द रहे नाथ,
दीनबन्धु दीनानाथ काहे के कहाये हो॥

(४३९)

दीनबन्धु दीनानाथ व्रजनाथ रमानाथ,
राधानाथ मो अनाथ की सहाय कीजिए।
तात मात भ्रात कुलदेव गुरुदेव स्वामी,
नातो तुमहीं सो मेरी विनय सुन लीजिए॥
कीजिये 'निहाल' देर कीजिये न झीनी कहूँ,
दीन जान दास मोहिं अपनाय लीजिए।

कीजिए कृपा कृपाल सांवरे विहारीलाल,
मेटि दुख जाल बास वृन्दावन दीजिए ॥

(४४०)

दास तो तिहारे औ उदास तो तिहारे,
दूर पास तो तिहारे आम खास तो तुम्हारे हैं ।
दीन तो तिहारे, मति हीन तो तिहारे,
जो नवीन तो तिहारे, प्राचीन तो तुम्हारे हैं ॥
शूर तो तिहारे, मशहूर तो तिहारे,
सांचे कूर तो तिहारे, रांचे नूर तो तुम्हारे हैं ।
भायक तिहारे, यश गायक तिहारे,
हो सहायक हमारे पद पायक तुम्हारे हैं ॥

(४४१)

मन से जहां राजा मुन्शी है मतङ्ग मोह,
मद तो मोहर्रर की मदद नित जारी है ।
क्रोध कोतवाल लोभ नाजिर की मिल्लत सूं,
ज्ञान मुद्दई की मिसल बिगाड़ डारी है ॥
अहङ्कार अहलमद करत न रिपोर्ट भलि,
तृष्णा चपरासी की दस्तक नित जारी है ।
दीन की अपील एक यहि है 'केशव' जू,
अरजी तो हमारी आगे मरजी तुम्हारी है ॥

(४४२)

तारोगे न श्याम तो किशोरी की अदालत में,
नेह को वकील कर नालिश लगायेंगे।
वायदा सदा तारिवे को कीन्हों घनश्याम तुम,
अब इनकारी यह दावा लिखवाएँगे॥
दावा के जवाब में कहोगे जो पापी हो तुम,
हम अनेक पापियों की नजीर दिखलायेंगे।
इतने पै भी तारोगे न घनश्याम यदि,
भण्डार करुणा का कुर्क करवाएँगे॥

(४४३)

कीन्हीं है अपील पर लड़ता हूँ मुफलसी में,
खर्च खुट जाये तो खजाने सूं दीजिये।
चार चपड़ासी दिन रात मोहै घेरे रहैं,
काम क्रोध लोभ मोह इन सूं कहा कीजिये॥
मैं तो हों कसूरमन्द आन फँसा जेल बीच,
पांव पड़ी बेड़ी आप इन्हें काट दीजिये।
आप सदर आला अमला सब अदालत के,
कोई तरकीब सूं निकार पर कीजिये॥

(४४४)

पण्डित भये तो कहा शास्त्र अरु पुराण पढ़े,
जो पै लिखि वेद हूँ को माखन निकारचो न।

धनिक भये तो कहा लाखन करोर पाये,
जो पै लै गरीबन को दारिद्र निवारयो न ॥
"लाल बलबीर" सति सूरमा भये तो कहा,
जो पै वकत पड़ें मित्र कारज संवारयो न।
जोगी भये जती भये तपी भये त्यागी भये,
धूरि भये जो पै राधा नाम को उचारयो न ॥

(४४५)

कञ्चन के मन्दिरन दीठि ठहरात नांहि,
सदा दीपमाल लाल रतन उजारे सों।
और प्रभुताई सब कहां लौं बखानौं,
प्रतिहारिन को भीर भूप टरत न द्वारे सों ॥
गङ्गा जू में न्हाये मुक्ता फलहुँ लुटाये,
वेद बीस वार गाये ध्यान कियो निरकारे सों।
ऐसे ही भये तो कहा कीन्हौं 'रसखान',
जो पै चित्त दै न कीन्हीं प्रीत पीत पटवारे सों॥

(४४६)

कहा 'रसखान' सुख सम्पत्ति सुमार महँ,
कहा महायोगी ह्वै रमाये अङ्ग छार को।
कहा साधै पञ्चानल, कहा सोये बीच जल,
कहा जीति लीन्हें राज सिन्धु आर-पार को ॥

जप बार बार तप संयम अपार व्रत,
तीरथ हजार अरे बूझत लवार को।
सोई हैं गवार जिन कीन्हों नहिं प्यार,
नहिं सेयो दरबार यार नन्द के कुमार को ॥

(४४७)

कञ्चन के महल--महलात झलकत अति,
लोगन में मान सुख भोग हूँ सवायो है।
सम्पत्ति अपार धनराशि को सम्भार नाहि,
पूरो परिवार तन यौवन समायो है ॥
जप तप--व्रत--नेम ज्ञान को गरूर पूरो,
दान धर्म सर्व पुण्य कर्महुँ कमायो है।
साज सब जुटायो तो जुटायो कहा'श्याम'जोपै,
प्रेम नहीं पायो कृष्ण नाम नहीं गायो है ॥

(४४८)

बार बार आवैगो असार संसार मँह,
बार बार मृत्यु अनिबार तोहै आवैगी।
बार बार खावैगो अम्बार षट् व्यञ्जन के,
बार बार प्रीति परिवार की सुहावैगी ॥
बार बार सम्पत्ति अपार तू कमावैगो,
वस्तु सब बार बार आवै अरु जावैगी।

बार बार 'श्याम' कहत एक बार कृष्ण कहु,
बार बार ऐसी घड़ी हाथ नहिं आवैगी ॥

(४४९)

चाहे योग करि भ्रकुटि के मध्य ध्यान धरि,
चाहे नाम रूप मिथ्या जानि के निहार लै ।
निर्गुण निर्भय निराकार ज्योति व्याप रही,
ऐसो तत्वज्ञान निज मन में तू धार लै ॥
'नारायण' अपने को आप ही बखान करि,
मोतें वह भिन्न नहीं या विधि पुकार लै ।
जौलौं तोहिं नन्द को कुमार नहीं दृष्टि परै,
तब लौं तू भले बैठि ब्रह्म को विचार लै ॥

❀ सवैया ❀

(४५०)

प्रीति को बान लग्यो तन में,
बदनामी को बीज मैं बोय चुकी री ।
मेरो कान्ह कुंवर सूं तो नेह लग्यो,
जिन्दगानी से हाथ मैं धोय चुकी री ॥
खान पान बिसरयो सिगरो मैं तो,
मातु पिता सब खोय चुकी री ।

अब चाहे लाख कहो सो कहो,
जो तो होनी थी सो होय चुकी री ॥

(४५१)

सुन्दर मूरति दृष्टि पड़ी तब से जिय चञ्चल होय रहा है ।
सोच संकोच सभी तो मिटै अरु बोल कुबोल सभी तो सहा है ॥
रैन दिना मोहै चैन न आवै नैनन सूं जल जात बहा है ।
तापै कहौ सखी लाज करो अब लागि गई तब लाज कहा है ॥

(४५२)

काहे को वैद्य बुलावत हो मोहिं रोग लगाय के नारी गहो रे ।
वह मधुवा मधुरी मुस्क्यान निहारे बिना कहौ कैसे जियो रे ॥
चन्दन लाय कपूर मिलाय गुलाब दुराये के दूर धरो रे ।
और उपाय कछु न बने ब्रजराज मिलैं सो इलाज करो रे ॥

(४५३)

प्राण बसी वहि माधुरी मूरति देखे बिना जिया धीर न आने ।
लाज की आन गई कुल कानि सो कैसे करूँ जियरा नहिं माने॥
प्रीति की रीति बुरी 'मुरली' तन जाके लगी सो लगी पहिचाने ।
मोहि तो दीखैं सभी जग सांवरो सांवरे की गति सांवरो जाने॥

(४५४)

मारग प्रेम को को समझै हरिचन्द यथारथ होत यथा है ।
लाभ कछू न पुकारन में बदनाम हि होन की सारी कथा है ॥

जानत है जियरा हि भली विधि लोक उपाय सभी विरथा है।
बावरे हैं ब्रज के सगरे मोहे नाहक पूछत कौन व्यथा है ॥

(४५५)

नहिं चित्र लखा न चरित्र सुना,
वह सांवरि सूरत जाने हि क्या ।
जिसने न लखि मन मोहनी मूरति,
वह ठान हिये में ठाने हि क्या ॥
जिस मर्कट ने इमली हि चखी वह,
स्वाद सुधा पहिचाने हि क्या ।
जिसने कभी प्रेम किया ही नहिं वह,
प्रेम की आहों को जाने ही क्या ॥

(४५६)

नेह की नाव को दाव लग्यो,
बल नाहिं रह्यो ब जात है बेरी ।
लाज को लङ्गर टूटि गयो अब,
आस बड़ी है गोविन्द जू तेरी ॥
मल्लाह ने कर सूं छाड़ि दई,
अब डूबत है बेदाम की चेरी ।
मो पै सहाय करो तो करो,
नहिं तो लोग हसैंगे बजाय हथेरी ॥

(४५७)

जिन तेरी तरफ सहज देखा वह आहा नक्शे दीवार रहा ।
मुख 'लालबिहारी' तेरे की उपमा का सोहिं विचार रहा ॥
खूबी सी दौलत मिलि तुझे पर तेरा दिल न उदार रहा ।
तू ईसा हुआ जमाने का मैं दर्दमन्द बीमार रहा ॥

(४५८)

जानी तेरा मुखचन्द्र लखे लेता है हिमकर ताब कहीं ।
दिल में आदश मलीन हुआ फिरता है कञ्ज खराब कहीं ॥
क्या ताकत पड़ी फिरश्तों को जो आगे करें जवाब कहीं ।
जब बेनुकाब हो तू दिलबर फिर रोशन हो महताब कहीं ॥

(४५९)

बिछुरे पिया के जग सूनो भयो,
अब का करिये कहो देखिये काहा ।
चाह लगी तुम सङ्गम की,
इन दूषन को अब लेखिये काहा ॥
'हरिचन्द' जो हीरन को व्यवहारि,
इन कांचन को ले परेखिये काहा ।
जिन आखिन में तुव रूप बस्यौ,
तिन आखिन सूं अब देखिये काहा ॥

(४६०)

सुख भाज गये व्रजराज मेरे,
विपरीत भये हा दिनां अब मेरे ।

काढ़ दियो वृन्दावन ते अहो,
लालन हाथ परचो कहा तेरे ॥
शरणागत प्रतिपाल तुम्हें ये,
जो भार भये निज चरणन चेरे ।
राखवे कूं नहिं कुञ्ज निकुञ्ज तो,
"श्याम" थे क़ील के पुञ्ज घनेरे ॥

(४६१)

कानन दूसरौ नाम सुनै नहिं एकहि रङ्ग रंग्यो यह डोरो।
धोखेहुँ दूसरो नाम कढ़ै रसना मुख बांधि हलाहल बोरो॥
'ठाकुर' चित की वृति यही अब कैसेहुं टेक तजै नहिं भोरो।
बावरी सो अखियां जरि जायें जो सांवरो छांड़ निहारत गोरो॥

(४६२)

हे वृषभानु सुते ललिते ! मैं कौन कियो अपराध तिहारो।
काढ़ दियो ब्रजमण्डल तें अबहुँ कछु दण्ड रह्यो अति भारो॥
देहु सदा व्रजको बसिवो वह निकुञ्ज कुटी यमुनाजल प्यारो।
आपनौं जानि दया की निधान भई सो भई अब वेग संवारो॥

(४६३)

बलि जाऊँ सदा इन नैनन पै बलिहारि छटा पर होता रहूँ।
कभी भूलेन याद तुम्हारी प्रभु चाहे जाग्रत स्वप्नया सोतारहूँ।
श्रीकृष्ण ही कृष्ण पुकारा करूँ आसूं से मुख को धोता रहूँ।
व्रजराज तुम्हारे वियोग में बस दिनरात सदा मैं रोता रहूँ॥

(४६४)

व्रजराज से नाता जुड़ा जब है,तब जगकी क्या परवाह करें।
बस याद में रोते रहैं उनको, पलकों पर अश्रु प्रवाह करें॥
जितनी वह दूर रहैं हम सों, उतनी हम उनकी चाह करें।
सुख अद्भुत प्रेम की पीड़ में है,हम आह करें वह वाह करें॥

(४६५)

हम ऐसे नहिं चाहन हारे जो,आज तुम्हें कल औरको चाहैं।
फैंकदे आंखें निकारके दूरि,जो औरकी ओर लखें ओ लखाहैं॥
लाख मिलो तुमसे बढ़कर,हम तुमहिं चहैं और तुम्हीं सराहैं।
जब लगि प्राण रहैं तनमें,तबलौं हम नेहको नातो निबाहैं॥

(४६६)

चन्द्र से आनन कंचन से तनहूँ,लखिके बिन मोल विकानी।
नव'अरविन्दसी'आंखिनकूं,हठि देखत मेरी आंखि सिरानी॥
राजत हैं मनमोहन के सङ्ग,वारौं मैं कोटि रमा रति बानी।
जीवन मूरि सबै व्रज की,ठकुरानी हमारी श्री राधिकारानी॥

(४६७)

लालन एक विनय सुनिये, नित मेरी गलीन में आईये न।
आईये तो चलिये चुपके, नहिं वंशी बजाईये गाईये न॥
गाईये जो कबहुँ 'किरपालु', पर द्वारे पै आय सुनाईये न।
सुनाईये जिया अपनाईये न, अपनाईये तो कहुँ जाईये ना॥

(४६८)

चारोंहिं वेद पुराण अठारहौं, चौंसठ तंत्र के मन्त्र विचारे।
तीन सौ साठ महाव्रत संयम, मङ्गल यज्ञ पुरी पुर सारे॥
योग वियोग प्रयोग उपासन, मैं 'हरिदत्त' सभो निरधारे।
तीनोंहि लोकन के सगरे फल, मैं हरिनाम के ऊपर वारे॥

(४६९)

क्षणभंगुर जीवनकी कलिका,कल प्रातमें जाने खिली न खिली।
मलयाचलकी शीतल अरु मन्द,सुगन्ध समीर चली न चली॥
कलिकालकुठार लिये फिरता,तन कोमल चोट झिलीनझिली।
रटले अरी रसना कृष्णको नाम,तू अंत समयपै हिलीन हिली॥

(४७०)

सब यन्त्र मन्त्र बेताव रहें, जब चढ़ै जुलफ का जहर कहीं।
फिर लगे सुधा रस फीका सा,जब सुनी लटपटी बहर कहीं॥
सुर्खी आलूदे होंठ लखे, क्या पड़ा इलाही कहर कहीं।
जखमी हो फिर न सम्भार सकै,लागै जब लटकन लहर कहीं॥

(४७१)

तोखी चितवन के जखम लगे, मेरे दिल बीच अमाने के।
यूनां तक मुआलिज मिले नहिं;मुझ जखमे जिगर चुचाने के॥
बरुणी की सोई लाल डोरे, दे टांके सलज लजाने के।
कुछ मरहम की दरकार नहीं, सुन अफलातून जमाने के॥

(४७२)

हैं नैन करद से अनियारे, जिन दर्द हजारों गर्द करे।
दिल फरद शरद बेताब हुआ, महताब ताब सूं जर्द करे॥
खञ्जन के गञ्जन रस रञ्जन, अञ्जन दे कञ्जन सर्द करे।
कहौ उनका कौन इलाज करे, जो तैं घायल बेदर्द करे॥

(४७३)

मुख का वर्णन क्या करहि सकूँ,कुछ है उपमा का घेरा सा।
कर दूर नकाब जहर की यह, आंखों में पड़े अन्धेरा सा॥
यहभी मैं बहुत तलाश किया,मन जालिम मिलान मेरा सा।
मुख लाल विहारी तेरे का है, सरद चन्द्रमा चेरा सा॥

(४७४)

अङ्ग सुधङ्ग में रोम तरङ्ग, कदम्ब प्रसून कों नून बनावैं।
दोनों भुजान उठान सों प्रेम प्रिया-प्रिय रूप अनूप जतावैं॥
हे हरि माधव-कृष्ण पुकार, कहां हो हे नन्द कुमार सुनावैं।
'श्यामा'के भाव भरे नवनितंत,गौर-किशोरकों मोर प्रनामैं॥

(४७५)

चाहै लाख करो तदबीर कोई,पर फूँकसूं मेरु हिलायेहिले न।
दिन होयेन गिरिगणके दव लाये,रविके निकरेविनुकंज खिले न॥
बरु बालुकी भीत उठाये कोई पर,कैसेहूँ यह मत ठेले ठिले न।
श्यामा'श्याम' अनन्य कृपा विनु,श्री वृन्दावनवास मिले न॥

(४७६)

जो गिरि रुचै तो बसो श्री गोवर्धन,
गाम रुचै तो वसो नन्दगाम ।
नगर रुचै तो वसो श्री मधुपुरी,
शोभा सागर अति अभिराम ।।
सरिता रुचै तो वसो श्री यमुना तट,
सकल मनोरथ पूरण काम ।
"नन्ददास" कानन जो रुचै तो,
वसो व्रज भूमि वृन्दावन धाम ।।

(४७७)

मानुष हों तो वही "रसखानि",
बसौं व्रज गोकुल गांव के ग्वारन ।
जो पसु हों तौ कहा बसु मेरो,
चरौं नित नन्द की धेनु मंझारन ।।
पाहन हों तो वही गिरि कौ,
जो धरयौ कर छत्र पुरन्दर कारन ।
जो खग हौं तौ बसेरो करौं मिलि,
कालिन्दी कूल कदम्ब की डारन ।।

(४७८)

या लकुटी अरु कामरिया पर,राज तिहूँ पुरको तजि डारौं ।
आठहु सिद्धि नवो निधि कौ सुख,नन्दकी गाइ चराइ विसारौं।।

'रसखानि'कबौं इन आंखिनसों,ब्रजके वनबाग तड़ाग निहारौं।
कोटिक हौं कलधौत के धाम,करील की कुञ्जन उपर वारौं॥

(४७९)

गावैं गुनी गनिका गन्धर्व औ, सारद सेष सबै गुन गावैं।
नाम अनन्त गनन्त गनेस ज्यों, ब्रह्म त्रिलोचन पार न पावैं॥
जोगी जती तपसी अरु सिद्ध,निरन्तर जाहि समाधि लगावैं।
ताहि अहोर की छोहरियां,छछिया भर छाछ पै नाच नचावैं॥

(४८०)

शेष महेश गणेश दिनेश, सुरेशहु जाहि निरन्तर ध्यावैं।
जाहि अनादि अनन्त अखण्ड, अछेद अभेद सुवेद बतावैं॥
नारद से शुक व्यास रटैं, पचिहारे तऊ पुनि पार न पावैं।
ताहि अहीरकी छोहरियां,छछिया भर छाछपं नाच नचावैं॥

(४८१)

ब्रह्म मैं ढूढ्यो पुरानन गायन,वेद रिचा सुनि चौगुने चायन।
देख्यो सुनो कबहुन कितै,वह कैसे स्वरूप अरु कैसे सुभायन॥
टेरत हेरत हारि परचो,'रसखान' बतायो न लोग लुगायन।
देख्यो दुरचो वह कुञ्ज कटीरमें,बैठ्यो पलोटत राधिका पायन॥

(४८२)

सुनती हो कहा भजि जाहु घरै,
विध जाओगी नंन के बानन में।

यह बंशी 'निवाज' भरी विष सूं,
बगरावती है विष प्राणन में ॥
अब ही सुधि भूलि हौ भोरी भटू,
भँवरो जब मीठी सो तानन में।
कुल कानि जो आपनि राखि चहो,
दै रहो अंगुरी दोऊ कानन में ॥

(४८३)

खञ्जन नैन फँसे पिंजरा–छबि, नाहिं रहैं थिर कैसेहु माई।
छूटि गयी कुल कानि सखी,'रसखानि' लखी मुसकानि सुहाई॥
चित्र कढ़े से रहैं मेरे नैन, न बैन कढ़ैं मुख दीनी दुहाई।
कैसी करौं जित जाऊं अली,सब बोलि उठैं यह बावरी आई॥

(४८४)

कानन दै अंगुरी रहिबो जबहिं, मुरली धुनि मन्द बजै है।
मोहनी तानन सों'रसखानि', अटा चढ़ि गोधन गैहै तो गैहै॥
टेरि कहौं सिगरे ब्रजलोगनि,कालिह कोऊ कितनो समुझै है।
माई री,वा मुखको मुसकानि,संभारी न जैहै न जैहै न जैहै॥

(४८५)

आजु री, नन्दलला निकस्यो, तुलसी बनतें बनकै मुसकातो।
देखे बनैं न बनैं कहते अब,सो सुख जो मुख में न समातो॥
हौं'रसखानि'बिलोकिबेकों,कुलकानिको काज कियो हियहातो।
आय गई अलबेली अचानक,ऐ भटु लाज को काज कहा तो?॥

(४८६)

धूरि भरे अति शोभित स्यामजु,तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।
खेलत-खात फिरें अंगनां, पग पैजनी बाजतीं पीरी कछोटी ॥
वा छबि को'रसखानि'विलोकत,वारत काम कलानिधि कोटी।
काग के भाग कहा कहिए, हरि हाथ सों लै गयो माखन रोटी॥

(४८७)

शिर कनक मुकुट मनहर साजैं,
लाजैं उपमा शशि उडुगन की।
नव रत्न जड़ित बहु मणिन कलित,
छबि सुद्धि हरणी मनमथ मन की ॥
कुण्डल लोल कपोल लसैं,
अलकें करनी छलनी तन की।
कहौं कौन बखानै जु आज छबि,
नव दूलह जानकी जीवन की ॥

(४८८)

नव तरुण नील तन मनहर पै, पोशाक तिलाई छजे हुए।
बल सीम दीर्घ भुज दण्ड तरे,हैं धनुष बाण सुठि सजे हुए ॥
चलते हैं चतुर चारु चख सूं, चितवन के बानन तजे हुए।
अनुपम छबि रामकी देखिदृगन,दामिनि शशि रतिपति लजेहुए॥

(४८९)

गेंदा गुलाब चम्पक रबेल, मरुवा मन में इतराते हैं।
अवधेश राम के सेहरे में, हीरा सङ्ग जुड़े सुहाते हैं॥
गन चञ्चरीक गुञ्जार करैं, लहि रूप सुधा मदमाते हैं।
खञ्जन मृग--शावक नरगसगन, दृग देख पछारैं खाते हैं॥

(४९०)

बांकी छबि वर्णन करने में, है कौन जो हिम्मत रखता है।
इस रूप सिन्धु में गिरा हुआ,फिर कौन किनारे लगता है॥
चुप होकर चरण चूम लै झट,तू खड़ा-खड़ा क्या तकता है।
वेदोंकी कलमें बन्द हुईं जहां,'श्याम'तू क्या कह सकता है॥

(४९१)

रे दृग धिग् तुम्हें साखि बिगाड़िवे पै,
जो जग झूठें रूप में जागे।
कल्प–तरु सुर–धेनु चिन्तामणि,
त्याग अजा कच कील में रागे॥
त्रिभुवन सुन्दरता छबि की छबि,
रूप की राशि लखो रे अभागे।
श्यामा 'श्याम' रसीली जोड़ी,
बोलत रस बतियां अनुरागे॥

❀ गजल ❀

(४९२)

व्रजराज व्रज--विहारी गोपाल वंशी वाले।
इतनी विनय हमारी वृन्दाविपिन बसा ले॥
कितने दरौं पै भटके कितने ही घर बनाये।
अब तेरे दर पर आकर जायें न फिर निकाले॥
जोड़ी तेरी हमारी पहले रची विधाता।
हो तुम भी रंगके काले तो हमभी दिलके काले॥
बहुतों को अपना समझा बहुतों के हो लिए हम।
अब तेरे बन रहेंगे अपना हमें बना ले॥
राजी तेरी रजा में अपनी बनै या बिगड़े।
नाचेंगे हम तो नटवर जैसा हमें नचाले॥
दुनियां के यह इशारे कहते हैं 'श्याम' सब से।
दुनियां से दिल हटा ले मोहन में मन लगाले॥

(४९३)

हमारे व्रज के रखवारे कन्हैया राधिका रानी।
मेरे नैनों के हैं तारे कन्हैया राधिका रानी॥
कहो प्यारे कहां जायें भुलाकर अब शरण तेरी।
सहारे बे--सहारों के कन्हैया राधिका रानी॥
उबारे अनगिनत पापी उद्धारे कई अधम हम से।
बिसारे क्यों हो पन अपना कन्हैया राधिका रानी॥

न जब तक'श्याम'अपनायें किशोरी न करें करुणा।
पुकारे जायेंगे [हर पल कन्हैया राधिका रानी ।।

(४६४)

कन्हैया ! क्यों नहीं होती है पूरी आरजू दिल की।
तड़फता नीम बिस्मिल हूं जरा लो तो खबर दिल की ।।
मरीजे नात्वां को है तेरे दीदार की चाहत।
सुना कर नगमाए वंशी मिटा दो दर्द सब दिल की ।।
हुआ हूँ जब से मैं शैदा तेरी बांकी अदाओं पर।
तभी से ऐसी हालत है मेरे मोहन मेरे दिल की ।।
अरज करता हूँ—आजिज हों तेरे दरबार में शाहा।
तमन्ना तुझ से मिलने की मेरे भगवन् मेरे दिल की ।।
भला कब तक न तू आकर मुझे सूरत दिखायेगा।
फना के बाद तक भी न फना होगी लगन दिल की ।।
मेरा मकसद है मिलने से तुझे लाजिम है आ मिलना।
सदा बस आखिरी है 'श्याम' अरमानों भरे दिल की ।।

(४६५)

न जाने कौन सा टोना भरा है तेरी चितवन में।
नजर भर देखते बरवस बना लेती है घर मन में ।।
न सुध बुद्ध जग की रहती है न रहती है खबर तन में।
तसव्वुर में तुझे जब देखते हैं वन के कुञ्जन में ।।

लिए वंशी झुकन तिरछी दिये काजर सुनैनन में ।
अहै को वीर धारे धीर चुटीले भ्रकुटी सैनन में ।।
छुड़ायें दिल भला कैसे जुड़ा अलकन के हलकन में ।
बिके जाते हैं बिन दामों तेरी गरबीली मुस्कन में ।।
पिरो देते हैं मन मनका तेरे नूपुर के तागन में ।
मजे में तान लेता है तेरी पद पद्म पटकन में ।।
समाते श्याम हो जब 'श्याम'की इन श्याम पुतरिन में ।
सदा फिर श्याममय हो दीखता है जहर ओ बातन में ।।

(४६६)

न मुझ से यह पूछो मैं क्या देखता हूँ ।
कृपा की निगाहों की राह देखता हूँ ।।
जो पूछो झुका सिर तुम क्या देखते हो ।
किए तन में अपने गुनाह देखता हूँ ।।
मुझे शक गुजरता है तेरी निगाह पर ।
गुनाह जब मैं बे इन्तहा देखता हूँ ।।
वजन रोज करता हूँ पलड़े में दिल के ।
गुनाह देख कर के निगाह देखता हूँ ।।
अजब चैन पड़ती है दिल में मेरे—जब ।
गुनाहगारे कुल की पनाह देखता हूँ ।।
बखशिश में तेरी सलाह देख कर के ।
गुनाहों में अपनी मैं चाह देखता हूँ ।।

अम्बारे गुनाह रोज ही 'श्याम' लेकर ।
मैं बहरे करम दिल की थाह देखता हूँ ॥

(४६७)

बेदर्दी हा नन्द के ! तुम जानो प्रीति लगाना क्या ?
जिन प्रीति करी यह वह जानैं होता है प्रीति निभाना क्या॥
जो दुनिया दीवानी करदे नजरों में भला, वह क्या जाने ।
दीवानगी कैसी होती है अरु होता है दीवाना क्या ॥
दिल छीनके दिलबर चल तो दिये जा दूर बसे अब क्या जानो।
घायल पै गुजरती है क्या-क्या,है फुरकत का गम खाना क्या ॥
तेरी वंशीध्वनि ने लूट लिया कुलकानि जगतकी लाज तजी ।
सब छोड़के तुझको अपनाया,अब बाकी रहा अजमाना क्या॥
कभी चाहते थे,अब रूठते हो, हम आईं तो यह छुपना कैसा ।
बिनमोल बिकीं जब सूरत पै,यह नाजो-अदा दिखलाना क्या॥
इसप्रीतिकी नौकामें बिठला,और लाके दुसह विरहवारिधिमें।
मंझधार डुबोना चाहते हो, कहते हैं इसे याराना क्या ॥
दिल देके चलो अपना मोहन,जो छीनते हो दिल दीनों का ।
जीने के लिये तो दिल चाहिये हो अपना या बेगाना क्या ॥
दो आलम हुस्नपै शैदाहों फिर हाय वह क्यों इतना संगेदिल ।
चाहने वाले बीमार रहें, वह हुस्न की दौलत पाना क्या ॥
सुनती थीं दीन दयालु हो, गैरों को भी करते हो अपना ।
रौशन करदें निठुराई तेरी,तो कहेगा"श्याम"जमाना क्या ॥

(४९८)

घनश्याम की उलफत से जरा बच के निकलना ।
यह चश्मा है दुख दर्द का भूले न उछलना ॥
इस इश्क के कूचे में समझ सोच के चलना ।
जम-जमके कदम रखना सम्भलना न फिसलना ॥
तैराक हो, कूदे वही, आंसुओं का समुन्दर है ।
हुर्कत का हो आदी यहां फुर्कत में है जलना ॥
शिकवा न करे उफ न करे लाये न'क्यों'लब पर ।
है अपने ही हाथों से खुदी तन का कुचलना ॥
सुख चैन जरो माल का कुछ इसमें दखल क्या ।
सिर बेचके भी "श्याम" अभी शक में है मिलना ॥

(४९९)

तेरी प्रीति ने हमको क्या न दिखाया ।
हा, बदनाम करके जगत में नचाया ॥
खिची आईं बेखुद न सोचा न समझा ।
लबों से लगा बांसुरी जब बुलाया ॥
अदाओं भरी टेढ़ी चितवन जो देखी ।
दिलो जां लुटा जब जरा मुस्कराया ॥
सुना भोली भाली वह प्रीति की बातें ।
कहां चल दिये जाने क्या दिल में आया ॥

तेरी खोज में जिस्मो जां राह भूलीं ।
पत्ता पत्ता में ढूंढ़ा पता कुछ न पाया ।।
सब रिश्ते बिलो जां तेरे हाथ बेचे ।
बहुत कुछ गंवाया न कुछ हाथ आया ।।
मजा खूब यह 'श्याम' वाह तेरी उलफत ।
न घर का रखा अरु न अपना बनाया ।।

(५००)

अहो कौन से कुञ्जों में छिपे नन्द-दुलारे ।
हारे हैं प्रभु नैन यह रो रो के हमारे ।।
हर कुञ्ज के हर पात में हम ढूंढ़ चुकी हैं ।
कहुँ न मिले भटक चुकीं यमुन किनारे ।।
बिनु तेरे या बन कुञ्जों में हर तरफ अन्धेरा ।
कौन सी हो बदली में व्रजचन्द्र उजारे ।।
दिल छीन लिया वंसी में कुछ मन्त्र सुना के ।
दै के दगा छोड़ या बन कित हो पधारे ।।
विरहा के जलधि में है फँसी प्राणों की नैया ।
तेरे बिना व्रज के धनी कौन सँभारे ।।
तेरी मन्द हंसन प्रेम भरी मन में बसी है ।
आय मिलो प्राण जीवन आंखों के तारे ।
अहो ललितविहारिनिके ललित लाड़िले प्रीतम ।
दे हो दरस प्राण पिया कृष्ण मुरारे ।।

(५०१)

दिल में मेरे है आरजू आंखों में दिलरुबा हो तू ।
मन के मन्दिर में मेरे मोहन सदा बसा हो तू ॥
तेरी यह मोहनी छबि, हर दम तस्सुवर में रहे फबी ।
चितवन छबीली गुमांभरी, मुस्करा रहा हो तू ॥
आखें लजीली दया सनीं, अलकें नुकीली सी नागिनी ।
ललित त्रिभङ्ग अङ्ग हो, बंसी बजा रहा हो तू ॥
चूम लूं तेरे चरण, कञ्जों से कोमल सुख-भरन ।
बन के अली गूंजा करूं, फूलों से जब सजा हो तू ॥
गोकुल के गवालों में खेलता, व्रजकी गवारिन में नाचता ।
कुञ्ज गली में आ मिलूं, माखन चुरा रहा हो तू ॥
सांवरी सूरत तेरी, रहे 'श्याम' मन में हर घड़ी ।
तन के भी रोम रोम में, राधारमण रमा हो तू ॥

(५०२)

अजब है मुशकिल हैरान् हूँ दिल में,
कहे कोई मैं किन्हीं का होलूं ।
दिल एक रखता हूँ दो हैं दिलबर,
कहे कोई मैं किन्हीं का होलूं ॥
वह व्रज के राजा यदुकुल के भूषण,
वह शाह अवधके रघुकुलके जीवन ।

हैं दोनों गाहक मैं जान का सौदा,
किस हाथ बेचूं किन्हीं का होलूं ॥
इधर यह इनकी छबीली मुस्कन,
उधर वह उनकी लजीली चितवन ।
अदाएँ इनकी, निगाहें उनकी,
चुरा रहीं चित किन्हीं का होलूं ॥
यह कहैं अजामिल व गनिका तारी,
वह कहैं कि शबरी व ऋषिकी नारी ।
इशारे दोनों के अपनी खातिर,
चुनाव मेरा किन्हीं का होलूं ॥
ये दोनों दिलबर सुजान सुघर हैं,
दया के सागर कृपा के घर हैं ।
यकीन् तो कामिल है जैसा भी हूँ,
उबार लेंगे जिन्हीं का होलूं ॥
मगर यह अरमाने 'श्याम' सुनना,
ओ मुक्ति ! मुझसे तू दूर रहना ।
सौ जन्म पालूं मिटा लूं हसरत,
उन्हीं का होलूं इन्हीं का होलूं ॥

(५०३)

विषयों से अरे गाफिल ! इस मन को हटा ले तू ।
उजड़े हुए जीवन की बिगड़ी को बना ले तू ॥

सब झूँठी कहानी है, सुराब का पानी है।
यहां प्यास नहीं बुझती सो दौड़ लगाले तू॥
कुछ लुत्फ उठाना है, हकीकत को जो पाना है।
रसिकों की चरण धूली, मस्तक पै चढ़ाले तू॥
जिस नूर के जर्रा से आलम यह मुनव्वर है।
उस हुस्न की मूरत को आंखों में बिठा ले तू॥
जिस ओर निगाह जाए, व्रजचन्द्र नजर आए।
हस्ती को न रख अपनी वहदत का मजा ले तू॥
सब छोड़ उमीदों को ले 'श्याम' शरण उस की।
इस पाप की दुनियां से दामन को छुड़ा ले तू॥

(५०४)

जहां व्रजराज कल पाये, चलौ सखी आज वा वन में।
बिना वा रूप के देखे, विरह की दू ं लगी तन में॥
न कल पड़ती है बेकल को,न जी लगता है बिन जानी।
भई फिरती हूँ जोगिन सी, सरे बाजार गलियन में॥
करूँ कुरबान जो उस पर, जनम भर गुण न भूलूंगो।
मेरा महबूब जो लाके, बैठा दे मेरे आंगन में॥
नहीं कुछ गर्ज दुनिया से, न मतलब लाज सों मेरा।
जो चाहे सो कहो कोई, बसा अब तो वही मन में॥
तेरी यह बात सांची है, नहीं शक इसमें "नारायण"।
जो सूरत का हो मस्ताना, वह परचै कैसे बातन में॥

(५०५)

किया बिसमिल मुझे, उसकी अदा के हाथ क्या आया।
तड़फता छोड़कर, तेगे कजा के हाथ क्या आया॥
दिखाकर टुक जमाल अपना, मुझे तो कर दिया शैदा।
भला पूछे कोई उससे, महिल के हाथ क्या आया॥
मेरे इस गुञ्चा-ए-दिल को, कभी उसने न आ खोला।
गई बाला ही बाला उस सबा के हाथ क्या आया॥
लगाना खूने--दिल चाहा था मैंने उसके पाऊं से।
वले इस पेशकदमी से हिना के हाथ क्या आया॥
फिरा शहर--ओ-- बयाबां तालिबे दीदार "नारायण"।
बैठाया उसको परदे में, हया के हाथ क्या आया॥

(५०६)

जो मोहन में मन को लगाये हुए हैं।
वह फल मुक्ति जीवन का पाये हुए हैं॥
जो बन्दे हैं दुनिया के गन्दे सरासर।
वह फन्दे में खुद को फँसाये हुए हैं॥
जो सोते हैं गफलत में रोते हैं आखिर।
वह खोते रतन हाथ आए हुए हैं॥
खतर है न यम का न डर मौत गम का।
जो मोहन को दिल में बिठाये हुए हैं॥

पकड़ पाया सत्गुरु का दामन है जिसने ।
वही है मगन, सब सताये हुए हैं ॥

(५०७)

ऐ कृष्ण तुम्हारी उल्फतमें गुलजार भी है और खार भी है ।
क्या लुत्फ है प्रेम निरालेमें जहां प्यार भी है और मार भी है॥
इक हाथ में प्रेम भरी वंसी इक हाथ में चक्र सुदर्शन है ।
हम तो समुझें इन चालों से इकरार भी है इन्कार भी है ॥
हिरनाकुशने जब जुल्म किया प्रह्लादने नाम था तेरा लिया ।
जिस वक्त लगाया खम्बे से किया दार भी है दीदार भी है॥
ड्योढ़ी पर पहरेदारों ने रोका तो सुदामा यूं बोले ।
मैं तो उस कृष्ण का तालिब हूँ सरकारभी है मेरा यार भी है॥
वह चाहें मान बढ़ा देवें वह चाहें मान घटा देवें ।
इस सारे जग में खुद वह 'चमन' निराकार भी है साकार भी है॥

(५०८)

परम सुख, प्रीति पथ में लोग दुख पाने को कहते हैं ।
बहुत अच्छा हुआ, घर के उजड़ जाने को कहते हैं ॥
अगम वन बीच बस्ती और बस्ती को विपिन समझें ।
महल सुन्दर सुखद झाड़िन के सिमटाने को कहते हैं ॥
धनी को निर्धनी और निर्धनी को बहु धनी मानें ।
अमित मर्यादयुत इत उत के टकराने को कहते हैं ॥

गुनैं हंसने को रोना और रोने को हंसी जानैं।
अधिक बुध बोध वर विद्वान बौराने को कहते हैं ॥
अहै संसार से विपरीत सबरी रीत ऐ 'हरिजन'।
अमर पद प्राप्ति इस पथ में मर जाने को कहते हैं ॥

(५०६)

हम ऐसे निठुर चित्त के पाले पड़े हैं।
कि दर्शन के भी जिस के ठाले पड़े हैं ॥
नहीं वह कभी पूछते कैसे हो तुम।
विपिन में अकेले निराले पड़े हैं ॥
वह ऐसा विरह बाण तक तकके मारे।
हृदय में बहुत चिह्न काले पड़े हैं ॥
जो पूछै कोई यों पड़ा मैं रहूँगा ?
तो कहते हैं बहु आले आले पड़े हैं ॥
तो 'हरिजन' न क्योंमैं निठुर नाम सिमरौं।
दयालु बहुत कहने वाले पड़े हैं ॥

(५१०)

क्या कहूँ प्रीति के ऐ मीत कठिन रस्ते हैं।
जान कर जिसको भी सब लोग कम्मर कसते हैं ॥
देखिये कैसा है विपरीत यहां का वर्ताव।
रोईये जिनके लिए हाय ! वही हंसते हैं ॥

सर्प से कोर कुटिल केश जो प्रीतम के पले।
लहर भी देते नहीं जिसको तनक डसते हैं ।।
प्रेमरत ग्राहकों को सूझै नहीं हानि कछु।
प्राणहूँ देने से सौदा हो तऊ सस्ते हैं ।।
मन में वसते हैं तदपि मिलते नहीं ऐ 'हरिजन'।
ढूंढिये कौन जगह हाय ! कहां बसते हैं ।।

(५११)

गुजारी उम्र झगड़ों में बिगाड़ी अपनी हालत है।
हुआ खारिज अपील अपना अजायब यह वकालत है ।।
मुकदमे गैर लोगों के हजारों कर दिये फैसल।
न देखा मिस्ल अपनी को अजायब यह अदालत है ।।
दलीलें दे के गैरों पर किया साबत असूल अपना।
दिल अपने का न शक टूटा अजायब यह दलालत है ।।
बहुत पढ़ने पढ़ाने से हुए सब इल्म में कामिल।
न पाया भेद भगवत् का अजायब यह कमालत है ।।
बना हाफिज पढ़े मसले सुनाए दूसरों को भी।
वले टूटा न कुफ्र अपना अजायब यह मसालत है ।।
तू कर फसल हिसाब अपना तुझे औरों से क्या 'गोविन्द'।
न किस्सा तूल दे इतना फजूल हो यह तवालत है ।।

(५१२)

ये सांवले को मनाने की राह करते हैं ।
कि जान-बूझके कुछ-कुछ गुनाह करते हैं ।।
कभीतो यहथा कि उनकोही चाहते थे मगर—
अब उनके चाहने वालोंकी चाह करते हैं ।।
तमाशा ये है कि मुझ पर निगाह है लेकिन—
निगाह मेरी बचा कर निगाह करते हैं ।।
वो रञ्जो गम के बहाने जो छोड़े हैं हमें ।
तो गोया हमसे सुलह की सलाह करते हैं ।।
खफा हैं लाख मगर'बिन्दु'आंख को लेकर ।
सम्हल के देखते हैं वाह-वाह करते हैं ।।

(५१३)

जो लिखा रहे हैं मेरी खताएँ किताब में ।
इक दिन वही पड़ेंगे अजाबे हिसाब में ।।
मुठ्डीभर और मिल गया अम्बारमें तो क्या ?
लिख दो गुनाहे खल्क भी मेरे हिसाब मे ।।
रह जाएं हम और तुम मिले खल्कको निजात ।
दस बीस हश्र जाए हिसाबो किताब में ।।
हो तुरफा सैर जब कि बता दूँ मैं सौ पचास ।
लिखा तेरे फिरश्तों ने इक हो किताब में ।।

'शैदा' सजा मिले या जजा इस से बहस क्या ?
मतलब तो है रसाई का उनकी जनाब में ॥

(५१३)

कहा जो हमने, दर से क्यों उठाते हो।
कहा कि, इसलिए तुम यहां जो गुल मचाते हो ॥
कहा, लड़ाते हो क्यों हमसे गैर को हरदम।
कहा कि तुम भी तो हम से निगाह लड़ाते हो ॥
कहा जो हाले दिल अपना, तो उसने हँस हँस कर।
कहा, गलत हैं ये बातें जो तुम बनाते हो ॥
कहा, जताते हो क्यों हमको हर रोज़ नाज़ो अदा।
कहा कि, तुम भी तो चाहत हमें जताते हो ॥
कहा कि, अर्ज करें जो हम पै गुजरती है।
कहा, खबर है हमें क्यों जबां पै लाते हो ॥
कहा कि, रूठे हो आप हमसे क्या सबब इसका।
कहा, सबब है यही तुम जो दिल छुपाते हो ॥
कहा कि, हम नहीं आने के यहां, तो उसने 'नजीर'।
कहा कि, सोचो तो क्या आप से तुम आते हो ॥

(५१४)

कह दो उनसे कि कोई याद तुम्हें करता है।
तुव बिरह अग्नि में दिन रात पड़ा जरता है ॥

खान पानादि सुखो भोग से मन मोड़ लिया।
बस तुम्हारी ही सदा चाह में तन गरता है॥
होके उन्मत्त सा गलिन बीच फिरा करता है।
सिर को रो रो के धुना करता है दम भरता है॥
अपने रोगी से मिले आन के वह धन्वन्तर।
आज है अन्त दिवस देखले अब मरता है॥
प्राण जाते हैं मगर आए नहीं अब तक 'हरिजन'।
यह निठुर चित्त कहो किम दीनों का दुख हरता है॥

(५१५)

है आशिक और माशूक जहां वां शाह वजीरी है बाबा।
नै रोना है नै धोना है नै दर्द असीरी है बाबा॥
दिन रात बहारैं चोहलैं है औ ऐशो सफीरी है बाबा।
जो आशिक हुए सो जानै हैं यह भेद फकीरी है बाबा॥
हर आन हंसी हर आन खुशी हर वक्त अमीरी है बाबा।
जब आशिक मस्त फकीर हुए फिर क्या दिलगीरी है बाबा॥
कुछ जुल्म नहीं कुछ जोर नहीं कुछ दाद नहीं फरियाद नहीं।
कुछ कैद नहीं कुछ बन्द नहीं कुछ जब्र नहीं आजाद नहीं॥
शागिर्द नहीं उस्ताद नहीं बीरान नहीं आबाद नहीं।
हैं जितनी बातें दुनियां की सब भूल गये कुछ याद नहीं॥
हर आन हंसी हर आन खुशी हर वक्त अमीरी है बाबा।
जब आशिक मस्त फकीर हुये फिर क्या दिलगीरी है बाबा॥

जिस सिम्त नजर कर देखे हैं उस दिलवर की फुलवारी है।
कहीं सबजी की हरियाली है कहीं फूलों की गुल क्यारी है॥
दिन रात मगन खुश रहते हैं और आस उसी की भारी है।
बस आप ही वह दातारी हैं और आप ही वह भण्डारी है॥
हम चाकर जिसके हुश्न के हैं वह दिलवर सबसे आला है।
उसने ही हमको जी बखशा उसने ही हमको पाला है॥
दिल अपना भोला भाला है और इश्क़ बड़ा मतवाला है।
क्या कहिये ओर'नजीर'आगे अब और कौन समझने वाला है॥
हर आन हंसी हर आन खुशी हर वक्त अमीरी है बाबा।
जब आशिक मस्त फकीर हुए फिर क्या दिलगीरी है बाबा॥

(५१६)

गर यार की मर्जी हुई सर जोड़ के बैठे।
घर बार छुड़ाया तो वही छोड़ के बैठे॥
मोड़ा उन्हें जिधर वहीं मुंह मोड़ के बैठे।
गुदड़ी जो सिलाई तो वही ओढ़ के बैठे॥
और शाल ओढ़ाई तो उसी शाल में खुश हैं।
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं॥
गर खाट बिछाने को मिली खाट में सोए।
दूकां में सुलाया तो वह जा हाट में सोए॥

रस्ते में कहा सो, तो वह जा बाट में सोये ।
गर टाट बिछाने को दिया टाट में सोये ॥
और खाल बिछा दी तो उसी खाल में खुश हैं ।
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं ॥
उनके तो जहां में अजब आलम हैं 'नजीर' आह।
अब ऐसे तो दुनियांमें बली कम हैं नजीर आह ॥
क्या जाने फरिस्ते हैं कि आदम हैं नजीर आह ।
हर वक्त में हर आन में खुर्रम हैं नजीर आह ॥
जिस ढाल में रखा वह उसी ढाल में खुश हैं ।
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं ॥

(५१७)

हैं बहारे बाग दुनियां चन्द रोज ।
देख लो इसका तमाशा चन्द रोज ॥
ऐ मुसाफिर ! कूच का सामान कर ।
इस जहां में है बसेरा चन्द रोज ॥
पूछा लुकमा से जिया तू कितने रोज ।
दस्ते हसरत मल के बोला चन्द रोज ॥
वादे मदफन कब्र में बोली कजा ।
अब यहां पै सोते रहना चन्द रोज ॥
फिर तुम कहां और मैं कहां ऐ दोस्तो !
साथ है मेरा तुम्हारा चन्द रोज ।

क्या सताते हो दिले बेजुर्म को।
जालिमो है यह जमाना चन्द रोज ॥
याद कर तू ऐ 'नजीर' कब्रों के रोज।
जिन्दगी का है भरोसा चन्द रोज ॥

(५१८)

अजब हस्ती पै नाजां हो, यह हस्ती महज मस्ती है।
नहीं वाकिफ कि हस्ती खुद, तेरी हस्ती पै हस्ती है ॥
जिन्हीं को ताज जर्री तख्ते ताऊसी मुयस्सर थे।
उन्हीं की कब्र पै रौनक तो क्या वहशत बरसती है ॥
दिलो जां बेच कर कुछ आखरत का जल्द सौदा कर।
यह चीज है बेश बहा गर यूं भी हाथ आवे तो सस्ती है ॥
मुसाफिर खानाए दुनियां में है सबको सफर आखिर।
कयाम ईंजा नहीं बस्ती यह महमानों की बस्ती है ॥

(५१६)

कन्हैया की आँखें हिरन सी नशीली।
कन्हैया की शोखी कली सी रसीली ॥
कन्हैया की छबि दिल उड़ा लेने वाली।
कन्हैया की सूरत लुभा लेने वाली ॥
कन्हैया की हर बात में एक रस है।
कन्हैया की दीदार सीमीं कफस है ॥

कभी गोपियों में जो पनघट पै आये।
वह नखरे में आईं तो यह हठ पै आये॥
किसी का सलामत दुपट्टा न छोड़ा।
जो भागी तो कंकड़ से मटकों को फोड़ा॥
जो हाथ आई उसकी मरोड़ी कलाई।
बहुत कसम खाई न छोड़ी कलाई॥
बिठाया जमी पर पकड़ कर किसी को।
रखा बाँसुरी से जकड़ कर किसी को॥
वे कहती हैं अब शाम होती है प्यारे।
यह कहते हैं क्यों आईं यमुना किनारे॥
ग्वालिन का मक्खन चुराकर जो भागे।
वह लाईं शिकायत यशोदा के आगे॥
कहा तेरा मोहन सताता बहुत है।
चुराता तो है पर गिराता बहुत है॥
कई एक पहले से घर में खड़ी हैं।
यशोदा से सब बारी बारी लड़ी हैं॥
वहीं नागहां नन्द का लाल आया।
कयामत की चलता हुआ चाल आया॥
कहा दूर से—झूंठ कहती हैं माता।
इसी ताक में यह तो रहती हैं माता॥

शिकायते अरजां मजाक इन के सस्ते ।
कहीं जाऊं तो रोक देती हैं रस्ते ।।
वह छेड़ें मुझे और दुहाई न दूं मैं ।
जो ठोकर झटक कर कलाई न दूं मैं ।।
जो पनघट पे इन को दिखाई न दूं मैं ।।
जो मुरली बजाता सुनाई न दूं मैं ।।
तड़फती हैं बेचैन होती हैं क्या क्या ।
मेरे गम में आंसू पिरोती हैं क्या क्या ।।
न शब को मिला हूँ न दिन को मिला हूँ ।
महीनों के बाद आज इन को मिला हूँ ।।
ये झूंठी हैं गर शिकवा बर लब हैं आईं ।
मुझे देखने के लिये सब हैं आईं ।।

❀ दोहावली ❀

(विनय)

जय जय श्री राधारमण जय जय नवल किशोर ।
जय गोपी चित्त चोर प्रभु, जय जय माखन चोर ।।१।।

जय जय जय वृषभानुजा, जय श्री नन्द किशोर ।
युगल लाल पद सहज रति, यह मांगौं कर जोड़ ।।२।।

दोउवन श्री मुखचन्द्र पै सरवस दीजिए वारि ।
रूपामृत भरि पीजिए पलकन की चिक डारि ॥३॥
दोउवन श्री सुखचन्द्र छबि कोटिक चन्द्र प्रकाश ।
मो मन नित्य झलकत रहै निशि वासर यही आस ॥४॥
दोउवन पद पंकज मृदुल मधुप रहै मन मोर ।
ऐसी कब करि हौं कृपा लाड़िली नन्द किशोर ॥५॥
दोउवन पद नख चन्द्र हित मेरे नैन चकोर ।
ऐसी कब करि हौ कृपा प्रिया प्रीतम चित्त चोर ॥६॥
श्री राधा मेरी स्वामिनी, मैं राधा की दासि ।
जनम जनम मोहिं कीजिये, श्री वृन्दावन बासि ॥७॥

श्री राधे मेरी स्वामिनी, मेरी ओर तू देख ।
तो कूं राखहुँ नैन में, ज्यों काजर की रेख ॥८॥
सब द्वारन को छांड़ि के गह्यो तुम्हारे द्वार ।
अहो भानु की लाडिली, मेरो ओर निहार ॥९॥
बंशी वाले सांवरे, पलक झांपि तोहि लेऊँ ।
न मैं देखों और कूं, न तोहि देखन देऊं ॥१०॥
वंशी बाले सांवरे, तुम लगि मेरी दौड़ ।
जैसे काग जहाज को, और न पावत ठौर ॥११॥
श्री कृष्ण बल्लभ लाड़िली, राधा बल्लभ लाल ।
बसहु निरन्तर हिये में, आनन्द रूप रसाल ॥१२॥

काहू के बल भजन को, काहू के आचार।
'व्यास' भरोसे कुँवरि के, सोवत पांव पसार ॥१३॥
मोर मुकुट कटि काछनी, पीताम्बर बन माल।
यह बानक मो मन बसौ, सदा बिहारी लाल ॥१४॥
मोहन जिनके मन हरे, कैसे धरि हैं धीर।
समझहिं मर्म तो रसिक जन,प्रीति रीत गम्भीर ॥१५॥
मेरे मन मन्दिर बसहु, करहु ताहि उजियार।
प्रेम भक्ति प्रभु दीजिए, विनवौं बारम्बार ॥१६॥
मो समान पापी नहीं, पावन तो सम नाहिं।
कृपा करहु हे लाड़िले, राखहु चरणन माहिं ॥१७॥
रवि को कमल अनेक हैं, कमलन को रवि एक।
हम से तुम को बहुत हैं, तुम सा हम को एक ॥१८॥

(रूप)

भव मोचन लोचन युगल, जोड़ी नैन विशाल।
सहज गये जिनकी तरफ,सक्यो न सुरति सम्भार।।१९॥
काजर तेरे दृगन को, जिन देख्यो छबि धाम।
तिन के दृग ऐसे भये, जित देखें तित श्याम ॥२०॥
कारे सुर्ख सुफेद दृग, तिरछे भरे गुमान।
बरबश चित्त चुरात हैं, बावरो करत सुजान ॥२१॥

भ्रकुटी तनी कमान ज्यों, बंक नजरिया तीर।
ऐरी सखि ! जाके हिय लगत जो जाने पीर ।।२२।।
खंजन मद गंजन अली कंजन गंजन मान।
नैन निरंजन लाल के, अञ्जन कौन बखान ।।२३।।
बंक विलोकन श्याम की, रंकहि करत भुवाल।
विधिना के अङ्कहि दरत, हरत जगत जंजाल ।।२४।।
लाल रसिक वर लाड़िलो, प्रेम रूप रस ऐन।
विहरत नित नव भांति सूं, भक्त जनन सुख देन ।।२५।।
प्रेम गगन घनश्याम मिल, दामिनि भामिनी प्यारी।
विहरत नित्य हुलास युत, झरत प्रेम रस वारि ।।२६।।
धार प्रेमरस-वारि के, चातक रसिक अपार।
अचवत नित नव भांति सूं, हिये की चोंच पसार ।।२७।।
मोर मुकुट की लटक पै, अटक रहे दृग मोर।
कुञ्ज भवन श्री राधिका, जय जय नन्द किशोर ।।२८।।
कृष्ण रूप श्री राधिका, राधा रूप श्री श्याम।
दर्शन को ये दोय हैं, हैं एकहि सुख धाम ।।२९।।
ककना सब दुख चूरना, मम शरना सुकुमारि।
श्री राधे प्राणाधिके, जयति कृष्ण सुखकारी ।।३०।।
मन मोहन मन मोहना, मन मोहन मन मांहि।
या मोहन से सोहना, तीन लोक में नांहि ।।३१।।

गोरे मुख पर तिल बन्यो, ताहिं करूं प्रणाम।
मानो चन्द्र बिछाय के, पौढ़े सालिग्राम ॥३२॥

❀ प्रेम-विरह ❀

एक नेम यह प्रेम को, नेम सबै छुटि जाहिं।
पै जो छाड़ें जान के, तहां प्रेम कछु नाहिं ॥३३॥
चौसर बिछी स्नेह की, लगे सीस के दाव।
नारायण आशक बिना, को खेले चित्त चाव ॥३४॥
नारायण प्रीतम निकट, सोई पहुँचन हार।
गेंद बनावै शीश को, खेले बीच बाजार ॥३५॥
नारायण या डगर में कोई चलत है बीर।
पग पग पर बरछी लगे, श्वास श्वास पर तीर ॥३६॥
चाखा चाहे प्रेम रस, राखा चाहे मान।
द्वै तरवारि इक म्यान में, देखी सुनी न कान ॥३७॥
कहा कहूँ गति प्रेम की, बड़ी मिलन की पीर।
लोचन भूखे दर्श के, भरि भरि डारत नीर ॥३८॥
निरमोही नन्दलाल हैं, मोही दशरथ लाल।
वह तो वन वन में फिरै, इन त्यागी ब्रजबाल ॥३९॥
आँखरियां झीनी भईं, पंथ निहारि निहारि।
जीहरियां छाले भये, कृष्णहि कृष्ण पुकार ॥४०॥

दर दीवार दर्पण भये, जित देखूं तित तोंहि ।
कांकर पाथर ठीकरी, भये आरसी मोंहि ॥४१॥

इन अँखियान दुखियान कूं, सुख सिरज्यो कहुं नाहिं।
देखे बने न देखिबो, बिन देखे अकुलाहिं ।४२॥
नैननि दुख नैनन लग्यो, तन मन दुख दुख गेह ।
हा दैया कौनें धर्‌यो, या दुख को नाम स्नेह ॥४३॥
भूत छिये मदिरा पिये, सहजहि सब सुधि होय ।
प्रेम प्याला जो पिये, तन मन बुद्धि सुधि खोय ।४४॥

प्रेमिन के घर दूर हैं, जैसे पेड़ खजूर ।
चढ़े तो चाखै प्रेम फल, गिरे तो चकनाचूर ॥४५॥
चढ़ के मोम तुरंग पै, चलिबो पावक मांहि ।
प्रेम पंथ अति कठिन है, सब पै निबहत नांहि ।४६॥

मोहनी सूरत श्याम की, मो मन रही समाय ।
ज्यों मेंहदी के पात में, लाली लखी न जाय ।४७॥
लाली मेरे लाल की, जित देखूं तित लाल ।
लाली देखन मैं चली, मैं भी हो गयी लाल ॥४८॥
कारो सुत नन्दराय को, जाकी लीला नित्त ।
हरि उनके हिये बसत हैं, जिनके उज्ज्वल चित्त॥४९॥
प्रेम की फांसि जो फसि मरै सो जीवन जग मांहि ।
प्रेम बिना मारा कोई, या जग जीवत नांहि ।५०॥

उतर्‌यो प्रेम आकाश ते, भौन भौन कियो गौन ।
सरवारिन पूँछत फिरे, वो सिर को घर कौन ।।५१।।
प्रेम फाँसि जो फँसि मरे, सोई जीये सदाहिं ।
प्रेम मर्म जाने बिना, मर कोऊ जीवत नाहिं ।।५२।।
प्रेम प्रेम सब कोई कहै, कठिन प्रेम की धाँस ।
प्राण उछल निकसत नहीं, केवल चलत उसास ।।५३।।
जर बर उठत शरीर सब, चोआ चन्दन लागि ।
विधि गति सब विपरत है, पानी हूँ में आग ।।५४।।
ए रे कठिन अहीर के, नैक पीड़ पहिचान ।
तुव मुख दर्शन कारणे, छाड़ि दई कुलकान ।।५५।।

卐

❀ गोपी प्रेम ❀

जय जय जय ब्रज गोपी जन, प्रेम ध्वजा जग माहिं ।
चरण-शरण देहि दान मोंहि, उज्ज्वल प्रेम सदाहिं ।।५६।।
गोपी प्रेम वैचित्रता, समझत सो महा भाग ।
है 'श्रृङ्गार' पर 'राग' नहिं, नित नूतन अनुराग ।।५७।।
'भोग' है नहिं 'संयोग-अंग', तत् सुख सुखी महान ।
'आसक्ति' दिन रैन है, कहियत नहीं 'अज्ञान' ।।५८।।
है 'वियोग' 'विछोह' बिनु 'क्रन्दन' है 'दुख' नांहि ।
बारिध 'विरह' अथाह में, अन्त 'वेदना' कांहि ।।५९।।

'सेवा' है 'अभिमान' नहीं, 'धैर्य' नहीं है 'मान' ।
'त्याग' है पर 'सन्यास' नहीं, जानत रसिक सुजान ॥६०॥
निशिदिन करत 'प्रलाप' पर, 'बेहोशी' कछु नांहि ।
'ममता' है पर 'मोह' नहीं, अद्भुत लक्ष लखांहि ॥६१॥
नहिं 'कामना' नेक जिय, ऐसो है 'अनुराग' ।
सदा 'तृप्ति' दीखत तदपि, नहीं 'इच्छा का त्याग' ॥६२॥
'सुख' है पर 'स्पृहा' नहीं, 'मैं' बिनु राखत 'देह' ।
मानत जग 'माया' नहीं, सीमा रहित स्नेह ॥६३॥
'ज्ञान' सहित 'ज्ञानी' नहीं, 'ब्रह्म' हैं 'निर्गुण' नाही ।
'मुक्ति' है पर 'लय' नहीं, गोपी सिद्धान्त सदांहि ॥६४॥

❀ श्री वृन्दावन ❀

धनि वृन्दावन धाम है, धनि वृन्दाबन नाम ।
धनि वृन्दावन रसिक जन, सुमिरैं राधेश्याम ॥६५॥
वृन्दावन जे वास कर, शाक पात नित खांय ।
तिनके भागन को निरख, ब्रह्मादिक ललचाँय ॥६६॥
हम न भये ब्रज में प्रकट, यही रही मन आस ।
नित प्रति निरखत युगल-छबि, कर वृन्दावन वास॥६७॥
वृन्दावन के वृक्ष को, मर्म न जाने कोय ।
डार-पात फल फूल में, राधे राधे होय ॥६८॥

ब्रज समुद्र मथुरा कमल, वृन्दावन मकरन्द।
ब्रज वनिता सब पुष्प हैं, मधुकर श्री व्रजचन्द ॥६९॥
धनि धनि धनि वृन्दाविपिन, सब सुषमा की खान।
गौर श्याम विहरत जहां, रसिकन जीवन प्रान ॥७०॥
बस वृन्दावन धाम में, जो चाहत विश्राम।
कालिन्दी जल पान कर, रट मुख राधे श्याम ॥७१॥
वृन्दावन के वास की, सदा रही मन आस।
निरखत दम्पति छबि दृगन, कुंजन रास विलास ॥७२॥
वृन्दावन सुख अनत नहीं, सुस्थल युगल निवास।
कमला पुरहु के सदा, कर आस व्रजवास ॥७३॥
बांह बिहारी की गहूँ, बसौं बिहारी धाम।
दरस बिहारी के करूं, रटौं बिहारी नाम ॥७४॥
वृन्दाबन के राजा दोऊ, श्याम—राधिका रानी।
कर्म ज्ञान जहां बटत जेवरी, मुक्ति भरे जहां पानी ॥७५॥
वृन्दावन को वास कर, कृष्ण नाम गुण गाहिं।
तिनके भागन कूं निरखि, ब्रह्मादिक ललचाहिं ॥७६॥
राधे राधे रटत हैं, आक ढाक और कैर।
तुलसी या ब्रजधाम में, कहा राम सूं बैर ॥७७॥
मुक्ति कहे गोपाल सूं, मेरी मुक्ति बताय।
ब्रज रज उड़ मस्तक लगे, मुक्ति मुक्ति ह्वै जाय ॥७८॥

❀ चेतावनी ❀

बहुत गई थोड़ी रही, 'नारायण' अब चेत ।
काल चिड़ैया चुग रही, निशि दिन आयु खेत ।।७९।।
धन यौवन यों जाएंगे, जा विधि उड़त कपूर ।
'नारायण' गोपाल भज, क्यों चाटे जग धूर ।।८०।।
'नारायण' दो बात को, दीजै सदा बिसार ।
करी बुराई और ने, आप कीयो उपकार ।।८१।।
दो बातन को भूल मत, जो चाहत कल्याण ।
'नारायण' इक मौत कूं दूजे श्री भगवान् ।।८२।।
'नारायण' हरि लगन में, ये पांचों न सुहात ।
विषय-भोग निद्रा हँसी जगत प्रीति बहु बात ।।८३।।
कि तोहिं लागहिं राम प्रिय, कि तू राम प्रिय होय ।
दुई में रुचै जो सुगम सोई, कीवै 'तुलसी' तोहि ।।८४।।
'तुलसी' निशिदन चलत हैं, अक्षर की तलवार ।
नकटै नकटै ना कटैं, कटै सकल रिझवार ।।८५।।
खीजै ते सुरपुर दियौ, रीझै दियो प्रभु लंक ।
अन्धाधुन्ध सरकार हैं, 'तुलसी' भजहु निसंक ।।८६।।
सबको साहब एक है, साहिब को कोई एक ।
लाखन में सम्भव नहीं, कोटिन में कोई एक ।।८७।।

⁂

❀ श्री हरिनाम ❀

श्री राधा कृष्ण कृपाल के नाम सुमर दिन रैन ।
कलियुग की सब आपदा मिटैं मिलै सुख चैन ।।८८।।

कलियुग सम युग आन नहीं जो नर कर विश्वास ।
गाय राम गुण गण विमल भव तर बिनहि प्रयास।।८९।।
राम नाम मणि दीप धरु जीह देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर बाहरेहु जो चाहत उजिआर ।।९०।।
ब्रह्म राम ते नाम बड़ बरदायक वरदान ।
रामचरित सत कोटि मँह लिए महेश जिय जानि।।९१।।

एक बार मुख कृष्ण कहि जितिक पाप झरि जाहिं ।
तितिक पाप कोऊ पातकी कबहुंकि कर सकि नाहिं।।९२।।
कृष्ण नाम रसना परसि हरत पाप की भीर ।
जानत अनजानत अनल छुअत ज्यों जरत शरीर ।।९३।।
कृष्ण नाम सो तप नहीं कृष्ण नाम सो दान ।
कृष्ण नाम सो यज्ञ नहीं कृष्ण नाम सो ध्यान ।।९४।।

कृष्ण नाम पद कंज की करत आरती वेद ।
सुर नर मुनि अरु मुक्तजन भजहिं सदा गत खेद ।।९५।।

कृष्ण नाम श्रीकृष्ण सम पूरण शुद्ध स्वरूप ।
चिन्तामणि नित भक्ति प्रद चिदानन्द रस कूप ।।९६।।

हरिनाम हरिनाम गति हरिनाम गति एक ।
कलि में सब फोकस निरस यज्ञ अरु योग विवेक ॥९७॥
सर्व शक्ति सम्पन्न अरु विधि निषेध के पार ।
ऐसे श्री हरिनाम में बिना प्रीति धिक्कार ॥९८॥
गद्गद स्वर पुलकित न तन चलत न नयनन नीर ।
हरिनाम मँह प्रीति बिनु धिक् धिक् सुभग शरीर ॥९९॥
हरे कृष्ण हरे कृष्ण रट जो चाहत विश्राम ।
'श्याम' कृपा की बाट तकि बस वृन्दावन धाम ॥१००॥

॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

